

वरेश छल काण आखी मतमेद शक  
 नैशाय उन्मुक्त क सकै छै । धर्म  
 बतमारी काल धरि एहन तब मानल  
 काइए जतना नाम पर जाति-दका श्री  
 संगान सकत होइत छै या बाहरी  
 आत्ममन सं देश के एका छैहै संतन  
 भावसक छैहै—त एहेन दुख मानि  
 रख गीत छिलख सकथनि ।

कविगीत विद्यापति महान सम्राज्यपति, ओ दारोनि क छत्रहू, महान राजनीतिर सारि बिग्रहि युगप्रथा आ रुचा आ ते महान कवि छलाह । ओना मेर पदते ओ तबखानि पकड़ते छथि सन्धि वातावरण—परब कोदीक दयार तक पहुँछल छथि—परब सम हरिपद ओ मूलतः कवि छलाह आ लेखनीय हुनक बिधायर छल । इकर बाद ठाम जेल प्रयोग अयेछल हुमेलनि— तहिना प्रयोग केलनि । मौखिक नहि समस्त आधुनिक भारतीय भाषाक पहिल कवि छलाह । हुनक पश्चात् ओ हुनके सं प्रभावित मय विभिन्न भाषाक कवि लोकनि अनन-अनन भाषा से काब्य रत्ना आराम कएछनि । ब्रजभाषा से सूर, अवधी से कुव्वीदास आ राजशन्नी मे मीराबन प्रतिभाक पथ निर्देशक सरपदु बिद्यापतिद प्रेताह ।

कविपरिचित विद्यापरिचित कं गीर कवि, भगवा  
कवि, शृंगारिक कवि आदि आख्या देश  
बाइल आ सारिहुं अमन रचनाक आधार  
पर से ओ छलहो किहु ओ माण गीरकवि  
वा भक्तकवि वा शृंगारिक कवि नहि अपितु  
एके संग सय छलह। परइयमन रहितहुं  
प्रतिभा से सय छलह। परइय कवि छलह  
मूलतः ओ महान प्रगतिशील कवि छलह  
होकर कवि छलह ओ माण होकरभाषा मे  
रचनाएटा नहि बैलनि अपितु लोकक आत  
खिललनि। सर्वसाधारणक व्यापक—कथा  
ओकर इच्छा—आकांक्षा कं ओ अमन रचनाक  
आधार बनयबलनि। एकदिल सामाजिक  
दुखदैन्यक तबीय विवेका कर ज लोक  
व्याप्त एहि दिस आकृष्ट कइलनि त संगहि  
दोख दिख परिस सं मुक्तिक निमित्त दिशा  
संकेत सेहो कइलनि। 'बैदन् केहुं' ओना  
शरिबक दिन, एकटा जे लोटा छलनि वेटा  
छलनि तीन' एवं 'नित गौरा शिव सं  
मनबाचि, कन ते कडा दस खेत' मे जे  
पहिल गरीबीक निशान आइ त दोसर भयक.

महत्साकं परिचालक। घडिगा 'पिया मोरो वात्सक इम तरणी' से सामाजिक कुरीति अमन मेछ पिवाइ प. तिलहर व्यांग करछ गेछथ। अमन घडीसम विरोधताक कारणे कविपति गीत सम ओतेक लोकपिय मेछ जे पतेक दिन बीतलाक पचसहो छान लोक-प्रियता केँ मात्र अधुन नहि रहने अइ, अबिछ तार मे पूणें छुटि करवा मे पूर्ण-रूपेण सफल रहथ। सात-सात सष्ट वर्ष धरि लोककंट मे अपिबल प्रवाहित होइला फल्य विक्सार्थिय मे अस्तिक एकर अति-कम अल नहि भेटि सकछ। ओतने नहि अमन लख संहि मे मिथिलक सीमा अति-क्रमण करैत बंगाल, अरम, उड़ीसा, नेपाल धरि एकर पूर्ण प्रचार-प्रसार भेलैक आ राम ठामक लोक एकरा अमन मानलनि। ई कविपतिन लेखनीक जाइ छल जे पदालीक

परम्परा सर्वगर्भ पूर्वी उत्तरी भारत से चले पड़े। कब अन्तहीन क्षत्रीय रूप से तबीयत नाब ठकने बिचिंत भागुनिहरे परदेसी दिक । ई हिन् के मधुर गीतक प्रभाव छल अछि । ई मैथिली सं अलिमिथि होइतहुँ परवत नकि कोकिल मैथिली मे खुद रम्याक प्रयास से टोनि म मरुप स निज रसनाक कारण से ब्रह्मजीक नोनि परदेसी साहित्यक विरोध भागक रूप से परिचित परदेस ।

कल्पित विधानात्मक नीतिक नालस्य  
हृण्य आ उतना अडोडिक नहि लौकिक  
छथि—लौक्यतिनिधि छथि । राषट्टकणक  
प्रेमलौलिक आधार माननीय भिक आर मे  
सय शिव आ सुन्दरक सविवेदा अर ।  
विधानात्मि निर्निषय सौन्दर्यपराशक छलाह  
कारण सुन्दरताए सय भिक आ लये शिव  
भिक । तहिना विधानात्मक उता आ लये  
चाकर भिक, सेवक भिक आ सेना पाम  
मानवक सवत पैच धर्म भिक—इस्वीय  
भिक—तु उता के विधानात्मि महादेव बना  
देत छथि । एकरा उग्रतावादी वा  
वास्तवतावादी भनहि के कुनू दृष्टिकणक  
नोमे अविहित करल आय पज्ज ई भिक  
कविपतिक दृष्टि हुनक अलग नीतिक बनि ।  
ओना धार्मिक-दृष्टिकोण रखनिहार सभा-  
लोचककय उता के देवाभित प्रभादेय  
मण्डल के विधानात्मिक भविकवच संभावित  
मय हुनक साक्ष्य लेल चाकर बनि आयल  
छल । जं धरू दृष्टिय देखल जाए त भारतीय  
तावक ओणी मे विधानात्मिक स्थान सवत  
उपर अर । रामकृष्ण परमांस के कालीक  
दर्शन पात्र मेरु छनति त ओ अवतारी  
मानल जाइत छथि, तथराम महादेव  
जनिक चाकर होथि तनिक करे की ? ओ  
सरिगुठू अष्टलीन्य छथि । किंवन्ती अर  
अधुना के अमन प्रिय सग्यो के कोरा मे  
उता लेलनि । किंवसाहस मे विद्यापतिक  
आरी—से जे कुनू क्षेत्र मे भरिलके प्राप्त  
होएत ।

कविकवित्तिक रचना थीकदिस सं हुनका  
सर्वशोधन सं रानदरबारधरि आदर समान  
देवकनित त दोख दिख पन्ति कां द्वारा  
उल्लाप - उवहास सेहो । नव कविसेवर  
अभिनव अयदेव, कविकवित्तिक कविपति  
आदि उपधि सं जे हिनका विभीषित कएल  
अछ जे हिनक प्रतिभाक लही मूल्यांकनक  
आधार पर देले गेल अछि हिनक पराती  
कनि गोपीन दास द्वारा । कविकवित्तिक त  
हिनक अइस माग छेल तत्कालीन पंडित  
द्वारा कएल जाअन आ तनि अभिनव ख्य-  
ति देव हिनक प्रतिभो केँ छोट क अंकनक  
सकयथ थिक । ई निरुपिाद जे गीत गोवि-  
न्दक रचनाकार अपदेवक परम्परा केँ आरू  
गढ़ावत एवं सी आ सधन सरावत देव ई  
आकाङ्क्षाक गीत लिखकनि परबन ई ओदे  
लीन छीत नहि रहलह । पहिनि कहि  
सुनल छी जे हिनक प्रतिभा बहुमो छल  
मा मा मा ई नन्ददेव कन्देव सं बहुत आरू वदि  
सुनल छथि । राजशेखर नै रोखत ई  
राजशेखरी नहि बनि पल्लवह सदा लोचन कवि  
रहलह । ई दरबार सं प्रभावित नहि भेलह  
पितु दरबार हिनका सं प्रभावित नहि भेल ।

चिह्नितपूर्व मैथिली साहित्य में पदन  
 वर्ण उठल छल जे साहित्य महिषक गीठ पर  
 गरिब सा सकेछ । परब सिद्धार्थक साहित्य  
 महिषक गीठ पर जेब-वहान में, गोवा-  
 मंडिक सीप कवा, कर कवचन में सर्वना-  
 मयान हूँ ज्यार देखल जा सकैछ । जव-  
 भाषा में कर्मरक कल तिलकक काले  
 पंखिल काँचें उड़लक उल्ल सफल सकि-  
 नति बल्ले छलार—

बात बंद बिबावर भाषा  
 दुहु नहि कगार दुग्गन हाता  
 ओ पसेव हर लि सोरह  
 ई पिबव नाभर मन मोहक  
 देखि सयना सब जन मिहा  
 ते तइसन बापओ अमरदा

मैथिली विश्वविद्यापीठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय

[illegible]

डा० दिनराज शाण्डिल्य

कुलपति

श्री० हरिनारायण दा

कल धनि

सम्बन्धन तथा परीक्षा केन्द्र स्थापना

मैगिली, विन्डविच्चीप्रीठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय संकटमोचनधाम दरभंगा तं  
शैक्षणिक संस्था सम्बन्धन परीक्षा केन्द्र स्थापना अधिका मायता वारैठ लोपि ओ कृप  
वारि सौ टाका नरीक्षण शुल्क हंग अपन विक्कणी अविलम्ब प्रस्तुत करि ।

डा० आभयकाश शाण्डिल्य, कलमिन

नेशनल मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड

नैसर्ग मेडिकल रजिस्ट्रेशन बोर्ड, सफ्टमेडिकल; दमंग्रा द्वारा आर० एम० पी  
ए० पी०, आर० एम० एम० तथा आर० एम० ए० के सम्पूर्ण पत्र अनुमति एवं प्रशिक्षण  
परिभाषिका अपाङ्ग पर प्राप्ति करवाक लेख ३५-टाका से नियमितकी एवं प्रत्यक्ष  
कलेज का संकेत ।

डा० जयनारायण शाल्मी, सचिव

(विज्ञापन)



## दू गोठ कविता

( गत अक्टूबर में कलकत्ता में मैथिली के एक पत्रिका दृष्टि रख कर का दोसर पत्रिका के नाम 'बेबाक' नेआर का ओरिआकोन भऽ रहल छल । अक्टूबर के पारिस सभाइ में एही मतःस्थिति में लिखल दू गोठ कविता )

( १ )

हमरा लोकनि भाखाकें  
भाखा नहि रहऽ हऽ कऽ सगहोषा खुरपनि बनौते की  
एहि खुरचनि के अही पूबसं विवेत की  
इस खोका पन्डितसं विवेत की  
पचीस बरसं एहि खुरपनि पर बहल करैल  
हमरा लोकनि अपन-अपन जीह बहार कयने  
इहनि रहल की  
अकरा लोक मन्दिरने स्थापित करैल अछि  
रकरा हमरा लोकनि दक्खीन लोक पर टकरने  
सिद्धि की  
एहि दौराक हुमकुल लोक  
हुट्टीक घारी ने चलेल अछि  
ई हुट्टीक घारी खुशगामिज तँ रहने अछि  
जे दिन-राति चिन्नीक बोरा सकैत अछि  
मलेक सुट्टीक धारी  
निजिये दिख बनैत अछि

( २ )

हमरा लोकनि भाखा के कहियो नाओ बनौ देल की  
एहि नाओकेँ लेबबा छेड़ सम क्यो तैयार होइत की  
नाओ खावत गाड़ी पर रहैत अछि,  
हमरा लोकनि बयाल में कलआरि खुमबेल की  
नाओकेँ खखन पानि में धऽ दिओक  
तँ मैलो काठ खुल हमारा होइत अछि  
लोक कलआरि केँ पानि में  
बलपवाक बदला में  
ओकरा दशोदिस पलमेत अछि  
नाओ ने आग जाइब, ने पाछो  
ओ ठामहि ठाम  
बकभाथर देहऽ लगेत अछि  
घास कछेर पर ठाढ़ कबेकी लोक  
बैर-बैर पकै हमारा देखैत अछि  
ई नाओ कहियो कोनो मोहनिमे नहि  
सुकल बाहु पर हुवल अछि  
अन्तेक बेर सुट्टी सम  
बिनीक बोरा में सुल अछि

—जीवकान्त

मैथिली पोथी/पत्र कोनू आ पढ़.

नेपाल सं प्रकाशित मैथिली के मासिक

अर्चना

संपादक :—राम भरोस कापड़ि भ्रमर

समकाली खतन, जनकपुरधाम, नेपाल

मास्किर सं प्रकाशित मैथिली + हिन्दी के मासिक मासिक

मिथिला दीप

समपादक : ब्रजान विहारी

१४६, ललितपुर कोकोनी ग्यालियर-४४४००६

## मृत्यु अभिमन्युक

( जीवकान्तक निमिश—हुनक हुनक कविताक संदम में )

राधु निर्मित  
सात-यात टा बकऽथर रोहि  
अधराजेय अभिमन्यु  
अखन आपस अवैछ  
त  
आदिमान छेड़ बाहुल  
इबार इबार स्वयनक हाथ  
ओकरा आबद्ध क लेव छैक  
आ तेहन  
पड़ैत छैक ओकरा पीठ पर  
दबवानल

एक तहि जनैदा द्वारा—

ओ आलेनाइ त नहि करैछ  
कनटि केँ वकैदा अछि  
आ खसि पड़ेछ—  
ओता  
महाभारतक ओ दया  
सुन्दरे नहि  
बाकबकी बबसे छैक  
ओ  
बातस द्वार भेयनकका सं अनिनिम  
राधु सं बैल  
अधारा अभिमन्यु  
राधु केँ ग्रास भेल छल  
आ खसि पड़ेछ  
अभिमन्युक मृत्यु  
परिणाम होइत छैक ।

—राम लोकन ठाकुर

## मिथिलांचलक विकास

मिथिलांचलक मायः पल्लवत पी छरी  
आवादी केँ नीक सेवा भोजनो प्राप्त नहि  
होइत छैन्ह । प्रति कोसमील आवादीक  
खाना-पाना सं शत होइत अछि जे संसारक  
कोनो भाग सं आवादीक दबाव बेहिर होव  
में नैकी अछि । कारण येह भ सकैत अछि  
जे मिथिलांचलक सामाजिक बातावरण  
बदलि रहल अछि । अनुशासन छुट भ गेल  
अछि । भाई-भ्राताक स्थान पर माओन्वला  
साथीकें पोला-थरीकें बाचार गम अछि ।  
आध्यात्मिक शक्तक लोप भए रहल अछि ।  
अच्छ तेरो रंज दुम्मा जाईत छथि । आम,  
धान, मक्या आदि कतहु मेल आ कतहु  
नहि होइत अछि । वेद सं सोलह कायकम  
यथा प्रपञ्च उपनायन, विवाह, आश, दश-  
कर्म आन एक परिपटील रूप में मानल  
ख रहल अछि । समाजक लोक केँ एक दोसर  
केँ शकक दाय सं देखैत छथि विस्वास  
नामक चीज समाप्त भए रहल अछि ।  
पाहुन केँ राति विश्राम हेत आहूँ कय  
लोक छोड़ि रहल छथि । एहि प्रकार  
समाजक जे एक अछल छल हुटि रहल  
अछि । मुदा ई सम क्रियक, कोन लानक  
प्रयोजन सं ? एकटा उच्च अछि जे आध्या-  
त्मिकताकें तिजानलि दए मौलिक वादी

विचार धारा में सकल समाज गहि रहल  
अछि । एका कोनो सुल-सुविधा प्राप्त  
करबाक सोचन मूलकछे मुदा साध्य कबनो  
नहि छल, नहि होइत । सर्वत्र टाका कम-  
नाक होव लागल अछि । जीवन स्तर, एन  
सहन, शिक्षा-दीक्षा, खान-पान, आमोद-  
प्रमोद, शस्त्र-विनोद, संगीत-युल, कला-  
कौशल, साहित्य, आध्यात्म आदि कबहुनी  
रूप धारण करै छैन अछि । बिबेक, त्याग,  
लौह, सहिष्णुता, अनुशासन, योपकार,  
संत संगम, शुद्ध भोजन आदि केँ पेश सं पेश  
व्यक्ति देखा देखी में अपन संस्कृति केँ  
नाष्ट क रहल छथि । किछु लोक अपन  
फनो आ पारिवारिक सरस्य सं अछिड़ी किम्बा  
शुद्ध हिन्दी में बजैत छथि । मैथिली नकबाना  
सं कवरात छथि ।  
धीरैकें पुरान अछि मुदा अखर आवि  
बुकल अछि जे मिथिलांचलक विकास कार्य  
गतिशील बनाबल बाए । एहि लेख पयान-  
कसक अछि जे ग्राम, प्रबल, अखर,  
प्रमदल आओर राज्य स्तर पर विचार  
गोष्ठीक आयोजन हो आ गोष्ठी द्वारा  
परिलि प्रस्ताव केँ सरकारक समक्ष राखल  
जाय । गोष्ठी द्वारा एक शक प्रस्ताव  
परिलि करन आवश्यक अछि ।



हमरा सनक खरत पैव सतया अछि। मैथिलीक स्थान अष्टम अनुसूची में सुरक्षित कराय, अपनपरित अकारिक, निशुक्ति परीक्षा में मैथिली के सेटिङ्क विषयक रूप में रखब, राजकाज मैथिली भाषा में सेहो तकर प्रसन्न कर, प्राथमिक शिक्षा के लोक-प्रिय बनवब लेख रोपीक प्रकाशन आ विज्ञापनक हाकिमा प्राप्त कर, मिथिला मेडरभ, हस्तकला, कारीगरी आदिक विकास कर लेख सेवका न्यायन आओर कार्यान्वित कर, जनमानस के अग्र आचकारक शान कायबिब लेख प्रचार-प्रसार कर आदि सामग्रीक अछि। प्रस्त उठैत अछि जे ई सभ कार्य होएत कोना ? देह सए वर्ष स पीहित एवं द्रोहित मिथिलाक उद्धार सनक साधन की पर सकछ ?

प्रश्न गंभीर अछि। सवत पहिने बावदकता अछि जे वैतना समिति के आर्थिक रूप खानदारी बनाब जाए। जाए। सकारी अनुदान पर बीनहार संस्थाक अर्थक संस्था अन सदन पर निर्भर करैत अछि यो अधिक विकासशील रख अछि तकर साथी इन्हाल अछि। मिथिलाक एक दुनिया अछि जे ओलांगिक विकास, खुप उर्मीक किताब एकर प्रारम्भ होयब बाकी अछि। कोनो वर्ष बाढ़ि तँ लव तापण अकाल होइत छथि—तँ कहियो सुखदक भीषण स्थितिक सामान करए पड़ैत छैन्ह। वखन शान नित्य-प्रति बढ़ि रहल अछि। लेखक उपका बारी मुख्यतः भारतीयक अङ्कुरमा पर निर्भर करैत अछि। आर्थिक किनमतक मयभक्ता सं मिथिलीक चल करि-भरि रहल अछि मुदा देखनिहार के। लोकक प्रतिनिधि अकल पटना निवास निहरी जाइत छथि। खल-पीयर रोसनी सं कामगायल शहर, रांग-चिराग बलन-मुदर-मुदर भजन, किन्ना आदि सखा ककरो आकृष्ट करैत अछि। पटनाक सावानगरी में हम मायावी ग जाइत छथि।

त ई सभ देखि कि हाथ-पर-हाथ धरए, हाँस रोकि समाजक मालिक अस्तित्वक विनाश देखैत इबाक चाही किन्ना स्लूट भए मिथिलाक मानवी गौरव, परम्परा, साहित्य, इस्त-कला, पवित्र, सामाजिक स्थिति, संस्कृतिक-रक्षा कल्याण संरक्षण करए पुनः समाज के समुन्नत करबाक प्रयास करी ? ई हू गंभीर समस्या अछि। समाजक लेख घेतना समिति अपनके स्नेह आ सहयोग, आकांक्षी अछि। जाति, धर्म आ अवस्थाक संतुल्यता सं पूषक रोहवार आ सौमनस्यक भावना सं एक बर भए समस्त मैथिली मागीक समुन्नत आ मिथिलाबलक वर्गीय विकास में सहयोगी बनी तकर आमंत्रण दैत अछि।

निवेदन अछि जे 'वैतना' शब्द के बरिताय करल जाय।

—श्री राजेन्द्र मा

सचिव, वैतना समिति, पटना  
(भारा चिसभो विचार लेखकक निजी छनि तँ ओकरा यथावत रखल लेख अछि—सं०)

## लाल बुभुक्षक नाम

(माफत देसिल बयना)

श्रीमान लाल बुभुक्षक जी—साहारा, जय मैथिली आदाब बाजो।

राम कृष्ण ! बड़ समाचार ! जे एक तऽ अहाँ चिट्ठी छिलैत छी बिहार आ ऊपर सं ओकरा पत्र पिकल जे प्रकाशित करबा कऽ नीक लोक केँ देसकर करैत छी से ओ' बाबू ई आदति छैब ! अहाँ ते कलकत्ता वाली कल छी आ भोगऽ पढ़ैत छनि मिथिलावासी केँ। ब्रह्मदेन अहाँ पत्रिका मे बिहारक क्योऽगला काम का-बाय मिथिलीक अदलाइ-बदलाइ लिखि देने रहियक से बेचारे चीफ सचिव केँ ओल कर्को बलकमा कऽ खालनि आ तकर प्रति-क्रिया स्वरूप ओ चरे-चर बुझुझी ठऽ क मैथिली पदनिहार, बलिहार आ खिब-निहार केँ गंगालाम करैबाक लेल तकले पिरैत छथि। अहाँ पूछय से कोना आ प्रमाण मागब तँ लखलखली, हम अहाँ केँ सम्पूर्ण इताने संक्षेप मे सुना दैत छी। अहाँ त छी छानबुभुक्षक, वनर सखाप, माबाय ओ बिदोषाई लगावै।

घटना छोटछीन सदैक मुदा मयावद। मेलेक ई जे दिल्लीक संसद मे अकल बड़त अभिवेदन प्रारंभ भेलक सं मयाव सं कौदर सभ झुलुगाय लागल—नाना तखन किवार तरंगक उदार-चढ़ाव प्रारंभ भऽ गेल आ खगल जे हो ते हो-बहि खैर मैथिली केँ संबधानिक मान्यता भेटि कऽ रहलक करल। मिथिलाक सगल आ मैथिली-भाषी (सरकारी लोक) क आराध्य श्री अजनाय बाबू अकमा मुई से केकठो शाख रहिय जे मैथिली केँ संबधानिक मान्यता देबाक लेल बिहार सरकार, केन्द्रसरकार केँ दृढता सेहो दार—कंसदर चिट्ठी लिखलक अछि तँ 'सांख्यिक'क कारणे अपना केँ नहि संभारि सकलहुँ आर विदा सेलहुँ मिथिलाक मे अमन संशुल आदिवाक प्रचार-प्रसार कऽ। ओना मोन मे एकमोट पेश-स्वाय सेहो रहय जे यात्राक अवधि मे भोजनवि-निमुक्के प्राप्त होएत, लोकतन्त्रक हस्ततः अमन आदिवा के भविष्यवाणीक रूप बढ प्रचार करब आर बं भ्राताजीक कुना सं मैथिली केँ संबधानिक मान्यता भेटि गेलक तँ अनिजा एलेभेशन धरि देखल स्वतंत्रक मने कंगरम गंगाम सेहो मुदा ओ बाबू कि भट्ट—नाम हमर विस्वचंचक ठगी कलाक अधिकार हमरा मुदा मुदा सेलहुँ हम स्वयं—ओ सेहो मुने मुदा संतोष एतवे अछि जे जान बाँचि गेल। संयोग बहन गेलक जे एकटा गाम से हमरा सं एक किआसु अछि खड़ा गेलह। परिवच-पातक पक्कात अकल हम हुनका अपन मविष्यवाणी सुना हुनकर विचार एल्लिअनि तँ ओ तीनहाथ छदपि उठलहुँ आ चिदिवा-चिदिवा कऽ नारा लागऽ लागलह—'अपूर्व आदिवा...ओरि-वनल आदिवा...विस्वचंचक बिदावाद' देखिते, सेलिते संपूर्ण गाम ओहि विशुसुख दखना पर बास भऽ गेलक आ नारा पर नारा पढ़ैए लागल। किआसुबन हमर गीठ धरपणा कऽ सकलह—'भाह एहि गाम मे

पुख सभ मैथिली नहि बैसेत अछि तँ की... मैथिलीक एकोमोट पत्रिका यदि गाम नहि असेत छैब तँ की... कोनक पोषी छथि कोनो घर मे मैथिलीक आन पोषी नहि भेटि सकैत तँ की... अहाँक आदिवा मुदा अपूर्व अछि... एहि सेर अप्पिछीक सकारी मान्यता सेटिङ्क रहैत... बुजुबे मान्यता भेटि गेलक... आब किछ करियौक खर-खर मैथिलीक नाम पर विरोधक किछ टाका... भऽ जाइक एकमोट खरबा मे पढ़ि पावौ !' से छानबुभुक्षली चक्रा मे पढ़ि गेल। बरी ओहिगाम मे धक्को लागि रोले विहाल नहिगम बकी पदेलहुँ आ अन्द-बादरे कम। बूझी छैकले जे 'बगबद नेपाल-बगबद जंगे बगबद... तकरे यदि सेल। ओहि गामक विमानो ने जतने रही कि बड़ा सेलहुँ। एकमोट सखन पुख हमर वाट छैक उल्लेख देवऽ लागलह—'आदि-रहा, ई कि ओ ? एना कियक मांगल आ चाह पीछि छी ? चाह पीछि अकल जाय चाह पीछि ओ सखन अकल बगबदस्थत भोजन तँ छुका पार्टीक रेस्तराँ दैत हमरा अमन बचनमृत सं दूत कऽ लागलह—'अँ, अहाँ ई कोन कर मे पड़ल छी ? मौका भेटल अछि तऽ ओकर काम उठाउ ई कि मैथिली-मैथिली वेषिया खल छी ? कथकता बाबूक आदेल्लने जगल तँ तोड़कवाहि होइ अहाँ। आज बं हमर विचार माननी तऽ टीक सेहो कयबा लिख आ प्रारंभ कऽ दिब अलिख जे-ये-ये' ई हम एम० एल० ए० तँ नहि मुदा बं अहाँ सभ भाषा सेहो केँ हम एम. एल. सी. नहि बनलहुँ तँ हमरा नावे कुहल पोखिल। आदारी हमर एकटा आग्रह नहि टाढलनि अछि मिथिली... ओ हमर हाथले...'

स ओहि सखनक मुई निहाड छलहुँ। बाबूक पालकी देखल पर राखि हम सखाक साहस कुटैलहुँ—'प्रियवर ! हमर अभिप्राय से नहि छल। हम एम. एल. ए. हमर पी. बाबा बात तँ ओहिना बाजि सेने रही। अखल से हमर चढ़ावक तातपर छल जे एहि केँ मैथिली केँ संविधानक अष्टम अनुसूची मे स्थान भेटि जयबाक चाही मुदा भऽ सकैछ जे किचकिच मे कोनो बिच उप-विषय भऽ जाय तँ हमरा सभकेँ शाकासि ब-बाक चाही... हमर बात में किचकिच मे लोकिकऽ, ओ हमसंग राजनीतिज्ञ बकी भाषण देवऽ लागलह—'अँ बाबू, हम सभ किछक साकाँस हएव ? साकाँस होयबाह हमरा सभकेँ कोन काम ? साकाँस होयबाह मैथिली एकदमीवालाक... सेतना समिति बाकी सभ... साकाँस होयबाह सारिये अका-सनीक प्रतिनिधि... सकारी विज्ञापन प्रका-शित कऽ बाज सारियेकार लोकनि बिनका सभकेँ छेड़ सकार 'क्षीप' क-बवस्था करैत छनि... अनेर हमर सभ किछक माय-काय पीह... हमरा सतके किछु कयैक हएत तँ

उदूक छैद करब आ कि ई मौनी सभकेँ भाषाक लेख ? देखावऽ हमर देहा भाषिकक पटापट उदू किबैत-बूटैत अछि। बी बाबू, बाबूक कैवा रिक्कीक आर अपन रातो धर घुमेने हो कि छौंका सभकेँ पता लागि जाबन आर अहाँ सुनत में...'' हँ अकबका कऽ पूछिअनि—'सो कि ओ ?' अहाँ केँ नहि पता अछि ? सकारी आदमी सभ मैथिलीक ओकराक बरनिहार सभ केँ पकड़ि पकड़ि कऽ पटना-बऽ का दख छैक गंगालुलक उदघाटन अखतर पर ओकरा सभकेँ गंगालाम जेवनाक प्रोग्राम छैक। हम अकल रहि गेलहुँ।

ओ सखन पुख भभाकऽ हँखलह आ हमरा सँखला दैत पुनः 'बगबदह—'गंग-लाम सं हमर तातपर्य गंगालाम सं छल। ब्रह्मदेन आब मैथिलीक किछ पत्रिका हम सेहो मिथिली केँ देववार करय पर लागल छनि तँ ओ कय गस भऽ गेलह अछि... बूझा बाढ़कना करबाक प्रवृत्ति छनि तँ रोहकारी सुला पर भदिक उठैत छथि। हुनका घंजा भेलनि जे गंगालुलक उदघाटनक अवसर पर अपन घरेलू लोक सभ ते इन्डि-राजीक समझ रहलहा करए, ते मिथिली-चलक प्रत्येक कोन सं एकर संदेशावर आदि सभकेँ सकारी आचार पकड़ि भऽ पटना पातल करबाक अभियान बल्ल छैक... अहाँ बुजे-चस निकलि बाउ... कोनो ठर नहि... हँ, ब्रह्मक कैवा दऽ देविक !' बाजि ओ लोटा पकड़ि पोलाहि दित किदा भऽ गेलह। हमरा अमन समेटा आदिवा निर-यैक बुझाय लागल—अदुता यथका कऽ उल्लेख जे आज कय गंगलक बाट धरि अना होनी केँ अना कय गंगलक बाट धरि अना सभरा छल उठि-उठि, पाँच-पल गोट नव-बुजक मोहि दोनान पर बगबदक आ अवि-तहि दौरा मंचिस्ट्रेट बकी बयाल तखन कय लागल। हम खल प्रयास करलहुँ मुदा नहि मागलक... राख दोरी... सी. एम. दोरी... पी. एम. दोरी आदि विरोधण सं भूषित भऽ, नाल-जाल बकी हाकि कऽ हसि देखल सकारी दूक ने अपन कमीजन प्राप्त कऽ ओ घर ताचि-नाचि कऽ पिकनी गीतक कीर्तन करए लागल—

'भरे अंगले मे छुहारा बया काम है, मेरे अंगले मे... !' से छल्लु-समकली, अपन पकीरहक वर्णन की करू... जे संतो-पंगा वर्णन करब तँ एकमोट छोट-छीन उप-नासे तयार भऽ जायत। संक्षेप मे इहए बुझैले हमर कय केकटा विज्ञापनदध्या मैथिल सभ मिथिलाक कोण-कोण सं बगन-ओल्लोख रहिय... सभक मुई सं मिथिली बिदावाद... माताजी बिदावादक नारा खालाउल्लोखक आर कर पुनः इससभ कोन धरानी महलमगाभी शेरुक उदघाटन उत्सव मे वर्मिजल भेलहुँ... सी. एमक सग राब-नीतिज्ञ आर भाषा समस्था पर कोन तर्क-वितर्क भेल आ हम सभ गंगालाम करैत करैत कोना केँ बाचि गेलहुँ—ओहि विषय अकल सं एक गोट स्थिति रहत आ बऽ 'देशियकमा'क सम्राटक केँ पदा रख छिअनि मुदा सघाति बक गोट भूमक बात छिल रहल छी—खल्लु-समकली, मिथिली-बल सभकेँ ओलेक चक्र करलहुँ—मिथिला

असि ५१५५ ५७५५



## अजयुत-अनटोरल

महापुरूष अजयुत सुखमंथी श्रीमान अजुल सारिक बाद समस्त विद्याभार सुख मंथी छथि मिहिक संयम. कलसक डा० श्री जगन्नाथ मिश्र। ओना त दिका में बड़-भूट गुण अछि—को बड़ छोट कहत अपराध—पउच समस्त देव गुण—ओना कि पकर लोकनि कहैत छथि—छति, प्रति कबवा मे प्रीयता। मिथिला मे एगो बड़ प्रचिद्धि पन्था छैक—कादर, पादय ओ औपाम, सब न बावय कौं मरि जाय। लोक कहै छैक जे जे उग्रपौरा तीनू श्रेणीक लोक भनारि सख बाकियो जाय किन्तु अजुल राजनेता आ खास के कावेर (र) क नेता किन्हूँ लय नहि बाकि लकैत छथि। आ न एकाध गोटे भूख सँ दूक आब जय बाकियो छथि तेनो स्वनामधन्य डा० हावेन त सख नहिनेटा बाकि समेत छथि। जेना कि कुनवा मे अनेछ, मुख्य मंत्रीक समय लेवा सँ पहिने डा० हावेन दू गोटे मद्रसूण, शय्य से हो लेने छथार। पहिल त मिथिला, मैथिल-मैथिलीक विनाश आ दोसर लय नहि बनवाय। पहिल सशयक निहारि ई नीक कर्का करैत अपन छथि—से त हमके शते छति पन्थ दोस्रोक निवारि मे ई पाछू नहि छथि तकर टटके उदाहरण बिक-मधुवनी मे अपन दख भवनक उदघाटनक समय दिनका द्वारा देल गेल भाषा। एहिठाम ई कहल जे दिनक सकार मैथिलीक संविधानिक मान्यता लेल 'कृत वक्ता' अछि तथा मैथिली अकादमी के एहि वर्ष चारि लाख सरकारी अनुदान मेळक-य। पहिलक संदर्भ मे जेना कि ई अपने वकत छथि धरगो व्यक्तिगत विद्वी प्रभान मंत्री के लिखने छथि..... 'अहाँ बरि दोसरक बात अछि मिथिला मिहिक सम्पादकीय सँ स्पष्ट पता चलेछ जे मात्र पचहत्तर हजार टाकाक अनुदान अकादमी केँ देल गेलछ। ओना ई विषय बात मेळ के लगभग मिश्र बरि कोटि लोकक भाषाक उन्नयनक नाम पर चल अकादमी केँ (ओना काजक लेल ई अकादमी हिनके स्वनामधन पोषण करैछ) जे अनुदान देत आबि रहल छथि तार अनुदान मे भोजपुरी अकादमी, एको प्रति-शत लोकक भाषा नहि रहैत हिन्दी अकादमी आ हुनके अनुहार 'दा प्रतिशत लोकक भाषा' उहाँ अकादमी के फोक अनुदान देत छथिन से नहि कबैत छथि। से जे हो, किन्तु हमरा लोकनिक सुभाव के 'नोबेल पुरस्कार कनिमदी' मानय त ओकरा प्रति स्वीकारक लेल सेहो पुरस्कारक पोषण करत चाहियेक आ एकर पहिल पुरस्कार डा० श्री बिहारक मुख्य मंत्री श्री जगन्नाथ मिश्र हावेन केँ देवाक चाहियेक।

नगरी-दिहरी, १३ मर १९८१ केन्द्रीय सरकार-एक सेर फेर पछिला देखक जे संविधानक अठम अनुच्छेद मे आर-बेसी भाषा के शामिल नहि कहल जायत। ओना परितोषक लेल, ओ कहल-अ जे राधय सरकार सम-अन-अन राबक ओटू भाषा सम केँ जे संविधान सँ बाहल अर

विनालक लेल छुविण सुयोग देक - से उचित।

प्रम उठल छैक मैथिली, नेपाली, डोगरी आ मनिपुरी भाषाक संविधानिक मान्यताक। नेपालीक लेल ५० बंगालक सरकार विधान सभा सँ एहि संदर्भ मे प्रस्ताव पास कए केन्द्र सँ बहुत पहिने अग्रणीय जना सुगल अर तथा नेपाली भाषा अंचल मे सरकारी समस्त काजक मान्य भाषाक रूप मे एकरा मान्यता ओ न्यायवार्तिक रूप दे चुकल अर। मनिपुरीक लेल सेहो ओकर सरकार केने छैक। पाछू अर डोगरी आ सम सँ पाछू मैथिली। मैथिली मात्र बिहार पृणित बहुपक्षक विकास मेळ अर। ओना कनता केँ आलो अक्से डुमरु चारियेक जे जगन्नाथ मिश्रक हगोर शाली भाषण मे कते लखटा छैक आ हुनक नोर छारिहुँ चरिलाली नोर सँ बेसी नहि।

अजुल युग मे राजकीय मान्यता

—रचित बरु



सापदा देवी

पुत्री : १५० ५० गणेश का

कोकन

पत्नी : १५० सुरति ठाकुर

बादपत्नी

मैथिली युवा साहित्यकार एवं मैथिली मुक्ति मोर्चा कलकत्ताक संयोजक श्री राम लोचन ठाकुरक पुत्रीया मां श्रीमती सररा देवीक अकासिक देहावसान समाया गछि बर्लक अवस्था मे अपन गाम बाबूपत्नी मे विगत २ अप्रील १९८२ केँ भय गेलनि। ई कुछ बर्ष सँ रोजिक व्यापि प्रस्त छलीह। ई जिविका-पडिया, रीत-नाद मे पूर्ण पटु व्यवहार कुशल ओ धर्मपरायण महिला छलीह। स्व० सररा देवी अपना बाबू एक मात्र पुन, पुकथु, तीन पौत्र ओ दू पौत्री केँ छोड़ि गेल छथि।

'देसिल धयना' चन्द्राक दर :-

- १ प्रति ५०, परवा
- १ बर्लक ५) टाका
- ५ बर्लक २०) टाका

पाइ पठेबाक पता :-

श्री जनार्दन मां,  
१७६१६, उषा नगर,  
कलकत्ता-७०००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सँ:-

'देसिल धयना' मे अपन विज्ञापन दय खास उठाव। कम खर्च मे सुन्दर टंग सँ अधिक प्रचार एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू  
विज्ञापन व्यवस्थापक  
अल्पादय प्रकाशन,

## देसिल धयना

पाठकीय परिवारक (साहित्यता) सदस्य  
१८. श्री रामचन्द्र झा, उषा नगर, कलकत्ता  
१९. प्रबोध झा  
२०. स्मरल नारायण झा  
२१. सुबान्त मिश्र, उषा नगर  
२२. खमनारायण झा  
२३. कान्हि बिहारी मिश्र  
२४. सुप्रेम नाथ झा, रंगकल  
२५. खुशीलाल झा, बहालवार  
२६. राम नारायण मिश्र, उषा नगर  
२७. अजुल हाथ करण, कलकत्ता  
२८. कलम मिश्र, नदारी, दक्षिण  
२९. विश्वमर मिश्र  
३०. सुमारी स्मृति भं, कलकत्ता  
३१. बाबुनाथ भं, बाबुलख

मिथिलाक कलकत्ता विभाग

मेथिल, मैथिल मेथिल दुहा मैथिलीक दान कतहु नहि मेळ ॥ मैथिलीक विज्ञान पर सर्वत्र एतेटा उक्त मेथिल-भरे अंगे मे तुम्हारा क्या काम है ??  
पत्र सुलाक मुँह कहां अनेरें बहल बा रहल अछि तें अथ पत्र केँ समाप्त करैत अपने सँ कलकत्ता प्राधान्य कइ रहल छी-जे ठाकुरमकरजी, अहाँ केँ जे नोन हो से लिखू—जं चारी तँ एहवाय मे अपन मनुष्य रीत पर्वत छिल कहत छी युवा भारते—वर्गजायवायक विरोध मे किन्तु नहि लिखी ओ मैथिल थिकाइ, हुनकर मातृभाषा मैथिली छनि मने ओ खोटी 'अप्यन लोक छथि तँ अप्यन लोक केँ देलार' कय उचित नहि। शैल कुशल।

बरीक  
—विश्व बंशित

## मिथिलावासीक माड

१. मिथिला राज्यक निर्माण हो।
२. मैथिली केँ अखिर लिख्य संविधानक अठम अनुच्छेद मे स्थान हो।
३. समस्त सरकारी। अर्थ सरकारी प्रति-सोपितामूलक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो।
४. मिथिला मे निम्नतम सँ उच्चतम स्तर चरि शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो।
५. मिथिलाक प्रथम राजभाषा मैथिली हो।
६. मिथिला मे सरकारी कल कारखानाक स्थापना ओ विकास हो।
७. मिथिलाक इतिहास अवस्था मे सुधार हो आ एहि निमित्त रौद्री दहरी सँ मुक्तिक अवस्था हो तथा यातायातक सुब्यवस्था हो।

—रामाचार मिश्र -  
बाली-मैथिली मुक्तियोर्वा,  
कलकत्ता



## सभा-समिति

● कलकत्ता, १८-४-८२। पूर्व दोप-  
णाम अक्षरक मैथिली मुक्ति मोर्चा के वरार  
स्थानीय उधमगार विद्यालय में मेल।  
मोर्चा के सदस्य श्री रामलाल ठाकुर  
दुर्गाया माता के देहावन २४-४-८२ के  
म जेवक करण ओ अनुपस्थित छलह।  
उपस्थित सदस्यगण एहि आकरिभक्त एवं  
अत्याधिक निधन पर एक शोक प्रस्ताव  
पारित कएलनि तथा दिवंगत आत्माक चिर  
शान्ति हेतु ओ ओ शोक संवत परिवार के  
शाहव ओ भेंट प्रदान करवाक हेतु माँ मैथिली  
सं व मिन्ट मीन मार्चना करल गेल।  
समाक अग्रिम कार्यवाही - स्थगित  
राखल गेल।

(द्वारा—जनार्दन माँ, लक्ष्मीपुष्पक)

● कनसासपुर (दरभंगा), १२-३-  
८२। दड़िगगा स्थित साहित्यिक संस्था  
कोषिणीय प्रकाशनात में गेहल सभा एहि  
अवसर में कवि सम्मेलन एवं सांस्कृतिक  
कार्यक्रम सौभाग्य सम्पन्न भेल। कार्यक्रम  
शुभारम्भ श्री उदयकान्त मिश्र एवं तुम्ही  
बन्द माँ द्वारा श्री वेदनाथ विमल रचित  
समयती लयदा 'पूजा कोना करी मे भवानी'  
सं मेल जाइ मे तबला शरद क रहल छलह  
श्री कृष्ण मोहन माँ।

उद्घाटनकर्ता प्रसिद्ध लेखक प्रो० डा०  
नित्यानन्द माँ अग्न उद्घाटन माणन मे  
माननीय जनता सं अग्न मायाओ वाहिन्यक  
प्रति सतत वागमक रहि मैथिलीक उदयान  
लेल अभियानक आह्वान केलथिन प्रो० डा०  
रघुनाथ मिश्रक अध्यक्षता मे प्रो० जय कवि  
सम्मेलन मेल सभ मे सर्वश्री कृष्ण मोहन  
माँ, जय प्रकाश चौधरी जलक, प्रो०  
देवकांत मिश्र, प्रो० विनय नायक ठाकुर,  
व्यनाथ विमल आदि भाग लेलनि। कार्य-  
क्रम धर्मार्थ प्रति चक्रण पत्र। सांस्कृतिक  
कार्यक्रमक मुख्य आकर्षण छलह फिरो  
नायक श्री अरविन्द कुमार माँ केदार चन्द्र  
मिश्र कुमर बाल ठाकुर ओ भयन कुमार  
समक नीत सेहो मनोरम छल। संचालक  
रहल छलह कैथिलीक संयोजक श्री वेदनाथ  
विमल।

● कैथिलीक अध्यक्ष श्री रमानन्द रेणु  
अग्न संस्था मे फलजि जे बाधुरि गानक  
माटि नहि जागत नाधरि कोनो कानि नहि  
म सख। एहि लेल ग्रामीण लोक-जीना  
सं सख म क थापा ओ साहित्यिक उद्यम  
लेल अभियान करी। ग्रामीण जनता दिस  
सं सर्व श्री केदार नाथ मिश्र, देवेन्द्र नाथ  
माँ, देवकांत माँ अग्न-अग्न उद्घाटन  
व्यक्त केलथि। 'अग्न मे स्वागत समिति  
दिस व श्री विपुलकुमार मिश्र अध्यक्ष शानन  
केलनि।

(द्वारा—वैद्यनाथ विमल)

● कलकत्ता-१४-४-८२। मिथिला  
सांस्कृतिक परिषदक द्वारा कबीर चन्द्र माँ  
(कबीर चन्द्र कोटि देनाइ इस अवसरक दुनैत  
डी ले०) कयती स्थानीय श्री सनातन धर्म  
विद्यालय मे मनाओल गेल जकर अध्यक्षता  
केलनि परिषदक आयोजन हेतु निधुक  
स्थानी अध्यक्ष डा० श्री मुनीन्द्र माँ।

अग्नोदय प्रकाशन, ३३५, डा० देवदत्त रमान रोड, कलकत्ता—४०००३३ के लेख श्री महेस्वर माँ द्वारा प्रकाशित तथा यज्ञनिधर आदं प्रिन्टर्स ३२ की बुनाइल नैशाख स्ट्रीट

कलकत्ता—५ मे मुद्रित। सम्पादक—श्री जनार्दन माँ

प्रधान जता छलह डा० अंशुकी माँ प्रधान  
व्यक्तिनिक हवा मे मंचपर ल गेल गेलह  
श्री मिथिलेन्द्र जी।

कार्यक्रमक अग्न मिथिलाक जातीय  
गीत 'जय-जय मेरठि' सं मेल जकर गायिका  
छलीह दुमारी रेमा। रेमा अग्न गायन  
क्षमता सं कनेसलक छेल लोक केँ अग्न  
गामपर ल जेवा मे सफल रहल। ओ  
आगे बरकटा गीत गयोअक। ओकरा  
मे पूर्ण प्रतिभा छैक आ नें अन्यास करय त  
नीक गायिका बनि सकैछ।

कार्यक्रम पूर्ण अवसरसि छल एकटा  
गीत आ एकटा माणन आ बीच मे अग्न-  
श्रीय अनुशासन। अग्न अपलख बात त  
ई मेल जे कबीरकर हवि उपलब्ध होइतहु  
मंचपर नहि छल आयोजक लोकनि भविसक  
एकर खगता नहि दुसलनि हम सं महत्वपूर्ण  
माणन छल प्रधान जका सोबक। ओ  
कबीरकर खूब प्रस्ता केलनि कारण जे केनाइ  
आवश्यक छलनि—ममहि हुनक रचना पढ़ल  
नहि छलनि, जे भवनहि गलतह पठल  
मैथिलीक आधुनिक कविता जे रिकस हुन  
भाषाक कविता सं पाछू नहि अछि। तकर  
ओर मिन्दा केलनि। ओ ग० कला छलह  
जे हुनक पैचा न्हि ई अधिकार भवसले छलनि  
जे छहपि केँ मंचपर चढ़ि जायि आ कबो  
बूढ़। हाथ उठाउ। फटाक—पढ़ि लेखि—  
दस बल धरि डा० छोटाक ओइ ठाम हाट-  
खार केलक फचात पी एच० डी० क  
उपाधि पयोनिहार डा० अंशुकी माँ अग्न  
पौषक प्रयोओल पती के रोखेत आहुक  
कविताक निरपेक्षाक बात कलनि।  
डा० माँ केँ हुनक चारिनि जे हाट-खार  
सं कोइभरि लकरी कोनो गुलाबन ला  
पड़ि ज्योने पी एच० डी० अग्नले मेदि  
गेलनि पठल कविता दुनुवाक बोध दना  
नहि भेटैत छैक। तहिता नें प्रधान जका  
वहि आरोग सं व्यथ्य मरोदय अग्न क-  
मति प्रकट केलनि त अचल जे। हुनको  
हेतु विगतीक अर्थ चामरीपटा छनि जकर  
आ आधुनिक साहित्यक संतर्प हुनक शानक  
परिचय की इच्छ समिति प्रमाणित नहि  
करैछ।

एहि अवसर पर श्री नाथ सोबिच  
चौधरी अवसले कबीरक प्रति अग्नकी  
भद्राञ्जलि मैथिलीक रूप, विकासक नात  
कलनि जे आयोजक उपलब्ध मानल  
जा सकैछ।

लेखक संग लिखल पढ़ि रहल-ए जे ई  
आयोजनी संस्था-अम आहपर आयोजक  
महत्वा नहि दुमि सकल-ए। शुरु किर्तिक  
बयली ना स्मृति विजय मना केँ इतरा  
लोकनि हुनक नहि अपितु अग्न, अग्न देव  
समयक उपकार करत छी। किर्तिक  
स्मृति विजय पढ़ी लेख आवश्यक जे हुनक  
व्यक्तिगत कृतित्व सं शिक्षा जय इतरा लोकनि  
अग्न देश भाषा-सांस्कृतिक विकास लेख  
शाय ही आ काज करी। तें आवश्यक छैक  
जे माघ विजयपति आ कबीर चन्द्र माँ  
के स्मृतिपेठ नहि—मीयलन महोदयक  
स्मृति पर्व, प्यातिरीवर स्मृति पर्व, महो-  
अभि डाक आ डाक दाय स्मृति पर्व मना-  
ओख-बाय। आवश्यक छैक महत्वाही  
लोरिक, लखैस दीनापदी आ रायण

पाक स्मृति दिवस मनाओल जाय।  
मिथिलाक एकमाँ इतिहासक पुनरावृत्ति  
आत्मपाती प्रभाव थिअ—एहि सं निवृत्ति  
मेनहि मिथिलाक कल्याण छैक।

माघ अखबार मे नाम छपेवा लेख आ  
अनरा मे कला एका कथाक जोषे एहि  
तरे शुरु किर्तिक नाम पर मजाक उदा-  
नाइ सरसिह निन्दनीय ओ लयास्वद थिअ।  
(द्वारा—अमरल)

## चिट्ठी-पुरजी

'धैरिख बला' क प्रति मेरठ। जे  
'देविक बला' सग्न जग्न मित्र' कहल गेल  
छै तें सरो नीट गगल, चरी, तें पुनल-  
किये इल। ओना, ई कहल जाय कि  
पत्रिका बहु बोरगर आ तेज-बला अछि,  
तें कोनो अतिशयोक्ति नहि। 'लोकन  
नविराज' केर कमल तें देखे बोग अछि।

—आरती प्रसाद सिंह, पटना  
पत्र दीर्घपु हो, एकर भय प्रचार  
प्रचार-हो। मैथिली पत्र पत्रिका में एखन  
देखि बला के मान जम्मे श्रमण केर  
अछि, तबन एहि मे रोचना, कोबुलता  
ओर विविधताक सख छार अछि। मय-  
सक छै सपुर्दाद।

—श्री देव मा, हिन्दू-मोटर  
सम्पादकी 'नील नहि अधिकार चाही'  
देखि मन गद-गद भइ गेल। इतरा लोकनि

### मालागत

## मामा, आव बुझौं!

मामा, अहाँको सोकदिया से आव बुझौं।

अहाँ कतेक सदाओ से मामा बुझौं।

मामा आव बुझौं।

इसबूळ मे माट खेब, बेर बेर कई छथि।

अहाँकेर जामक, सुलुन के मान, छपि।

सुलुन भेते तिपचा, अहाँ काम बुझौं।

मामा आव बुझौं।

अँ अपतेला लल मामा, इतरा को देखौ।

कोना चानिक कटोरीमे, दूधमाव छेप चो।

पतेक ताम काम देखि, इसबीह झुचै।

मामा, आव बुझौं।

मुदा दादोके सुरिखल छै, बलकेँ दूभायव।

अहाँ चिता तें हेतु बड-जटीन गायब।

अहाँ जवनेला कन्निक नोक भवै छी।

मामा आव बुझौं।

मामा, अहाँको सोकदिया से आव बुझौं।

राय मरोस कापड़ि 'भ्रमर'

## कह लोचन कविराय

-दूरक ठील सोहजन कह्यौ छैक पुरान  
किन्तु मात्र कहथीए नहि सुनिबो रहलहुं कान  
सुनियो रहलहुं कान आसि सं देखि रहल छौ  
मैथिलीक दुर्दशा हाल मिथिलाक कहय को  
कह लोचन कविराय विवेक पढ़न नवतूरक  
निश्चित पतनक मूल प्राप्ति बात त दूरक।



विद्या

समपादकीय

सरकारी पुरस्कार आ मैथिलीक साहित्यकार

मुन्ना छोट सँ छोट आ पेष सँ पेष खादोदन मे साहिलकाक भूमिका प्रदान रहल-य । साहिलकार कानि द्रष्टा होइत छथि । ई पुनर प्रती-पात के तोषि आदो-धनक नव माटि तैयार करैत छथि आ पुनः आदो-धनक बीजापोषण करैत छथि । परधनक दहीठाम निनस-काज दोष नहि होइछ । ई अंगन रोचक आदो-धनक बीज के माटि सँ बहार मय दिवाल वृक्षक रूप लेबाक, औरतक कुटुम्बा-सम्बन्धक समुचित परिवर्तक लिखन करैत छथि, आदो-धनक हाथ सँ ओकर खडा ऐक स्वयं त सज्जन सज्जिन रहितु छथि, सज्जनक ओकर के सेहो ओकर उपयो-गिताक मानस सारा ओकर ज्ञानक लेख सरोजन बनबैत छथि । दोष मे खलन कि ओ गोट सट्ट सट्ट छैक त ई स्वयं खटि जाइत छथि । तँ साहित्यकारक ई गमना अह । ई प्रातः सखणीय रोचक छथि, अनुकरणीय होइत आ अमरता के प्राप्त करैत छथि ।

कहल आइछ जे के काज तस्परि स संभय नहि होइत छैक ते खाहियकार भजन ककन सं जननि कि लेत छथि । एत क्वि अं विधाळ मानताक इति निरुक्त ककन रिप-दिवा निरास लेल सुगल रहैत स दोसर दिख मानवताक श्रम शोका-शाकाक सेहो । पण्डित आंग छय सै जतय आदरक भावना रहैत छैक ते दोसर जगल दुइय मे आनाक । ते पण्डित बर जतय निरुक्त स्वागत होइत रहल-ए त दोसर निरोधी । परब खाहियकार जनवलाक सवारी मे समल विरोध के भुल गित करत अपन छलय पथ पर अवि-राम चलेत रहैत छथि ।

एहि दुखि के अशुक मैथिली साहित्यकार दिस सकै छी मुदा सं मन भिनि कि  
साए, छल माथा नत भ जाए। किछु अपवाद के छोड़ि प्रायः सब के मन मन  
अस्सी चरित्र छोड़ि स्वान प्रशंसक प्रसन्न रह छथि। इहए कारण अहूँ के एतो-  
निक प्रकाशो मिथिला-मैथिली अमर न्यायोचित अधिकार सं वंचित रहब-ए।  
मैथिली आदर्शन जातीय आन्दोलनक रूप मे नहि स्थापित भ सकल-ए।

मात्रय जीवन, मैं भाषणा की महत्व छेक से आव लिखावक खगता नहि । वतनामा ने कानिय प्रदेश से चलि रहल आदोलन जनर मुख्य मात्र छेक 'कलश' के विभाषा फर्म, लतनगत प्रथम आवस्यक भाषा लिखावक-ट्टका उदारुण किन से केना पव सं पव 'शुननीट' गुप्तरा विजेता साहित्यिक परि ने पूर्ण सकिय छथि । ओतने नहि समल लिखिबी कलकागन लेखन परि ने पूर्ण सकिय छथि । परचव मैथिली आदोलन मे साहित्यकारक स्वयंसेवकीक गप त करक बाजो-निरोध भेटत रहलक-थ । कुत्र कुत्र नवविद्युमा ओत प्रातिवीर्य गीतकार त भूषक प्रथमतः देखवा लेल भाषा आदोलन के गुणित राजनीतिक संग बोधयो सं याव नहि आयल । पता ने हुका कवन भूष लगत छनि लिनाह भाषा मे मंगत छथि अथवा नै देखावक लागत छथि । ओना कय ई अइ से हो गप प्रकाश कर लेल गीतकार मरियद के भाषाएक सारा लेखन पढ़लेनि । त कह रहल ने कही त मैथिली आदोलन मे सन सं कलक ई लिखितक नकल कर रहल ।

[illegible]

जहाँपर महाकवि नारायणक प्रभु अहं स्वतन्त्रिक स्वयं मे ओ 'पकरी चारा' गर्वक संग अस्वीकार केने छथि आ तेँ से एहि खेय स्वीकार कालाह तार मे पूरा संदेह। 'कविबर आसी प्रवाद छि केँ हिन्दी साहित्यकाक रूप मे पाब सैक मायिक बूचि कालव सेमिय रहल छनि। पलव एहि बेर एतन्हुरी दस हजारक 'तेरा' ओ स्वीकार छथि

मैथिली—याने मैथिली भाषा हिमा-  
 द्य स गंगा तक आ बंगाल स गंडक तक  
 पसरल विद्याल मुजला-मुफला शास्य स्वाभला  
 मिथिला देशक भाषा, तीन कोटी मैथिलक  
 मातृभाषा ।

योगा हैं सर्वमान्य और जो भाषा कुतू-  
खत व्यक्ति वा वर्णक नाज होइ छह, परब  
मिथिला में धन आमक प्रचार करह  
गेछ्य आ एतौन करह वा रह्य के  
मैथिली कुतू विशेष वर्णक भाषा थिक, आ  
यथेन्द्रुत अयोग लोक रहि ज्वारक शिकार  
मेछ्य । तें और धन के दूर कोक जात  
छह, हमरा जानबे ।

भाषा पर क्या करके इस स्थिति में भाषा  
यिक की वादों पर विचार क ठेव आवश्यक  
भाषा के विचारक बहुत बड़ गेहड़  
मनुस्मृत समाधिक प्राणी पिक। ओ मात्र  
समाज में रहित नहीं आर बल समाजक  
अभाव में संरक्षक हा भग विचारक अभाव

खबर मिले, एक दोपहर, ईशेल कोसले खोज  
सम दौरा छल अछि माथेनी । मुल-दुकर  
अन्तस्व प्युमी के दौरा छ' पंच भाषाक  
अभाव में ओ प्रेष्ट नजिक सेवर के  
मुद्राक बई सजता सक छ' । किन्तु भाषा  
मात्र शतै नहि, अरु के विचारक वास्तव  
रूप कि । मार्क्स भाषा के immediate-  
reality of thought कहलन्हि । भाषाक  
बिना विचारक अस्तित्व नै रहै । एहि स  
हरी प्या चयथ जे मुद्राक समाजिक आ

विषयबोधार्थ भागी हेव भाषाक अयस्क भाषण  
मेल । मनुष्यक के अपन मनक बात दोसर  
के कथनाक तथा दोसरक बात अन्वयक  
के अर्थक हवाए कहियो भाषा के खया  
देखेने हैत । दोसर के भाषा एहि लए अपन  
लेखक हेतु या बार भाषा के खया देल रोल  
हेतु से निमित्त लए खयालक सभ सहलक  
छिड़ झट्टा छल हेत, अन्यथा उद्यमक पूर्ति  
संभव नहि छल । तेकर, भाषा मनुष्यक  
हेतु खयालक तब ना एता बुरे के भाषाक

जहाँधरि विहार लच्छाक मन छैक ओ को  
 बड्ढाज सबै करत, मैथिली आशारेज्य के अस  
 के को कीनबाक प्रयास करत फल पडच कि सा  
 बनबा छैल तैयार अछि ? कि विवेक लेखामात्रा  
 अहं सकार दुस्की फेकैत सहियकर त  
 आ ई अग्रिदत्त एक मैथिलीक साहित्यकार त  
 से कपो स हुकाअत नहि । इतिहास सबी  
 लेने हो—कुनू बेदा अम नहि के हट नहि  
 कार लोकनि की कौत छाथ पडच बनता के  
 परमाथवषक । काव्याथक छडि शनिक छडि  
 बुझल—सै इयात लोकनि के नहि छिडायक

अधिर्भाव सत्पथक रूप मे पैठ-राज्य  
छर मनुष्य, मनुष्यक कल्याण, एहि संघ  
मे स्वास्ति करै छथि-भाषा सभाक छे  
बनाओल गेखर, एकर निर्माण लोक बीच  
विचारक आदान प्रदानक सामर्थ्यक रूप मे

के समाजिक समस्याओं के समाधान के लिए  
 आत्म-सहायता के माध्यम से समाधान  
 के माध्यम से समाधान के माध्यम से समाधान  
 के माध्यम से समाधान के माध्यम से समाधान

के समर्थक विचारों को वास्तव में कि विचारक नहीं कि तथा मार लेख उपर्युक्त प्रत्यक्ष निमित्त प्रत्यक्ष हो वह शिक्षक, आ शिक्षा विभागाधिक प्र नमि संवेष्ट । महिला कुल शिक्षक काव कुल एक व्यक्ति व संयंत्र नमि, तारा लेख वादी सामूहिक प्रयास आ तें महिला शिक्षक प्रत्यक्षन आ समक लेख महिला-समक शिक्षा साधनापाक किता अध्याय । आर विचारक प्राणः सत्य विधान एहि मत सं समस्त ह्यिच आ मतु आयक मरुता के लोकार करे छथि ।

विकासक मूल धिक्त संपर्ष । मानव  
सम्यक्ताक आदिकाल स आर शक्त हेग हेग  
पर मनुष्य के संपर्ष कर । पक्षेय आ गहि  
रहल छिक ई संपर्ष विगणीक विभिन्न हेन  
मे । विगिन्न रूप मे होखत रहल आ  
माया एहि मे कायक सिद्ध भेटैय । गहिने  
कहि आयल छी जे सुख विकास एकक  
प्रयत्ने शभव नहि । लग्यतः संपर्ष तेह  
ताम्रदिक रूप मे भेटैय । स्थाडिन्न-  
अनुसार 'माया' कते बचाविक आदान-  
प्रदानक माध्यम धिक्त, तेते संपर्षक आ  
सांगणिक विकासक साधन सेरो ।

आवृत्ति विचार करी और भाषा संघर्षक  
आ विकासक साधन केन विभक्त त केर  
शिक्षक वर्ग करव आवश्यक । शिक्षा में  
(विशेष रूप से)

[illegible]

अपन सदस्यो कलंक के भँवबा लेल हजारी  
मल्ल कए मैथिलीक बिनाशक हेतु साहित्यकए  
हेतुकार सब एते नीच, धदन दयाक पात्र  
ओकरा लोकनि मे दोष नहि छैक ?

सर्व विषय अर्थ-हेतु, ओ प्रतिफल चाहेय  
मिथिवा-मैथिची विपरी सकारा की चाहेय  
अहे ये मा-या भनहि अस्त नैना के देदि  
दुखोसक-ए । देवावची मैथिची सहित्य-  
साधण मिथिलावाची के सवाल ह्माह-  
इ-एथिक आसे मिथिच-मैथिची पर लागि-  
चाही ।

● जय मैथिली







कविता

भाषासक पंढरा सं सम्बद्ध

## तोनटा मुक्तक

( १ )

नहि हो केओ शुक्तिम, हिन्दू  
नहि हिन्दू हो मुसलमान  
"दारासी" ई अतिबाय आइ अजि  
हो डुर पहिने इमान

( २ )

सम ते "आदम" के ओलाद  
अथवा "मनु" के अजि समान  
भाय भाय मे केहन मलाड़ा  
केहन ई चिटवा इमान

( ३ )

सम मानड ई मही के मावा  
"आदम" के अजि जन्म रवान  
पतड "शरीर" के अजि मजार आ  
मार्ग सकिड गवा

—फजलुर रहमान हाथसी

## ले मशाल सम कलुष जरा दे

ब्राग-जाग मैथिल संघाडी, भोजपुर संघान  
सम मुलत छै छट रहल छी, वारक साज-समान ।  
समक माय दुरु दुरक सके छी, अबडो बनि को ठाढ़ि  
निर्लेज बनि सम ओबि रहल छै फुसिये करे आदि  
आबो नहि बेतब तड जेरो रहल सहल सम्मान ॥

कगदा-कुबड़ा बहिरा बोका, मिलि के तोड़ी माल  
तोहर दुल्लभा मूलछे सुटो, तोहर वाड बेदाह  
अपन घर मे तोहरे भाषाबेर भेडो अपमान ॥

तोहर आलि को जाली मट्टल, वेले नहि निज मैथ,  
तोहरे घर सं तोहरे सम्बन्धि पठवो देश-विदेश  
दिल पर दिन कागाड बने छै, ककरो नहि को मान ॥

माइ-माइ मे लड़ा-भिड़कड दधिअने को कुरखी,  
तौ प्रमादबरा फुटि रहल छै, रहि रहि दै को घुड़ही  
एकर ओकर पीठ ठोके को, मूलख नै को जान ॥

ठोहि पारिख माय कने छी, तैयो नहि को लाज  
जे सम कटा सिला रहल को, तेकरे करे छे काज  
अपन पर फुहरि सं काटे, बतल छे नादान ॥

पूदब मे विगुल बजै छी, रही तगाड़ा चोट  
ताड ठोकि मैदान ठाढ़ हो, कोइ नोट आ भोट  
बटे बटे, आबो तड चेतै, का ने धरे कमान ॥

अपना दक ठे सम लईय, पलतो धरि छे जुर,  
मुई फुकोने सम बैसल छै, बैल अन्हरिया घुरप  
ले मराण सब कलुष जरा दे, सलने हेतो बिदान ॥

—अशु नलाल करण

दू गोटे लघु कथा

## गिरगिट

बेदासक टडाठही दुपहरिया मे देवन - अतुवार रंग बदलनाक पड़ता हमरा लोकनि  
आ अपन गर्ववती स्त्रीक आहारक लोगार मे जनजात होइए...

कह सबन भीनान गिरगिट अपन डेरा मे—मुदा ताहु मे हम सम पाहु पड़ि  
पुछाह त देखै छथि जे पत्नी घोषना मेल्हू...पत्नी बीबि सं लोकि लेखनि ।

लुटकओने देखल छथिन । बेर-बेर एकर —अहो कि नेता लोकनि बात क  
कारण पुछ्यो उत्तर पत्नीक मखान संग नहि रहल छी ? गिरगिटक प्रश्न मेले ।

मेखनि त ओ खिसिया के बखाल—एहिना —त आर ककर ? आह—कलिक  
घोषना पुछओने एब त लोक कि अपन नेता लोकनि क्यारी करवाक दशता कि  
बानी जेए जे अशोक ममक बात बूझि हमरा लोकनि मे रहि गेलख ?

लेन । गिरगिट के बड़ कोर सं हंसी लागि  
पत्नी ओहिना विधुआएल भननेलीह— गेलनि । ओ दशका देत बखालह—तै दे  
लोक बुझिए क की कत ? बं हरिपुत्र कहैत छैक स्त्रीगणक बुद्धि । हमरा लोकनि  
लोक के हमर कबोटक चित्ता छर त सत के त एहि मे प्रसन्नता हेवाक बाही ।

अओ । बहनीयो लोक जे एव टके नहि नितराह, दह जगह नितराह ।

—एक सत्त, दोहर सत्त, देख सत्त, अहो कहि जे नहि काह से अही दु ट  
नरक मे पुइए । अचो त बडब ? गिरगिट  
अपन सम्पन्न क देखनि ।

पत्नी सखार करत बकलियन—कह हमरा लोकनि अरखन एह देश सं बलि  
बली ।

गिरगिट छुत्ता मे पड़ि गेलाह । 'आखिर कूत बहन बात मेलेक जे हमरा  
लोकनि के अपन अपभ्रमि छोड़ि चलि जेनाक चाही ?'

पत्नीक पाहा गर्म भ गेलनि । 'कनिनो ज शानक छुति रहैत त ई एख्य नहि पड़ैत ।  
आखिर कुनू बाति कटुक अपन परिचय रहैत छैक, निरोगता रहैत छैक । जं तेह  
मे जंते त लोक के छाजे मरि नहि जा हेतक ?'

—अशोक कदवाक अप हमरा नहि दुके मे आपस । हमरा लोकनि अपन रंग बदलाक लेल निश्चयत छी ।

## भारत रत्न

सरलया पर पड़ैत-पड़ैत मीथम पिता-मइ होचि रहल छेलह जे अन्यायी लोकक  
संग दय ओ नीक नहि केहन । अपानी  
प्रतिबल हुनका कहियो क्षमा नहि कत ।

अत नै ओ केर हथियार उठेबाक आ पण्डय दिस सं लखबाक घोषणा केहन ।  
इ गप्प सबन दुयोधनक कान तक गेल त  
पड़िते त ओ बबड़ाएल किनु परचार

शत्रुनीक संग परामर्श कर दोहर दिन हस्ति-नापुर मे निराट समाक ओजोन केक ।  
एहि समा मे ओ मीथम पितामह के एगो  
पेब प्रशस्ति पत्रक संग भारत रत्नक उपाधि सं अर्जेंट केहन । कइल काइल जे तकर  
बार जे मीथम पितामह मओन मत भाषण  
केहन से बा लीकह दुह नहि लोखनि ।

● अप्रदूत

## डा० जगन्नाथ मिश्र उर्फ

## थलीनाथ मिश्र प्रकरण

विहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक  
बिहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक  
बिहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक

विहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक  
बिहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक  
बिहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक

विहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक  
बिहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक  
बिहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक

विहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक  
बिहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक  
बिहार भारतक सम सं धनी प्रदेश थली (सगामी) केनाक बात । अपनीक



५०% (४०,००० मेट्रिक टन्स) साल बीछ ३ बिचारीक हाथ आ बाकी ३% कमी-अन द बिचारीक हाथ केचवान निर्गम छैमे छल परन्तु डा० मिश्रक प्रभाव छैयेटा बकसीदीक हाथ ११५५ प्रति टन मात्र सँ बेचि देल गेल बलन कि सम्प्रदेश मे एक मात्र २१८५) छलैक। एहिठाम समग्र रखावक चिकन के बिचारक हाल बीब लखौन होइत अछ। सरकार के एहि सँ ७-१२ कोटिक पाटा भेजक बलन कि मिशा सोहैब के कष्टक कोटिक आनद।

३) कोरिया—कोरिया मात्र लाइसेंस बला व्यवसायीक हाथ देबल जाइत छल परन्तु मिशा सोहैब निम्न परिवर्तन कर किन्हु डीबेदारक हाथ देवला देलथन—बनारस सँ बलवामी कीनत आ तकरा बाद उमोक्ता भरि जायत। एहि तरहे बीचक लोकक उपस्थिति सँ कोरियाम दाम प्रति किन्हु २५ टाका बढ़ि गेलक। किन्हु 'कोरियावासी' जवन एक ५०० आर ० मे फल आ मिशा सोहैब ओकरा मौलिक आदेय सँ छोड़िवा मे अमरुल खहाइ त लिखित व्यदेश भरि द देलथिन। बनारसक एतौ नामी बसास पकड़ल गेल छल त दिनक देसी सँ ओ बिचारीगी असताइ मे भाली काओल गेल, फेर बनारस आ ओर दाम सँ ओ फिदाइ म गेल। ओकरा संग सँ बहुतकर कानस पण मेटल छलैक। कर्नाटन ओ एलनो दिन्ही-पटना सीनातानि के वृमि रहल-ए आ पकड़निहार एच० पी० (सी० आर० डी०) क बढी म गेलैक।

४) शराब—जनता अरुल मे नवानन्दी छाए सेल छलैक। मिशा सरकार हकाल तोहि दुसराब मिनामक नियम के उल्लंघन करैत 'लीडर ओप ओक्शन' कद कर एतौ ठीकेदार के ठीका देवेक कर्नाटन दुटा मण व्यवसाय त खुलेआम बलए मे मिशा के मुलमंथी बनैवा छैल ओ दुनु मिशि एक कोटि टाका खर्च केने आ।

५) कुलिया—१६८० मे मिशा सोहैब घोषणा केछनि जे कुलियार उपबोनिहार के २२ प्रति बिटल दाम देल जेतैक। १३ फरवरी १६८१ के एकटा ६ माल छैल अगित क देल गेलक। एहिठाम मन रखलक भिक के ६ माल कुलियाक पूरा 'लीनर' मे जाइ। कइल बाइछ के 'लीनी' मिलक माडिक लग दिन्हीक फिलान समेखल छैल ५० लाख मिशा सोहैब के यही मेट केने रहनि—अकरा लोकनिक सखाइ पर उपरोक्त स्थान आवेता वहाइ भेज छल।

६) बाढ़ि निपटण—१६८१-८२ मे बाढ़ि निपटण नाम पर ८० कोटि खर्च भेजक सरकार अधिकांश नकदी बील पर सुगतान कइल गेल। १६०३ मे बलन मिशा सोहैब सिवाइ मुनी कलहा तलन पके काइ दू गोटा डीबेदार के देल गेल रैकि Estimate committee of Bihar क अदुसर Associated Engineering corporation जे कि मिशा सोहैबक माइ कलहा नारायण मिश्रक डिगनि तकरा 'सिबिल वर्क' छैल (१५७,५०० स्वामर कीर) ६१,८३८ देल गेलक बलन कि दू गो आन डीबेदार के २,१४,५०० स्वामर पर कीटक देल मात्र १३,१६८ देल गेलक।

## अजगुत-अनटोरल

• घोटाळा शिलारमणि बिहारक मुख्य मंत्री डा० जगन्नाथ (मेथोनाथ) मिश्र के पश्चिम बंगालक जुगल अभिमान मे देखि लोक के छगुता लागब स्वाभाविक के।

स्वाभाविक एहि दुआरे के जगन्नाथ बाबू पर दलनो घोटाळाक आरोप छनि, जुगल कोर्ट भरि बेल हुनकर पर पड़ि लि गेल अछ आ एहि तरहक बलनः अन्य व्यक्ति उपस्थिति अथवा भाषण सँ लोक के काबि त प्रति आकर्षण बढ़तैक त एहि सँ पैघ अल-गुल अपर की भ कलैक। एखन लोक-उप-साधारण लोक सोझनतिया होइए, ओ दुनु बिषयक तह तक नहि जाइए नहि जाय चाहेइ। पञ्च जे दू-चारि प्रतिगत लोक हन बिषय के कोइसा छोड़कर देखल अगामी अछ—से एकरो तहिला देखलक आ त ओकरा सँ निवारिया बात सुकाल रहब केना कातक ? ई, ओकरा लोकनि के अनटोरल अवलै लगलक।

समिति अदुसर सँ सँ नेही *Shareholders* मिशा विभाग मे भेलनि।

७) व्यवस्था—१५००० जनता कया क छेल मिशा सोहैब प्रति इ बिचार १०० टाका मलने छलथिन। प्रत्येक बढी पर कएके तलनी छलैक। स्वयं Engineers Association से ही एहि रूप के स्वीकार केलक।

८) कूड़ी ठगुरक मुख्य मंत्रीकाल मे ६००० Assit. Engineer के पर इ बिचारि कल छल गेल छल, १६७८ क बैकार इ बिचारक आन्दोलनक फलस्वरूप, दु नव बाइ मिशा सोहैब लोक सेवा आयोग द्वारा विवाधि देलथिन जे उपरोक्त सम अभिमत के पर सँ आवेदन करप पड़तनि। शुल भेल पर आन्दोलन आन्दोलनकारी अभिमत ओकनि बलन मुलमंथी सँ मेट करै चाहथनि त मिशा सोहैब अनन Personal Assit के पर देलथिन जे अभिमत ओकनि के २५ लाख देली दुनु तलनी के मेट करै छैल कर्नाटन। यही मिशा सोहैब के मेटि गेलनि आ ओकर सेवा आपोपक स्थिति सटाइ मे पड़ि गेल।

९) मिशा सोहैब के कइ सेहला छलनि जे हुनक बेटी के बी० ए० (Eco. Hous) मे फल कल पल भेटनि। एहि लेल ओ पटना वि० विद्यालय मे मॉस्टरेस बहाली करलथिन। एखन कमार संग नहि देखलनि। मॉस्टरेडिंग बोर्डक अध्यक्ष डा० केदनाथ प्रसाद प्रतिवाद स्वरूप इलीफा दप देलथिन आ छात्र आन्दोलन मइच्छ। बहुते छात्र हलति मे पल आ अन्ततः हुनका बेटी के दोल स्थान प्राप्त भेलनि। ओना शिक्षक लोकनिक श्रुतन हुनक बेटी दोलनो भेनी पैबाक योग्यता नहि लेलै।

१०) आ सब सँ प्रधान अद पटना आसन को-ओरेटिव बैंकक घोटाळा बाइ मे ३५ लाख गन कयाक आरोप मिशा सोहैब पर छनि। एकर मागिका सुगम कोर्ट तक पहुँचि गेल अछ—देला चाही की होइए।

साधनामिक राजनीति कला मे अजगुत बाबू शीर्षक छथि। तत १३ मई के रात्रीक रोमन कैथोलिक चर्च पड़ि विषयक समझ ठेगुनिया रेखाक घटना टर्क उवाहण अछ। एखन हुनक कलकता आगमन निमित्त रोमन कैथोलिक समुदाय के प्रभावित करवाक उद्येश सँ नहि भेल छल। ओना सामुदायिक सम्बन्धनाक जेहन छल आ मुहद प्रभारा बंगालक खेद—तेला अदिक आनगमन होल। ई निबिदार जे एहि सम्बन्धना के नष्ट करवा मे राज-नेतिक दलक भूमिका प्रधान रहलक-ए आ गल्ल मे अगिल्ल एल-ए काबि स। एखन एहिदाम ओकर गोटी आइधरि उचाटिइ रहलैक। लेवे होउक, दुदा कलकति रजनाहर नव बिदक हारि मानि लेल ?

केन्द्रीय उर्जा मंत्री भीमल ए० बी० ए० मनी खान चौधरी महाराष्ट्र एतौ लोक मे सँ छथि, स्वभावतः हुनका कागज बाबू सन कुलाल लोकक प्रभावन पड़लनि। एहि दुआरे जे सक्कल मे बिचारी भा उपर प्ररोकक बहुत राख प्रलम्बन अछ। भाषा के बर्ण-संस्थाक संग शीघ्र 'दल प्रतिदल मुलमान क भाषा उठ' के बिचारक दोहर राजनाथ आ अश्विनि-अन्वर्धित बर्नन लोकक बीच तल जगमिता कलाय बाबू अबलै हलल केने छथि आ तकरे काज मे आवाय बाइ-लनि चौधरी मोचाय। स्वभावतः कागज बाबू के बीछि-बीछि के ओरी अंचल मे क बाएल गेल बाइ ठाम तथा कथित उठ-भा-बीक संस्था बेसी छैक। कागज बाबू बेसी उठ मे (१) भाषण केलनि। किन्तु चौधरी मोचायक कयाइ कइल छथि—तेयो चाल नाहल बिल।

कलकताक मैथिलीभाषीक लेल अल-गुल क एठ सँ पैघ कारण भेलैक दोहरे मैथिली आभारक 'जनमानस्य कपोहद सेनानी' भी बाबू सोहैब चौधरी के हलति मे दुल्लनि दू गोटा चाटै हलकउठेन, छलन नन सार आ अन्वयोर चारि गोटा हुनक के ड क दौड़बाइ समन हवाई अड्डा पर माका पहिरा एकरा कालाय बाबू के पता मे ओ केना बिचारि गेलाह जे ई उधर व्यक्ति छथि जे मैथिलीक बिलाय लेल उठ के दोल राजभाषा बनओलनि आ भाई भाइ मे भ्रमारा बलओलनि। ई उधर व्यक्ति छथि जनिक लठै ६ दिवस १६८० के पटनाक राजवध पर मैथिली सेनानी के काज-कार भाइ देखल बाइ मे भी चौधरी सेहो रूचि भनहि बाट नहि छलक होनि ओतने नहि सगनाय बाबू आन्दोलनकारी मिश्रका लल लोकनि के आ० ए० ए० ए० कइ बलन करै सँ लेल सब नहि एलए। भी बाबू सोहैब चौधरी स्वयं आइएरि कालाय बाबू के मिश्रका मैथिली निगोरी कइ सलन ओकरा केत काबि रहल छल जे बात ओ रातारानी केना बिचारि गेलए ?

ओना लोक बलय-सलय बलत सुलल बाइल जे चौधरी बी बूढ़ भेने दुरि गेलए,

मलिया बाइल छथि। किन्तु लोकक रूप छैक जे हुनरपुर् बाटी प० देनारणन भ।

चौधरी भी सँ मैथिली आन्दोलन मे गल्ल रहितौ अपना गाम मे दुखमंथीक सुभाओन कला दिनक प्रियारा बनि गेल-छथि आ निम्न भविष्य मे बिमान-परिवहनक सदस्या काम करै बला छथि। तौ चौधरी बी हुनका 'ओकर टेक' कला लेल ई चालि कलहा-ए। ई त भविष्ये करत जे गोटी रहिते किनकर लाल होइत छथि परन्तु मैथिली के दम पर बहुओनाइ लोक के अगोहाइत अवलै लात छल। कपोहद जनि भनहि बेसी किन्तु ओकर नहि बाबू-ओ-दुरा नहि कइ पउव एतेहार त कहिते छथि ई नहि उचित बिचार।

• उठ जनताक गलत के नुल दमा, मुलक लेल नुलक लखर कलने छथि। इमारा बिस्वस अछ जे बओ अइ बीबल रहितथि आ भारतीय गणतन्त्रक बेरा देखितथि त निश्चित अस निचारी मे एतेड मेट क ओकरा एता कहितथि मुलक सरकार मुल द्वारा १२०८ लेल। विषयक महान गणतन्त्र भारतक विभिन्न प्रदेश मे पश्चिम बंगाल सम तहें भांगू मानल जाइए। एहीठामक केनिग अंचलक एतौ मतदात्री गल १६ माल के प्रवाहिंग अन्तर छा बा जे मुहल छथिन—सदरक कपोहद बाबू अभिनव त होइत अन्तर प्रति प्रन केलाथि—सदरक। सदाबिड की हरे ? मरिबा—अन आधार लेले जे मोल्लो साइकिले छाप दिते ?

एही केन्द्र पर एतौ दोहर हुदा मोहर आ मतमक छ क बलन कटा सँ बेल पर मे पड़ल लोह त ओ बिचारि गेलीह जे छाप हुन चोह पर लोवाक छथि। अनन केना के मोर पालनि शंकर। ओ शंकर !! अधिकारी बीच मे दलक देलथिन—कने डाकलेन ? मरिबा केने ? आनार लेले शंकर के कोपाय जे छाप दिते बल्लो दुरबा नेलम.....

ई त नाथ नटना रिज। एता मे एतन कतेको मतदाता एहि बेरो मे छथि जनिक लोकनिक मत पर बीटि कलकति-निधि शालन करैत छथि।

••• पश्चिमी देशक कतेको पश्चिमी मे भारतीयक विधान छपल—रुनक अवतार म गेल। हुनक नव नाम छनि—मैरेम लाम्पी। एहि मे आगा कइल गेलए जे ओ एखन गुल छथि आ मात्र हुनक किन्तु विषय ई बात बनए। पञ्च दू मासक भीरौ ओ अपन परिवय प्रकाशित करताह आ टेडीबलन सँ बिस्वक सनस होक संग-कल जे नारा छैक तही नारा मे प-एन कलए।

एहि सन्कय मे दिन्ही बलनकारी लेल कतेको पता देल गेलए बाइर सनक स्थिति कर लेल कइल गेलए। एहि मे सँ एक अइ सीपा मत, ५६, बाममाउप पार्क रोड, लंडन।

अइसी हुन बलाय छैक जे बीब स की ने देखब।

—उजित वरु।







## मेथिली

सहिली

वाणिज्यिक-सांस्कृतिक विकासक आधार आ  
से भाषाक बिना संभव नहि । साहित्यक  
बिना चेतनाक विकास असंभव आ अचेतनाक  
बोझ सँ ऊपर संघर्ष वा आन्दोलन संभव  
नहि भ सकैत । एहि सम्बन्ध से माओ  
के दुगु कहै छथि—चतना के बिनु बरा-  
आते आन्दोलन बिना एदमेकर छोड़ि आर  
छेड़ नहि फिक्—आ चतना के बिना  
छेड़ ओकरा अमल अल अभ्यास छेड़ ओकरे  
माओ से सद्योमत करन अनिवार्य । संस्कृति  
नव फल ओ अमल सब कही छथि  
“अन्तरुत्थान” नामक एगो दल किछ  
के होला ऐतदुत किछ दुनू के मत बिन  
नहि भ सकैत ।

राष्ट्रिय आन्दोलन का संगीत स्वांगिका-  
शक आधार । इस व्याख्या करते

दक किया स समय रूपे डुल अह । आ  
नाथ मनुष्यसक उलावके किया स ननि ।  
ओकरा जिनगीक सम् शेक्स समस्त किया,  
उलावन सं क निर्माणक चम पयाय तक ।  
ब्रह्म खान दिक वे समाजवादी देश सम्  
न

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

कवच-५००३३ क लेख श्री मदन भट्टाचार्य  
कवच-५००३३ क लेख श्री मदन भट्टाचार्य

## मेथिली

सहिली

वाणिज्यिक-सांस्कृतिक विकासक आधार आ  
से भाषाक बिना संभव नहि । साहित्यक  
बिना चेतनाक विकास असंभव आ अचेतनाक  
बोझ सँ ऊपर संघर्ष वा आन्दोलन संभव  
नहि भ सकैत । एहि सम्बन्ध से माओ  
के दुगु कहै छथि—चतना के बिनु बरा-  
आते आन्दोलन बिना एदमेकर छोड़ि आर  
छेड़ नहि फिक्—आ चतना के बिना  
छेड़ ओकरा अमल आ अभ्यास छेड़ ओकरे  
माओ से सद्योमत करन अनिवार्य । संस्कृति  
नव फल ओ अमल सब कही छथि  
“मनोवृत्त सेनाएक नौका सम एक बिग  
के बोन सेनाएक कर्तुं दुन के नर बिन  
नहि भ सकैत”

राष्ट्रीय आकषक भार संगीत स्वर्णिग विक-  
राक आधार । भर । एक व्याख्या करत  
वाचिन् कहै छथि—भाषा मन्त्रक उदा-

दक किया स समय रूप डुल अह । आ  
नाम मनुष्यवश उपादक किया स नवि  
मोक्ष विनीतकी सम क्षेत्र समस्त किया,  
उपादान स क निर्गुण चम पयाय तक  
ब्रह्म कर्म दिक वे समाजवादी देश सम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

[illegible][illegible]

अशांनदय प्रकाशन, ३३४, डा० देवदारु रूमा न रोड, कलकत्ता-७०००३३ के लेख श्री मोक्षदा भा. डा. (१)

प्रेसिडेंट बयना

जनताक खून पसेनाक हमार ओकरे कंठ  
मोखाक लेख खूब होत रहल । मैथिलीक  
इगढ़ि नैपाही राजस्थानी कोकणी, टोनाई,  
वंगुली आदि कतेको भाषा रहि साम्राज्य-  
वादक प्रभाव थिकार मेमे आ एहि स मुक्ति  
लेख, अमन अस्तित्व धरार्थ संघर्षत आइ ।  
ते आइ प्रत्येक चेतन वर्गक या विशेष क

समस्त भाषाक-मुक्ति

संपन्न के लच्छे सख्त कर्मात्क सम संपन्न  
प्राप्त कर्य—उम भाषाक प्रतिनिधि ह क  
सुखी-मीन-ह निम्ना रूप अत्यन्त सुनि  
की मुता हक सचरित-उल्लङ्घन ह  
आने पद, कयः खुबि नैकर नके

—  
अभिलेख  
१८७५

6461 Win  
Keller

चैत कथोरी रयना  
सबहुक पकहि  
सुम जपने केजो  
नाथक

दोर-पैप कई भाग में  
 काटे और सुखाने दो  
 सुखाने दो

एह माष कँ कयटा सत्तवि  
 केजो गोरे केजो  
 केजो पटुवा ने  
 केजो मरु  
 माषक

मैथिली पोथीवि  
नेपाल सं प्रकाशित  
संपादक :—राम भा  
सरस्वती छदत, काकपुर (धामा  
मिथिला  
सम्पादक : द  
१९४६, जलेश्वर कोठे)

—: 22 00 00 —

205



● जय मैथिली



















## समा-समिति

विद्यार्थि फ़ंज़ गिरिधर, किरीड, मेधावर्द्धन क तत्त्वबोधन में अष्टि "द्व" क व्यतिरिक्त में विद्यार्थि स्तुति एवं धर्म-धाम एवं भावार्थ के । कार्यक्रम आरम्भ कुमारी मुक्ती, कुमारी रीता, कुमारी मधु, कुमारी माया तथा कुमारी वैरी क "अनन्य भक्ति मंगलाचरण एवं मेख । मंगलाचरण प्रस्तुतीकरण श्रीमती इन्दु प्रसाद द्वारा मेला ।

निर्मातृविक्रम व्यक्ति विद्यार्थिक चित्र पर अक्षरोंक मास्पाण कल्पित ।

(१) सर्व श्री बी. डी. सिंह (महा-प्रबन्धक किरीड)

(२) हर. के. दास (चीप सुप्रीन्टेन्डेंट, शुभा माहल)

(३) हर. डी. चौधरी (कार्यकारी महाप्रबन्धक मेधावर्द्धन)

(४) के. डब. भतीन (उपाध्यक्ष स्पोर्ट्स एवं रिक्रियेशन काउन्सिल मेधावर्द्धन)

(५) यू. के. प्रताप (अध्यक्ष विद्यार्थि कक्षा गिरिधर)

हरि अक्षर पर स्वागतार्थक श्री डी. एच. सिंह उपस्थित कार्यक्रम उपस्थित वन सुधारक स्थापित करत वल्लभ से कवि कोमल एक महान विभूति उद्घाटन । विद्यार्थिक अक्षरोंक हुन कल्प प्रतिभाक कारणें सम्पूर्ण देश में मेख । बंगाल, आराम आ टाईल त प्रत्यक्ष रूप प्रभावित अछि । बंगाल के प्रभावित अछि जे हल बारी लोक विद्यार्थि के बंगाली बुद्धि उद्घाटन । तकर कारण ई छल के विद्यार्थिक गीत के प्रचारित भवना में महाप्रबन्ध चेतन्य वन व्यक्तिक योगदान छल । ओ हरो वल्लभ जे बलन हम विद्यार्थिक गीतक गीतक तुलना करवक गीत सं करत छी तऽ विद्यार्थिक गीत बेसी सुल आ सय्य दुमाहत अछि । समाज अभ्युदय करत श्री बी. डी. सिंह (महाप्रबन्धक किरीड) वल्लभ जे विद्यार्थि एक महान आत्मा छल आ हुनक व्यक्तित्व जाति आ सभ्यता विहीन छल । विद्यार्थि अनन्य रचनात्मक प्रवृत्तिक कारणे कोनो साध लेवक नहि छल । विद्यार्थि पर सम्पूर्ण देशवर्ती के समान रूप सं गल. जति । प्रवृत्तताक बात के विद्यार्थि कलापरिषद द्वारा आयोजित ई पर्व जाति आ सभ्यता विहीन अछि । आगत अतिथि के वर्यवाद देत संस्थाक अध्यक्ष श्री यू. के. प्रताप (अध्यक्ष संस्थाकारित किरीड) अनन्य उद्गार व्यक्त कयजति के स्तुति एवंक आयोजन में प्रत्यक्ष अपना प्रवेश रूप के व्यक्ति वा के संस्था सभ्यता देखित । तिनका सम के ई संस्था वर्यवाद देत अछि । हरि अक्षर पर ओ अप्रमद करत वल्लभ जे हरिना सभ्यता वनत रह्य ।

हरि अक्षर पर स्पोर्ट्स एवं रिक्रियेशन काउन्सिल मेधावर्द्धन के विशेष सदस्योके हेतु विशेष रूपे धन्यवाद देत मेख । संस्थाक वित्त सं श्री. डी. आर. सिंह, श्री. डी. आर. शाहा श्री ए. धर्म. महाधायी, अरुणोदय प्रकाशन ३३/५, डा० देवदत्त रामान रोड, फलकता-७०००३३ क छल श्री महेन्द्र आ द्वारा प्रकाशित तथा पाथियार अरु पिट्ट ३२बी. वृन्दावन वेश्याल ह्रीक, कलकता-५ के सुगित । सभापद—भी कर्मान

श्री एच. के. तपस्वी, श्री बी. के. छाहिरी तथा श्रीमती डी. अपापाव के सहाय्यो सहयोग हेतु धन्यवाद देत मेख ।

अनन्य सहाय्यो कमेठ व्यक्तिक वनिक परिश्रम ई आयोजन सफल मेख स्वर्ग नहि करत वनभवा होत ।

संस्थाक महा धाचि श्री एच. आ. पी. सिंह, महर्षि आत्म (उपाध्यक्ष के. पी. दास (सदस्य) श्री. डी. मंडल, सदस्य डा० डी. डी. मिश्र, सत्येन्द्र आ. डी. डे, अनिल आ. उद्योग आ. सहाय वि. उमोहन आ. आर. पाठक, दिगम्बर ठाकुर विनोद आ. सहाय आ. रंगाराम आ. के. डी. तिरिया, डी. चोकी आ. डी. दास, बन्ना सिंह, अशोक कुमार आ. एच. के. आ. डी. के. वि. यू. एल. आ. एच. के. चौधरी आदिक सहयोग आ परिश्रम के नकार नहि जा सकत अछि ।

—सुप्रीन्डेंट श्री

## बाबू मोला लाल दास स्मृति समारोह

विगत १ दश के साहित्य संस्कृति कला मंच कौचिकीक तलाकधान में एम. डब. एकेडमी व्हेरिया सहायक परिसर में मेथिली दक्षिण बाबू मोला लाल दास बीक पुण्य स्मृति में एक मध्य समारोहक आयोजन मेथ । समारोहक प्रारम्भ भावती वन्दना, गीतकार नवल द्वारा मिथिलाकान आ श्रीमान्द रेणुक स्थापित भाषण सं मेख । डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणिराम क संगठन पतिल में सम्मन अर्द्धाधिक कार्यक्रमक उद्घाटन करत श्री बाबू मोला चौधरी मैथिलीक विकास में बाबू मोला लाल दास बीक योगदानक चर्चा करत मैथिलीक वर्तमान दुःस्थितिक दिस उपस्थित अतिथक आन आयोजित करौजति । मुख्य अतिथि नाराय चौधरी मिथिलाक स्वर्गीय विकास के छेह सम्पूर्ण मिथिलावासीक एकजुटता के बाबू मोला लाल दास बीक प्रति वार्त्ताक अर्द्धाधिक वार्त्ताक, मुख्य अतिथि दरनागा विद्या उद्घोष केन्द्रक महाप्रबन्धक श्री रामेश्वर पाठक मिथिलाक प्रति अनन्य आराम प्रेमक प्रदर्शन करत मिथिलाक सांस्कृतिक महत्ताक गुणगान केजति । बाबू मोला लाल दासकी सुलुप श्री बालीदास प्रसाद कर्मा द्वारा अर्द्धाधिक कार्यक्रमक उपरान्त अनन्य अध्यक्षीय भाषण में श्री मणिराम दासकीक व्यक्तित्व एवं कर्त्तव्य पर विचार सं चर्चा करत सम्पूर्ण मिथिलाक बागमलक आह्वान-केजति ।

अर्द्धाधिक कार्यक्रमक उपरान्त श्री मणिरामक अध्यक्षता में सम्मन कवि सम्मेलन में भाग केनिहार प्रमुख कवि उल्लास श्री प्रदीप मैथिली पुत्र, निरिधिर शिवान्त पाठक गीतकार नवल, चन्द्रशर्मा, जीतेन्द्र सिंह, कानेश दीपक । हरि अक्षर पर एक मध्य सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन वन सेहो छल । समारोहक समापन श्री सुप्रीन्डेंट प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा धन्यवाद आन सं मेख ।

—सभापदक रेणु

## बाया-अचि

जेना कि सात मेख अरु निर्याल फलसु, दरदरा एवं वन्यभक्षक जैत में 'मिथिली भाषा' नामे मैथिली लिपिना बनि रहल गइल जे अक्षर ८२ बरि लेख्य म आगत । एकर निर्माता छथि श्री पुरुषोत्तम मोहरी । एम. सत्येन्द्रक कथा पर बनि रहल एहि फिल्मक सहाय एवं गीत रचना केजतिहो प्रो. श्री लोमोदेव । संगीत श्री गीतग आर एवं श्री एल.एस. सिन्हाजीक छति आ निर्देशन श्री मेहुल कुमार क । कलाकार जेजति में अरुणा इरान, 'नगर' कुमार, एच.एस. दुबे, हस्तता विजय, देवयानी ठाकुर मास्टर विदू आदि छथि । गायक-गायिका छथि—मोहम्मद अली, अरुणा यासी ओ चन्द्राणी मुखर्जी । फिल्म सम्पूर्ण रंगीन २५ एम.एम में बनि रहल ।

मैथिली में केनेके फिल्म कलाक चर्चा वहा-कहा इमरा लोकनि सुनेत आलख छी, किन्तु त बाबा-बिबा आ विष्णु सम्पूर्ण बनि के तेवारी मेख परस्य दुर्मिथिक बात जे दर्शनक बरि आरधारी नहि पहुँचि सकल । 'क्यादा' मैथिलीक नाम पर स्मरि कले पाइ किस्मक ने गीत हो, परस्य ओ के मैथिली फिल्म नहि छल से मानवा मे किनको दुविधा नहि होएछति । 'भमता गायन गीत' क 'रिडीब' होलाक वोटदा सम

## चिड़ी-पुरजी

देखिछ नयना! खूब नीक बहार मऽ रहल अछि । खूब स्वस्थ । मिथिला-विभूति परितयमाछा बह आलसक छल छापब कम नय नहि कर । कनेक जेन देत छी तलन अनन्य रचना फापब । —सौन्दर्य

दूर अक्षक समारोहक दृष्टि विचारो-सेजक—दुर्गा मैथिलीक 'साहित्यिक' लोक-निक लेख नहि । 'गम सं दूर मिथिलाक मकल' ओ 'मिथिला-विभूति' सम्म के अखन पाठक लोकनि जे महल दोष, इरा एकर छी मूल्यांकन होएत भविष्य में । ओना ई बात जे खल पूछी तऽ एहि परि-केन्द्रक सम्बन्ध में कहल जा सकैत अछि । 'बालीदा' आरधारी जे प्रकाशित मेख अछि तकर कले प्रशंसा करी चाँह होएत । ओ हरिना 'बालकला' सेहो नहि देखल जा सकैत

ठाम-अक्षर मेख परस्य 'रिडीब' नहि म सकल—यता ने कि अक्षर छेक । हरिना 'छलाक पाना' क चर्चा छल—एडव. योकोर कोनो निरुद्धी नहि सात होएत अइ । एहना स्थिति में जे 'मिथिली भाषा'क सहाय पर लोक विवशता करत तकर दूर टीक । पाठक इमरा लोकनि के साइ एच सं सम्बन्ध प्राप्त मेख, मरोर अक्षर अइ जे ई दृष्टिक बरि पहुँचि सकल आ कनेक कलाक स्थिति पर व्यक्तिक नहि करत । मैथिली लिपिमाक छेह न्ह नीक 'कला' छेक परस्य बाबरी हल गीत 'रिडीब' नहि होएत साधने निर्माण ठाकन के विवशता केन होतिनि । ते जे ओ लोकनि हरि क्षेत्र में परितय करना सं बलाइत छथि त अछि नहि, परस्य ई बरि निर्विकार जे हल गीत फिल्मक परचाले निर्माता लोक-निक 'कला'क सांगि आगत ।

आहुक युग मे फिल्मक भी माल छेक से कहलाक प्रभाव नहि । अशा कतेक छी जे 'मिथिली भाषा'क मैथिली फिल्म में गीत-रोक स्थिति के टाँकट आ निर्देशकक हेराकट-मुक्तिमाख प्रतिभा के अक्षरक मे आरबाक अवसर मेखक ।

—एडव.एस. लोम

अछि ? चर्चित अक्ष मे जोवन कविताक आभाव कइ सकल । 'मिथिली' आ 'छलाक' बुनकल विट्ठली' पढ़ि करल जेना राधा बाबू दुनु ठाम विराजमान होथि । ओना एम मानत छी जे 'मिथिली' रूपक आराम निश्चित वेव छेक । 'भात' (अ) इमजेन्सी के मीन पाढ़ि देखल । बेसी नहि 'छेह' एतवे छी जे एकर सम रचना माल्युन भेजि आ सम रचनाकार फ्रेंडली छथि । एना 'मैथिलीय मित्र फ्रण्ड' नहि रहल—एकर कोनो उपयोजिता नहि । मैथिली मे एकरा कोनो कलाक छेक—बकरा छेह चोरी करी सेह कस्य चोर—से तकरे पर अपनो लोकनिक होथ ।

—विष्णुदेव भा

कइ लोचन कविताय

लाठी जकर महिस तकरे हड के नहि जानय भनहि नास गणतंत्रक त बलोगी ठानय त बलोगी ठानय ससिपुहु आन न नेता लाठीक बलपर जेत कहलाय वोट विजेता । कइ लोचन कविताय सत्य-शिव-सुन्दर लाठी गण-भक्षक तंत्रक रक्षक गणतंत्रक लाठी







## याज्ञवल्क्य

प्राचीन ग्रन्थमय में बहिर मुनिक चर्च सार्वभौमिक अर्थ से आगे कैओ नहि निमिषिका सन्तान वीर्योत्तर याज्ञवल्क्य छै। खलवी भाषाक महाकाव्य गोशाली दुषडीदस भयन रामचरित मानस में सेहो दिनक चर्च कहने छै—याज्ञवल्क्य मुनि परम विवेकी, भावदायक राहु पट्टेकी।

ई जे केहन पेश तबालनी छलाह ताहि सभसब से उद्वारण्य कोपनिषद में कहल गेलब जे पद खेर वेदेह जनक आश्वमेध यज्ञ कइबनि बार में विभिन्न देशक ब्राह्मण सभ इच्छा मेलाह। दिनका लोकनि में विशिष्ट व्यवस्थानी के छैनि से जनबाह निमित्त ओ एक हजार शाय कर बा। देखबनि बा वोला कयना देखबनि जे जे बिशिष्ट नवरातनी होबि से सभ गाय ब्रह्मपु। परदेसी कोनो रंडिल के बचन शरस नहि देखनि तबन याज्ञवल्क्य भयन शिष्य रामभवा के गाय सभ हाकि क खेवाक बला देखबनि। गाय सभ इहंजे परदेसी विद्वान कोकनि तमसा गेलाह या छुट भेल बाधायन। विषयी सेवाह इहए निमिषिका सन्तान शोरीषर याज्ञवल्क्य आ पराशरि प्रदेसी रंडिल अगना सन प्रहंज क आपन मेलाह। ताहि दिन वं ओह राबवेराक ई कुम्हार मेलाह। कइवाक पर्यो जन नहि जे ओह बंधाक राभा लोकनि के ओहन नवरातनी होइत गेलाह से दिनकहि प्रसादे।

याज्ञवल्क्य देवताक पुत्र छलाह। दिनक सभसक सभसब से पछनहुँ विद्वान लोकनि से सतान्तर अछि तथापि ओहकाय विद्वानक मतों ई ३०० ई०क पूर्वहि मेक छलाह।

दिनका सभसब से जे बात समर्थ वेदी फिछाएल अर से ई जे ई निमिषिकाक कहल—मैबिक छलाह। एहिठाम ई बिबल सारिक सभसब नहि होइत जे मैबिक पालन उदाहीनताक भाग्य ऐनको विधूति पछनहुँ होयल छैनि या आन देवक लोक हुनका आपनोनाक निमित्त माणण चेष्टा कइब। कविपति विद्वानति पर देसनिबरी गंगोत्री कोकनि दाबी करत छलाह आ गोवीन्द हास के त अकहुँ अपनभोगि छैनि। काबिल के उल्लेख करल जाए। उदयनाचार्य के गंगोत्री बरल जात छल। पिछुद दिन पतिने एगो निवदन पढ़ैत रही बार में कुमारिक भट्ट के तमिक किल्ल गेलब। पंडव याज्ञवल्क्य उगा हरि तरकक विवाह नहि मेक तकर प्रभान कारण जे रंडिता से हाथ किल्लक अर—‘निमिषिकाया व योनीकः’। निमिषिका तल निमिषिक अमुगार अमुना नेवाल मे बनुलकना हुनुना राम से याज्ञवल्क्य मुनिक आश्रम अर।

कइल जाएल जे याज्ञवल्क्य वैशाखमय मुनिक विषय छलाह पंडव राहु वं छपट म खेनाक कारण हुनका स पदक सभसब विद्या के ओ स्तुति-देक। एही स प्रमाणित होइल जे निमिषिकाक सन्तान देवन आमाया-निमानी होइत छलाह। एकर बाद ओ सर्वक उपलब्धा कइ शुकभयखुदे प्राप्त कइ-बनि आ पंचवत शकवत्सस्पृति, योगी

इष्टर भास-बाप !

जे कहन सच-सच कहन, सच छोड़ि बिछु नहि कइब। कइयक सचत ह्य क करे छी। ओना ई बात नियम मेक जे हमर सच मान हमरौटा ही आ हमर के ओह स कोनोटा सरोकार नहि हो। अलख मे सच छर की तहरो व आहुरि निखुरी नहि न सचक-इ। जे भाँखि वं देखे छी जे सच बिक-इ। जे कोर वं छै छी से सच बिक ? जे अठुभल कर छी से सच बिक आकि दियमा बक्या ठचित बुनैइ से ? तँ हएल, सच की छर से इच्छा नहि बन छी। एखेरा बन छी जे जे आछि वं देखल, काय वं सुनल आ हएय वं दठुभल कर-—छरइ कर-। राख गय दियमाक त से इच्छा, पेट नामक सचक हरि खोपड़ी मे निताम अपाव छर। तँ हरि अपाव के भानवत देक गबयी के अपन कंठ वं उतारि छी वा भाषक उतर वं छरि बाप दियेक—बंदा खरा मरौक आमायी रहत।

पाठकक इच्छाल से कोनो लेखकक हाथि रेत्यार पल्लवारिक चारपर चढब सन छर, सीताक अग्रिम पीछा सन आ विशेष कर ओकरा छेक जे कहिना छितैत हो। आर अपने त बनिछे छी जे कवि वं बेकार यदि देश मे यदो के ने नुसल बाइ छर। हएल, मरौता तँयो काबक होइए जे घर वं पाट आ बाट वं बर चरि कोवीक कइना बोइए, किन्तु मोर कवि के की कहल बाइ जे ने त पाक अर ने बाटक। ओना हर देश मे किछु कोर अरसे छैनि जे यद-करा कहियो के रू आहुक वास जोगारि देत छैनि। परजब हरन लोक आ हरन कवि छिबैर करैक।

किछु कवि के हाथ रंगय अकवा सभर पाठ करैक बीछम कइयोकाठ रू-चारि कइवा भेटि बाइत छनि, अकवा भठ होइक फिलिमबला सभके जे कोनो कविक पुकन्दीपर वाइ वाइ क दैत छर किन्तु ताहुठाम कविक कपारे काब करल बा गोटी खुशोरसना बात कहि सकै छी। जे ने त

मान्यता गंगाक आ आसाम छोड़ि समस्त भारतीय-आयक्य मे छैक। गंगाक आ अखन मे बीरदवाहनक ‘दयामाग’ लीकृत अर। एही आसामक अखार संप्रभन पौनिक सभ्यति से विचवा स्त्रीक दिखल लीकृत भेलैर। मोघे नहि हरि आसामक अखुहार मुनिहारक कोनो वेदी कुमारि होइक तकर विवाहादिक खं जेक सभ्यति फराक क देवाक छेरी विवात छैक आ बंजक सभ्यतिबक विमानन वेदा लोकनिक नीच होइत।

दास विषयक सर्वधिक क्रम मे याज्ञवल्क्य स्मृति सभस पंच दानक रूप मे छान-दान के निकल्पि कहैत अर। विद्वान लोकनिक मते याज्ञवल्क्यस्मृति भाषा के देखैत गुप्तकाल मे—बक्या कि साहित्य-कला विचारक सभ्ययुग कहल जाएल लक्ष्मीक मान्यता प्राप्त छैक आ एही प्रथक आचारपर सभस राबकाक चल्त छल जेना कि नौर्यकालीन शासनक आचार कोटिलक सभ्यशास्त्र छल।

—सुजता अली

## लेखा-जोखा (१)

आँखिक लोक मे त निराशा, मुक्तिनोब आ कदोक ने नामो गिरामी कवि या स बलाह म गेलाह या बिनु औषध-चारीक चिक देखनि। ई बात साराक बिक जे मुहकाक बार हुनको लोकनिक छेक बकबटा होक सना म भाइए।

इहए, हम हुनके लोकनिक कामदानक हरगो कहि छी। कतौ गोटी नहि दुरातक आ जे कपारेक कोरग छी—तँ केओ बायो नहि ओगारबक। पहिने हरि नाटक कचोटो दुआह जे केओ फिद ने सुँडैर ? परंच जेना जेना सभय विनित गेछ, दुइर डेहान बगौत गेछ। मते हएर हमरा त कोनो तर ठेकान नहि मेरल घुरा उड़िबारी ठेकान छाति गेछ। मेले हवा कि शुरू-शुरू मे बखन कि हम नवे हरि शर-आइल रही, हमरा मन मे कहिनाक सहर उमरि पड़ब छल आ हम ओर मे दुबली-मारि मोटी बहार क क लोक के देखि-नियेक आ बक्या मे वाइ-काहीक स्तन पनितहुँ। ओना हम बाइ-वाही चारैत नहि रहि। चारैत रही जे काइ सभासक होइ हम कहिना छिले छी, हएर सगँ सभ सेरो ओर मे भास किअइ। हमरा सभक कि हएल, मोइये दिन मे हमरा सभके नेताक पता लागि गेल। ओकरा सभके कहिना स कम अकना नाम वं वेदी विनैर छेक। ओ सभ कोनो मर्यापर अपन नाम छामोनाइ आ सपरिति केनाइ मे अभिलखि रहल छल। एक दिश त ओ सभ लोकक हुल दई क संपर्कक बात कर छल त दोहर दिश ओकरा लोकनिक सभ सभय दुबिबा नटेरसा मे नीति बाइत छलै।

हएल, हम वेदी पढ़त-लिखत नहि छी। किन्तु जेना मे हम लो पेश कोर के पढ़ैत छी ताह वं हते अरसे उल्लेख जे किन्तु निछाक बिनारी मे किछु पयोनाइ असंभव। परंच जेना-जेना मनस होइत गेलहुँ—रेलबहुँ कि जे हेमो किछु हाकिम देखनिहै ताह मे हुनका लोकनिक लोक-बोइ, गोटी सुगारनाइ वेदी छलनि।

इहए, हम माने छी जे आहुग युग अवशोक युग नहि बिक। हम हरो माने छी जे सच, ईसापूर्वारी आ मानवीय मूल्य भावनेसन अगोचर छर। बाहुक युगक सभ ओकर कोनोटा सभसब सरोकार नहि। हमरा हरो दुभेक अर जे कोर उगीय बय के नयसकार करै। जे बिनार म भाइए। बक्या कुली भेटि बाइ छर, बक्या कोनो ममाण-पत्र बा पुरस्कार भेटि बाइ छर—तेहरे सभसभ मान्यता भेटैत छैक। किन्तु हरो कि हरिठाम सभ सयोग प्रभान छर इहए, चाणक्य बात छर सभ।

अहाँ सोचैर होयब हएल जे कि हएरा कलहु बानस नहि मेरल—तँ हम हटा करि रहल छी। रू हएल, हएरम सच छर जे हमरा कलहु कोनो बानस नहि मेरल आ भरिलक मेरयो नहि नहि। किन्तु इहए, एक बात पुछू, आपने बनाव देव ? की यही छेक हम अपन नाट छोड़ि दी जे सभ भोतिया गेब अर ?

✽



लाल बुभुक्करक चिट्ठी

श्रीमान् उम्पादक नौ महोदय !

नमश्कार सह नय मेधिनी ।

अभा हाथ सुरति की बिबू ? निविनि  
 बन के घड़ा वसस—तकरे पर छनि नाह  
 उमरकर के । अरब ने कां पुकी य बाह  
 हुतकर दिहरे भूमिक सुखा संगान छवि  
 के, तै तरबा सं टिकावनबर विहरे छवि ।  
 केमो यात्रि दगुन बा भयानर देहन, वा  
 ई खाद बगारह देहन—हुनका केले बन  
 सन ।

हं, मादर ! खिले लीं वो 'देविकल यन्त्रा' !  
 क डिक्करोयन नदि मेडि 'देवकोव' क सेटर,   
 ते ओदी नाम ल पणिका बहार करय पड़त ।  
 बहिर से विनाक कोनो कारण हो वा  
 नही बुझि पड़ेत—बाद हई नेक । बनौ देवकोल  
 अह त देविकल यन्त्रा (देवता करत—से एक  
 ब्रह्माचार्य मिश्र के कहत) इसारी बगराव  
 मिश्र ओजा नदि मेरा लकेत छयि । अहाँ  
 केने जलभाक बाँग ह क विचार आ अपन  
 नाँव दयि समथन करु के आहँ ल क सद  
 लव पणिक बाबा विद्यापति की कहि गेल  
 यि—यसकाल विद्याबाबू भ्या

इस नदि कागध धुवन हावा  
ओ परदेख हर खिर सोहर  
ई विषय नाजर मन मोहर  
हुनं वस खो दिख नै नालखि पट-  
नाथानो-नालकन्दरा मन हर ई भाषा लरी  
मेथिली भाषी क इदस लरी  
आखि तेन खं  
द्विजान तेन  
ई पिये रतेन  
पत-भाषि ई  
कान मे गनेन  
विनयकपुत्र म  
लेखे वसि  
वसि वसि वसि

अस्य प्रतिष्ठा विषय—राष्ट्रिय संघटक सम्बन्धम् । तस्यादक वी, भीमदी गांधी बखन किंशु श्रवण छयि त तकर मो अर्थ नहि होत छे के स—पहो सुकेन की । तें मो बखन करौं छीं के राष्ट्रिय बरिया व्यक्तमहल मांयवा छे का तकर समर्थन करैत महल बंयसवादी भीमन सम्बन्धी बार करैत छीय के सुपरि तमा सुखक तकरा मित्र रहक ए त तकर अर्थ है कय मयि नहि के हय सम गोटे काठो माया क शुभक सामना करै छेक वाटपर बरा बार । एकर सोच अर्थ होर छे के अर्थक बाजत ने के यकार पवक यह हो अन्नक देरी जातक अर, कोटी-बकारी ने के किशु अर, योटी-पेटरी मे के गदग-गुदिया आर—से सम वर्षस प्रभावनायेंक सुवा कोय ने दल न दियेक । न ताह ने कट हो त गोके बर मे का मान मे प्रवेक द करैत छुह भायि दित छुह—बाकी काज देखक भवे-सेक जोनिन भगनि क छेय । समारकनी जेमा बस्ती छेक ने के बुद य गेना का नाक काछे जनि से तकरे परि अर्थ के अर । देखो भीमन, शब्द भगनि मर होरत होरक पंचय के कूकक के जोकर देखे देतो ब्रह्म होरत छेक । अर्थ य यथ-काज मायक अनुवार बहोत रहैत छेक । स पवु की य हरर सम होचि क हम राबनैतिक शब्दकोश तैयार कनाक काज हाथ ने छेक ए आ सोच-नुहुव कोय नेबख । अजक ने माया बलै दित वं हम श्रीमती गांधीक समय भाषणक प्रत्यक्ष

देश मगर महान छड़

अपादक के पैरा हिन्दुस्तान का  
आर जे किछु हो मगर महान का

बारवधु आई एतय पहरानी वल्ल  
हुंठवधु कलपर कई बनवास मे  
आई भऊआ पर एतय अभिमान कई

अतय कर्ज पर चले सरकार छह।

राष्ट्रशास्त्री  
हाथ  
सम  
वेकार  
छद्म

पूरा बदिले का रहल आगू मगर

बचक हड़तीक ने साबुत राष्ट्र के

मां हते, मातुव पंचक त शान कुर

—

—

पृष्ठ १५

बोस  
बोस

2007

三 富

की कहल ? कका सेना सेना

अथ भूषण

आर. ई. सभ प्रधान नहि छथि राज्य क

राष्ट्र नायक के गने छवि गायत्री

बातें भनहि बिचित्र छद्म तस्मिन्

तखन ने पेश हिन्दुस्तान

—रामलोचन ठाकुर

काण आकाश अधिवासर भेटिने छेउ स  
त छोडि नहि सकेछ। आशा बिस्ववास  
लोक अर्थमे छेउ पछु ननि गेआर आ सुविधाक  
छेउ पछुमे गे रहला पर स उपयुक्त होइए।  
वर्म वस्तुनि आन-अन उपयुक्त  
तहिना इमार दुवरी होइछु ई अलखि  
एत। जंआर लोक एवमे मेरी त राख  
क अक्षयताक अर्थ मे छे नैह परिवारक  
शासन परम्परा के अलखि रहला।

थोड़ा बचपनी के अलग दिवसीक मौजान  
 में अयोध के था अकबरक धरणा में पंडित  
 श्री मंत्री भी इधरे कइलिन के जेना अकबर  
 आ अयोध के समय में जैन रासियाली  
 छल-पछिला ओ साहित छल । अंजना ई  
 कया मिलल के भराया मताप सन देखाई  
 अकबरी के समय में छवटे । इहि सवर्न  
 में अयोध महल उछाह ब कछिय के ठंढा  
 क देखलिन ।

अरी के व मने होत के निहारक बने  
मान लखमनी भीमाव कनरोखर विह बपट  
बदर के बाणवा केमनिह के केनक भय  
होइह नेहरू परिवार आ वें केरू के  
राजिधानी नयेबाक भय सेक नेहरू परिवार  
राजिधानी केनार आ नेहरू परिवार के  
बद भोगी गौरी वरिना भीमनि गौरीक  
बाद आंखुक नेता काहुक अया (Today's  
leader tomorrow's hope) राबीव  
गौरी के विपक्षरूप केनार आ राबीव  
गौरीक बप काहुक नेता परहू अशा  
(tomorrow's leader day after  
tomorrow's hope राहुक गौरी के  
विपक्षन रूप केनार आ राहब गौरीक  
बाद .....

आधा व्यक्ति बेहतर नहीं आसना है  
अच्छे राशनैतिक बुद्धि किछु विकास  
होएत। है पत्र निवास वैयक्तिक आ शोप-  
नीय थिक-तें हक़ा छत्रवाक कपट नहीं  
हरी ?

पत्रोत्तर नदि देनाक प्रवळ आकाश्री  
श्रीमान् लालबुभकर  
बुक्तुक ग्राम बाखी

थलक से भीमती की देहन मॉरि  
लेकाई छवि के बाव को आ प करी  
करेव छवि । बिबुल हिन वनि विहार  
अपनक दौरान ओ बगोईइ के कइवार  
'हिन्दी' माने कोठाक भाषा बाइक नहि बा  
रख छै । अहाँ के छगुला कागि सवैले  
ले न भीमती कीक भयन ठीक छनि त  
विहारक भाषा हिन्दी मेले केग केले ?  
संकायित भाषाओ सँ पतिने बाए मैथिली-  
भाषीक संस्था देहू कोटि छैक से व्यावा-  
रीक बाइ ब्यवन हवार हय न गेलै ?  
भनत आर छैक के बखन सेन भारतीय  
संस्तान अर स रेलक भाषा संविधान मे छैक  
आ उपरत सरकारी सुलझिवा पवैय  
सस्तन हमरा लोकनिनक भाषा मैथिली किएक  
बाइक अर ? यदि हम भनक बनाव छैक  
कने अर पावू बाए पवत । बिबुल हिन  
पतिनि नो भाइक छडीइ के भाषा-वर्ग-देय  
बादि नग्यय विषय के विचार लोक राष्ट्रीय  
संलखइताक लेल केनर के सविधानी  
नवावय । इहिठाम भरपन रखबाक किं  
जे ई भात भोरी लोक सँ बइक गेलै के  
दोहर बाइक नगरिक अर-बकर भाषा-  
भूमिक बने भारतीय संविधान मे नहि छैक,



किछु देखल : किछु सुनल

विगत ६५ दिग्दश के ३० मा०  
मिथिमा हं व कलकत्ता, अयन रात नयली  
पर्वक उपरदश में मिथिमा विमूर्त पर्वक  
मात्रण कर्त्ता ने प्रमुख लुभाद श्री भोगदश मां, श्री विमवदश मां, श्री वैष आदि ।

अप्राप्त न केने छहः श्वातीय स्वीकृत पाठो  
विश्वविद्यालयक समारोह पर । इह अवसर  
पर बहो पात्रिका सेहो वारक कवि सम्मेलन  
कम पर कम दोहरा दिने मंगल कवि सम्मेलन  
छहः सप्तरूप रूपतः इह विद्योरो हरेक स्मारिका  
पर ।

[illegible]

देवकी—यम सेवार नहीं म सहो !  
 भोनाई बरत दिया मेरे दो अपारिहार  
 वर ले लख छेक—मिथिका विरुति-  
 नरक अवसर पर उपरिबत समस्त भिखी  
 प्रेमी के सहोई । 'बे हो भारिका मे कय-  
 काम क विषय नहि छैक । पहिछ नित जे  
 ह्यो पवो निरदोख लखैक ठकर वनो  
 देखू—बलिह भारतीय मि. वं ककभयाक  
 रगत कयनी भा' मिथिका विरुति पवक  
 २-१०-२०२० इति ५ अथे सं ।

३. कक्षाओं से पहिले पहिले मैथिली के  
मंत्र हँ हिन्दी मे भाषण मेक । के वल्लि  
पाठक केवना हल्लिक मंत्र हँ हिन्दी  
भाषक विरोध केने छलह—कनना मंत्र पर  
वेध मन्त्रोय से मुनेत रहलह—कनो नहि  
पठयल्लह ।

अपुण्डीय भाषण, इ.प. कवि सम्मेलन है।  
कंड संगीत :—(क) कण्ठमणि (ख) सख-  
रमैया (ग) पल्ल गीतवन्द (घ) रागण 'प'  
प्रदीप (क) शोभन मोहत्र । मंगलानन्द, विजय  
नरसिंहाय्य आ ।

पत्नी से छुटक तिमि के नर द देख  
बाज खरद नीक, कारण एहर भावकम  
प्राप्त हुनू दितक छक । दोहर दिन अति-  
रिक्त से दुयक आयोजन छक आ से नौक  
हक रा ररण, प्रीति, मनमोहन-विषय आ  
अननारायणक कंठ अगीतक कोक बात  
रकिते रहि गेक । अन्तकालि के पहिइ  
किन् शिबद्वी नहि छप्रायोक गेहनि ।

केना देखल, मित्रिका विभूति से किन  
 बी मजिनतदन मित्रिछेनु बी देवनावाक  
 बाडि आ किनेदर मंडल समानित देकर ।  
 सेना झुलल, मधुप बी आ डलित बाबू के  
 समान थीं-पी-वं पठा रेड केतन ।  
 दोहर दिन के कवि समेदन में  
 तहर अमरुदता केहन भरो य किन बी  
 आ याग छेकनि हर्ष भी मायातद मिश्र  
 कीरेन्द्र मणिक, लीनर नाथ ठाकुर, रमण  
 क्षीय मैथिलिपुत्र, उदयचन्द्र भा 'विनोद'  
 राम कोवन ठाकुर, विभूति मानन्द, लक्ष्मण

अणोधेय प्रकाशन ३३/५, छा० देवदार रहमान रा०, कलकत्ता-५ मे मुद्रित ।

बृन्दावन गीतास स्ट्रीट, कलकत्ता  
२२-११६७

151591649 688  
- 68316177

बालमंच

अटकन मटकन

सदस्य  
वै. जे. हिन्दू  
सदस्य  
सदस्य

निधिका ने रहि क हिन्दो बैसै को  
खा तोरे अत्त अपमानो करै को  
सहै जुषाप को काजो ने कनियों  
गदनि पकड़ि क काँ पही पठन

बिनु राज्य मिथिका बिबिड भेल एहँ  
आधा बिहीन भेल कोन ठाँ मरने  
मायक ई काज काज दोरे से आति के  
जनि प्रति भेल बिचरि बाबो छ बहुत

आइ नमि बिगार गीत मोतक प्रयोजन छर  
एवंबीक छाहान करै भने मव

—रामलोचन ठाकुर

मैथिली पोथी/पत्रिका कीनू आ पढ़ू

— २५५ दाका —

— 2 —

[illegible]

— ४ —  
आदूर ( अनुवृत्ति नाटक )  
४ रागा

— ३८ —  
प्रविष्णुनि (अनु० ३४५)

अर्धनारीश्वर (वृषभ्यास)

मुन्शी रघुनन्दन राय : (वर्षाक आ कृतिक)

मैथिली लोककथा

सुभ्यकुं वन्दे !—

## अरुणोदय प्रकाशन

कलकल

मिथिलावासीक मांग :-

१. मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे स्थान हो ।
  २. केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा मे मैथिलीक स्थान हो ।
  ३. मिथिलांचल मे विमलम चंद जगत सरचरि शिक्षाक अनिवार्य माध्यम मैथिली हो ।
  ४. मैथिली बिहारक दोसर राजभाषा हो तथा मिथिलांचल मे एकरा प्रथमिकता देब आइक ।
  ५. आकारवाणी बुझिनांग तथा भागलपुरक नगरपालक माध्यम भाषा मैथिली हो ।
  ६. समस्तीपुर स अजमेर चरि बड़ी कान बनाओक बाय ।
  ७. मिथिलांचल मे वास्तवतक मुख्यस्था हो ।
  ८. मिथिलांचल मे कृषिक अवस्था मे सुधार हो तथा रोवो दाहो चंद बबबाक हणाय हो ।
  ९. मिथिलांचल मे कृषिकर आवाहित दाकारी उपयोग-चं बाक विकास हो ।
  १०. सुबन्तपुर बूढ़वाँन केन्द्रक मोमम मे मैथिली के प्राथमिकता देब आइक ।
- मैथिली मुक्ति मोर्चा

**पञ्चांग**



हजुर माइ-बाप :-

हूँ ठीक हूँ। किधूँ तो जखन हम

प्राणिक सम्बन्ध में कहते हैं कि प्राणी तभी तत्त्वज्ञान के लिये उपयुक्त होते हैं जो अपने परित्यक्त प्रसूत करत हैं। खोले हुए अर्थों पर विचार करने से होइ वा निन्द्या ।

प्राणिक सम्बन्ध में कहते हैं कि प्राणी तभी तत्त्वज्ञान के लिये उपयुक्त होते हैं जो अपने परित्यक्त प्रसूत करत हैं। खोले हुए अर्थों पर विचार करने से होइ वा निन्द्या ।

यन्त्राचार्यक नाम सेहो अग्रगण्य । हिनकर

उपेक्षा करै छी । मुदा, बुद्धि राखू या  
 नभर अस्तित्व अहाँ पर निर्भर  
 अहाँक अस्तित्व नौद समक मध्य मे हम  
 एहन छल मैथिलि विश्वविद्यालय पंडित  
 समक आत्माविद्यालय मैथिल पंडित  
 समक इहो गाँवो किं प्राप्त छल—

यदि पश्चि विषये वा वतयामः स पन्थाः  
उदयति दिशि यस्यां भानुमान सर्व-पृष्ठः  
नहि तरणिरुदिते दिक् परार्थीनं वृत्तिः

जई प्रकार आठम आ दसम शता

छलाह, तकरा बीह पर हलनउँ  
चिहादि छैक ।

विद्यापीठ बनल रहल । दूर-दूर  
आबि कऽ विद्वान सभ एतए अवच्छेद  
प्रकाला आदिक ज्ञान प्राप्त करए  
छलह ।

गरीश उपाध्यायक नवम्याय  
मे सम तं प्रदिष्ट भेलाह पहाधर  
हिनका विषय मे प्रदिष्ट अछि -  
वाचस्पत्योः शक-वाचस्पती सद्वी,  
धरप्रतिपक्षी लक्ष्मी भूतो न च क्वा  
(अर्थात्, शंकर आ वाचस्पति, हि  
वृहस्पतिक तुल्य छयि ।)  
पक्षधरक समक्ष तऽ किओ ने देल  
अयैतो अछि । कबल जाइए जे ई ब  
क धाए छलाह तकरा रिद्ध कऽ रह  
के अर्थ अछि ।

DECEMBER 1991

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

लाह आ हिनका सँ 'भणि' 'आलोक' प्राप्त  
कए नव द्वीप छय गेलाह ।

मैथिल संस्कृतिक ओहि स्वर्ण युग मे  
मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन कैहे। छल,

“हिनकर पुन शंकर मिश्र एहेन संकारी  
भेलाह जे पाँच वरखक अवस्था में ई ब्लोक

यन ई=लोक हवनउँ धरि गाम-गाम मे  
प्रसिद्ध अछि वा छोट-छोट बाळक समक

शैशवावस्थे मे कण्ठस्थ कराओल जाइत अछि । शंकरक विद्या सँ प्रसन्न भऽ

हम मिथिलेश्वर हुनका प्रचुर पुरस्कार देलखिन ।  
धर मुदा हुनकर माता भवानी तऽ अगची

मिश्रक पत्नी छलथिन । ओ शंकरक जन्म-  
काल एक चमइन के वचन देने छलथिन जे

मंगल शंकरक पहिल कमाइ ओकरा नछाओलक रूप मे देल जइतक ई प्रतिशा स्मरण अवि-

तद्व औ समया सम्यति औहि चमइन के दस  
देलायिन । मुदा ओहो चमइन तऽ मिथि-

लेक माटि-पानि पर बनमालि छल । तइ  
सभटा धन सं एकटा सावजनिक पोखरि-

गुनना देलक जे आपहु धरि चमदानअ  
पोखरि नोमे विख्यात अछि । आई स

एतेक महान छल ।  
किछुए पीढ़ी पूव माथलक जातीय चरित्र

अनंत एतेन छठ मिथिलाक सङ्कति, त्याग, संतोष आ . स्वाभीमानक अदम्य

रूपरा  
ज्योति सं जगमगा रहल छल । वह  
सांस्कृतिक विशेषताक कारणे मिथिला  
मंत्र ।

सहस्रावधेयं पयन्तं तीर्थं भूमिं बलं रहल ।  
कहल वाइए जे पहिने मिथिला

भूमि जलक आधिक्य कारने बढ्दु आश्र  
छल । वैदिक युग मे आय सम एत

परन्तु  
इ मे  
आवि नदी-नदक कातो-कात यश करत ए  
भूमि के रहवाक योग्य शुभक बनौलनि

तद् एकर नाम 'सोशुक्त' पदल, ज अ  
तिरहुत अछि । बहिमक एक-ए

1. התאחדות העובדים - התאחדות העובדים הכללית



प्रो० हरिमोहन भा

प्रो० हरिमोहन झा माने वर्तमान युगक सर्वाधिक गतिवत् साहित्यकार। गिर साहित्यकार हरिमोहन बाबू, हास्य सम्राट हरिमोहन बाबू, मिथिलाक दार्शनिक परमरा प्रबल स्वर्गम हरिमोहन बाबू जीवैत छथि आ तापरि जीवैत रहता बापरि मैथिली भाषा-साहित्य। हरिमोहन बाबू जीवैत छथि आ तापरि जीवैत रहता बापरि मैथिली भाषा-साहित्य। कदाएक प्रयोजन नहि जे हरिमोहन बाबूक प्रति उचित सम्मान / श्रदान्वित मैथिली भाषा साहित्यक कें समुदाय केनाइ ओकर विकासक पथ प्रसस्त केनाइए या होएत आर किछु नहि, किछओटा नहि।

चूड़ाभंगि चूड़ा—मधुरा  
चिनी । एहि तीरूक संगोय बूझ तें  
त्रिवेणी संगम थीक । सारा त त्रिलोकक  
आनन्द एहि से बूमि पड़ैत अछि । चूड़ा  
भूलोक । दही मुबजो क । चीनी स्वाजो क ।  
हम देवल छ जेहूँर क्का एखत तरंग  
से छथि । समदा अद्भुते बनतार । भगएव,  
कास भञ्जरो गण्य सनवाक छौंमे बेसि

492

बुद्धि । दही चूड़ा चीनी खेला उत्तर पेट में

द पव हाथ छक ।  
समल नीवाँ मुहे रुहुक रहल अछि ।



## पिता : मृत्युसज्जा मैं / □ विभूति शानन्द

□ □  
 योग्यपूर्ण विमर्शक सभ्यता अन्तर्गत  
 हमारा अन्तर्गत अष्टि बाउ  
 हम एकटा सोचिजनक ग्राह्य मऽ जील्लु  
 अकर सर्वांग भूआ त आकाश तैत आलस  
 इतल ई देह - ग्राह्य तहिये ने कौकानि जुलुह  
 बहिया मैं एकर वैध पर दोसर ग्राह्य अपन अलिल स्यातऽ छलक ।

बाउ !  
 हम अपन एहि मानसिक तद्वर्तनी के  
 सख आसक समयाक प्रयास करैत अमल्लु अछि,  
 ई चाहे तऽ प्रति-पक्ष मऽ बाइत रहल अछि  
 अथवा, शून्य मे विचरैत कोनो नीरा-बीबी  
 अथवा, विजया-सेवी मनुष्यक अन्तःक मऽ कऽ  
 एहि समाज द्वारा मायता प्राप्त करैत रहल अछि ।

□ □  
 आ तौ,  
 जीवनक एहि तांछ सेला मे  
 परिवर्तनक ओर हेतु ईदल मनुष्य लय  
 बन गेल ओरि तन्मयते मुद्रा मे  
 कुन नइके अङ्क का रहल अछि  
 □ □  
 हमरा स्मरण,  
 अपन संकीर्ण मोह आ बहुमूल्य कथा बंगल मे  
 अने लोयाइत रहल्लु  
 मृति मे जीवाक हमार-अहंकार ई आम मानसिकता  
 मोहकछन कऽ कऽ लोक केँ तौह कऽ छुज कऽ देत छे बाउ !

□ □  
 अपन पितरक तथण करैत  
 आनि  
 मनुवादी परम्परा मे पलेत  
 मुक्त, गोन आ मूक जोर-जोर मिश्रित  
 अथवा  
 गौरवपूर्ण इति-वृत्तिक नीच मिश्रित खेलाइत  
 आए जे कि हम वर्तमान में कऽ रहल्लु—  
 जीवनक रम सँ अपस्तक शब्द पर  
 स्वीकारक मोहर मारवा पर प्रित छी ।

□ □  
 आइ हम  
 हिमालयक कोरा मे बसल अपन गामक  
 दीव चौपटी पर ताइ  
 आलि मध्य विराट शून्य केँ बने  
 अरीरक अवस्य भार केँ  
 दूटा कमखोर पसर पर  
 संस्कारि रहला मे विकल मऽ रहल छी ।  
 ई कला मुद्रा किन पञ्चापाक  
 केँ हमर दीर्घ जीवनक लोक निकर्ष अछि ।  
 □ □  
 हम आर अधिक ई पीड़ा नहि सहै सकन  
 हम ना रहल छी बाउ !  
 अहाँ सभ द्वारा उठल ई अंतर्गत तबनी  
 कलना हमरा लौकिक तन चुमाइत अछि,  
 कलना केँ तन स्मृत अछि मीत

□ □  
 हम जीवनक सत्यता प्रादे लोचयेला सकल्लु -  
 कऽ नहि सौल्लु किछु ।  
 बहिया खुआनी क उठान पर रही—  
 गवदी मारव नीक छात छल  
 बहिया अनीतिक विरोध कऽ संकेत रही—  
 दृष्टि-छा तं होवल रहल्लु  
 वैचारिक स्तर पर जतने साक्षात् रही  
 व्यवहार मे ततने शिथिल होइत रहल्लु  
 हमरा अहाँ सभ किनहुँ माफ नहि करव  
 अहाँ सभ केँ आइ

× × ×

## लाल बुभुक्करक चिट्ठी

श्रीमान् सभासदक बी ।  
 नमस्कार एह जय मैथिली ।  
 आगा हाल-सुरति की लिखूँ अहाँकेँ  
 त बुझैत आइ जे विद्वान्वित मिथिलाक  
 विभूति हाल-रति सँ ममभरि समदुखी  
 वाखी मास छवीनो दिन छल दुखकर केँ  
 घेनहि रहैत छनि । ओना ओ मे-मेर  
 मधुकवि प्राक्तिक कापूछा इ मन केँ कुने-  
 बाक प्रयास करैत छथि जे—

दिले गवरी बुके हुआ क्या है  
 आखिर हव रंद की क्या क्या है  
 तुमको उनसे क्या की है उम्मीद  
 जो नहीं जानते क्या क्या है

किछु तैयो अथवा मन दुर्लभितारे  
 नहि । आ ताइ पर सँ कहै छी सभासदकबी  
 पञ्चाक एक मासिक पत्रिका मे सफलताक  
 कोनों छबील बल सँ बुझुनिया कइत  
 नेतानी क साक्षात्कार पढ़ि त आर छिन्नी  
 एहि उठान मे मंडल छी तन्मायक बी  
 अने = तन्मय अने = तन्मय मैथिली  
 = तन्मय अने = तन्मय अने  
 मेहनत केँ सत्य छीन अछि, गऽक ई  
 प्रति त जानिय उमिलाहा के मिलिभारि  
 प्रति कहैत होइ ठाहीक सत्य ... त आइ  
 काम स कम अकसे कहितौ—बिहारी  
 सभासद लोकनिक विवेकक जे जे रहन बण  
 शंकर बच्य केँ प्रामाणिक कोषित क  
 देलनि । सभासद बी अपन परिछल बिट्ठी  
 मे हम अहाँ केँ धीनसि फरवाक सुभाव  
 देने रही । अहाँकेँ बुझैत आइ जे हम ने त  
 बिहा पतनक पटिया छी आ ने मुनि समाज  
 क प्रचार । तबन एहन छैत छिजवाक  
 कारण लाली अपनैक सभासदक केँ मलबूत  
 केनार छोटि आन की मे लहै ? आ जे  
 अने हमर सुभाव मानि अभाव करैत  
 होइब त तोक दासि समन करैत बल, जेना  
 जेना हम कहैत जाइत छी ।

नेता बीक अछुतार कलकत्ता जे किछु  
 कएलक तकर अथ मात्र छमो गोटे केँ  
 छेक बाइ मे तीन गोटे हुनक विरोधी

विप्लवंग स्थितिक मोग भोगि रहल छी ।  
 सभक भानी समरी छी/समरी या छी ।

× ×  
 हम ना रहल छी प्राण,  
 मुदा संघर्षक ई प्रवाह चलेत रहवाक बाही ।  
 सति ने मऽ बाय ई धार  
 हमरे अहाँ अहाँक संतति ने दिअ ई उपराग  
 मनुष्य स्वयं होइए अपन भाव विधाता  
 से जानव हे हमर जान  
 बेरानी ने मऽ पायव ई मोन-प्राण !

× ×  
 रामनामी चरि ओहि बिलक, बाहे  
 मंदिर-मस्जिद मऽ कऽ रहब, बाहे  
 पाव, पावरी आ गवामक कोर तकैत रहब,  
 तऽ रहि बायव मैथिलमने मिथिला वाली  
 × ×

अहाँ सभ केँ एकटा सौंठ मनुष्य बनवाक अछि  
 मिथिला आ मारिख क दद भोगवाक अछि समान देने ।  
 एकेटा होइए  
 विप्लवनाम सँ मरिभारि बरि कथाक मूल कथ  
 से जानव हे हमर गीत  
 मुदा जानव नहि गीत  
 बाउ .....हे हमर मीत

× × ×

हेमाते छलियन, बनिना-छोकिनक संग  
 नेता बी दुर्बलक प्ररि मुदयका लखल छथि  
 आ मर्यादाति धनक आयोजन मे बन-धूर  
 धरि बल अछि । एक जेन हुनकेँ कथाने-  
 उदार बुझल छथि आ एक जेन प्रायः नीलो  
 बल सँ पिछीक बनिना छथि । बी, छद  
 ने छपुताक गप ; जे मैथिल मारण भा  
 मिथिला-मैथिलीक पाछा अपना केँ चौपट  
 क लेलनि बैधानय भा, मुदरेव ठाऊ आदि  
 क चर्चा नदरह ।

सभासद बी अपने केँ त बुझैत होइत  
 जे मैथिली मुक्ति मोर्चाक बेतार मे मिथिला  
 राज्यक प्रन पर नेता नीक वकार बन म  
 गेल रहनि परबद एहिठाम ओ अपना दु-  
 मुख बना अपना केँ दोषमुक्त क लेलनिहै ।

मैथिली पोथीक प्रयादन जे मैथिलीक  
 काब मेल सभासद बी तबन कलकत्ता सँ  
 आइधर अना पोथी प्रकाशित सेख तकर  
 दवाही हुनका द्वारा नहि भेल छेक परब  
 बाकी ब संस्था सभ छेकक तकर नारी  
 चर्चा नहि

१७ दिसम्बर १९७० केँ जे प्रातिनिध  
 मंडल दिखी गेल छल तार मे त आइ रही  
 सभासद बी । सँ अहाँ केँ कायक संपत्त—  
 जे हम प्रति कहैत होइत कहूँ ई—कि ओइ  
 प्रतिनिधि मंडल केँ हवारक-हवार टाकाक  
 संग फूल माला सँ छद हवा टाकेन पर  
 एही दुवारे लोक बिदा केने छल जे ओ  
 लोकनि छलित बाबूक देरा पर राब भोग  
 पावि श्रीमतीक संग फोटो छमा घुरि  
 आबस—आदि आभरण अनेकत अथवा  
 मैथिली केँ संविधान मे स्थान दिखवाक  
 लेल ? इत तार किवालयत केँ, ककरा  
 मुक्ति मोर्चाक आन्दोलनक बादे एहिठामक  
 लोक विचारि सकल नेता बी अपन कृतित्व  
 नवारैत छथि ।

नेता बी कहे छथि जे मैथिल सभासद  
 ओ स्त्री छथि जे देटी-भतीबीक कया-  
 दालक भार नहि लेलकनि । आता अइ  
 ( नेपाछा पृष्ठ ४ पर )



## DESKOS

## बाबी बूझा चीनी

चिक। परतु हकरा हेतु सपरगुणक अभिषेय होकर चाही अर्थात् दही बेरी होना चाही। इस - अहा। सोचव दणक धल सब देस के करि करेते अछि।

लखरका बरकाह-यदि दहिना निम-शय देत परतु व क्रमः सम दशन-तब गुप्त देतौह। विगुणलिका प्रकृति दया पुत्र के रिक्ते अछि। एकर अर्थ अ ई विगुणलक मोहन भोक्ता पुत्र के नबसेत छय। ते नुलनि मोतेविषा।

हम कहियेह-परतु, लखरका। पठिमाहा सम त दही चुका चीनी पर हलित छय।

लखरका अंगोछा हें भाग बोटे व बलकाह-ही, राधु लखी लैनहार दधि विपदात्मक सौर की दुःसनाह। यहिचक जेत मरि बहार देखेने अनन बका। तेदेने लोक के बड़ सन। आना देवक भूमि सरा, मोहन सल, कोक अल। चुदा पृथ्वी तल। दही बल तल। चीनी मोहन तल। ते कह गित बाधु-तीर दोष के गुण पावक समस्त रहि ते छै। तेदेह, अमादि काह हें दही चुका चीनीक सेन करेत-कत हमरा लोकनिक शोणित अछा मऽ गेल अछि। ते मैथिल बलि के आह धरि कहियो बुझ कोत देलबक अछि। सदा देखु। बोव-बीव से तेहन मादिक अंग कऽ देत छियेक जे...

ख-०-बंग नहि, यथाय कहेत छियौह। देवह, मोहन स प्रकृति कत छेक। चाली मरि स कऽ मादि गेल रहैत अछि। सोय स्वात पीव कऽ फलकत अछि। साहेब सम अकल रोटी स कऽ फलक रहैत अछि। भुगी लैनहार भुगी कऽ कहेत अछि। और सम सग-भौटा स कऽ सग-भौटा सल छै। हमर लोकनिक प्रसन्न (भात) क ओरी धिक्क, ते एक दोहरा स विभक्त रहैत छी। ताह पर की त दिवक (रात्रि) क योग भेले ताबस। तलन एक दल मऽ कऽ कोना रहै सकैत छी।

सम-अहा। की अलंकारक छय।

ख-०-बेलाक अलंकार नहि, किसानो छेक। कोनो अधिक स्वाम दुम्बाक हो त देली जे ओर सम स प्रिय भोजन की चिकेन। देख, बंगाली ओ पछिमाहाक सम्भाव ने की अन्तर छेक। जे भेद रत-गुला ओ खड्ड हें छेक। खरगुला परतुओ कोमल होइछ, खड्ड ओ कठो। खरगुला बूँदक प्रतीक थीक, खड्ड बूँदक पवित्रक। ते हम कहैत छियौह जे फकरी जातीय चरित्र दुम्बाक हो त ओकर प्रधान मुख देली।

हम-लखरका, अनन समक प्रधान मुख की थीक।

ख-०-अना समक प्रधान मुख थीक खावा। देवात मे मिठाह कहने ओकरे बोध होइछ। खावा ने खरगुलाको स्निग्ध होइछ, ने खड्ड को ठोस। ते हमरा कोनन मे ने बंगालीला स्नेह अछि, ने बंगालीला हृदय। तबन खावा मे

अखोदिय प्रकसन ३३५, डा० देवदार रक्षान रोड, स्वकता ७००३३ क लेल भी महेस्वर भा द्वारा प्रमदित तथा पापनिगर आद मिच्छ ३२ वी, बुदामन बैराज स्ट्रीट

## काकाका साराह

समादक की जे हरि वस्तव्य स अहं सरलत होइव ज ओ गप विरारि जाइ जे कहियेन नेताजीक संस्थाक मंत्री बनबाक विशेष योग्यता मानल जाइत छेक-ओकरा घर सञ्चली से बा प्रभाव मे कोनो नीक बर सनाही। १९७२ ई० क ध्वन जे अगने सरलक अछाती आ लस के अपाल मासक त विषय आर सघट म जाइत।

अबोचरि नेता जीक नाट्यकार होह-नाक बात चिक से त पोथी छयि जेने सम कतेछ। कबलाक प्रयोजन नहि जेने छाल कुम्भक सेरो ई नेनिक आ सैवानिक नाट्यकार मानि लेयि। परतु अहां त ओही नगरक लोक छी आ नाटक स सेरो बुझ छी ते हम अही स निहासी पुछय चाहे छी-कि सविहू ई नाटक नेता जी अमने छिले छयि? हकरा गप आर-कलेक संस्था के वस्तुव क क लेबनाक अर्थ नेता जी के छनि तलरो पता छोनाह जुनि निहरी। ते ने कहे छै समादक जी जे-सम्बद्ध मुई सम्मति नीक, मुदा यदि नेता जी जे कहेन तलहू बुट भंन लोक कि छना दुरि जाइह।

प्रलेक परतु फाक-फाक रहैत छेक से अमनो सम मे रहिते अछि।

हम-बाह। ई त समकारक गप अछि। लोकिक।

ख-०-देव वा धरि वास हम, निज गौ ने छी।

हम-बालम मे लखरका। अहां ठीक कहै छी। गाम-गाम मे गोलिवा, बर मे पट्टीदारी भगवा। कनहरी मे पागे-पाग देलाइत अछि। से कियेक।

ख-०-एकर कारण जे हमरालोकनि आर्मिक-सत्ताक देवी लावत छी। तीन-चौल सेले ताबस। तीतो मे कम रहि निह-नीम-मौटा, करेह, पटुयाक भोरे...। हौ, मेरे गुण कारण मे रहैत छैह ते काप मे प्रकट होइत। कटुता, अकला ओ निकता हमरा लोकनिक अंग बनि गेल अछि। स्वाइत हम सम अपना मे इतके कटाउम करैत छी।

हम-परतु बंगाली सम मे देवक प्रेम कियेक।

लखरका भांग मे एक औषध चीनी मिश्रित बरकाह ओ सम प्रलेक कछ मे मधुक योग देत छयि। दाखिओ मीठ, तलकाहो मीठ, माछो मीठ, चटनिओ मीठ तलन जेन ने मधुन रहैत अने जाति मे दहिना मीठक सम्बन्ध होत लायत तलन ने। ते हम कहैत छियौह जे अपना जाति मे नौ संगठन करवाक हो त मधुक बेटी प्रचार कइ। केवल सग कोने की हेतौह। भोज ने मात, हजर गीत। गाम स दुगोछ दूर करवाक हो त 'दही चुका चीनी बल कदो वाह' वरणीक भोज कइ।

ई कहि लखरका भांगक जोटा उठौ-खटि ओर दू-चारि बूद विस्वाक नाम पर छीटि चट-चट कय समया पीव गेलाह। (सदरकक तरंग सँ)

सम्बकता-५ मे मुद्रित। समादक : भी जनादन भा

ई गप सारा हल मे जाइत छम। बेटी-भतीजीक वय त नेता जी केछनि परतु देवा भातिव बर मे जुयी फिक्क। खली छ ने जे उचित कहने संग फिक्काए नेव सम अक्से पुछिस्मिनि जे भीमाव लोक कूची वा दुरा क छूट व गेल गके ने। अकि नहि।

समादक की कसे कह-हकरा अगल अगरेछ रहै सकन ने। नेताजीक अनुहार कले देखे सँ कछरका मुख गइ। आब अही कोने शान भवक लोग द क विस्तार जे राखयो प्योनाह त मदान अन्दोलन चिक परतु मैथिलीक इतिहास मे सम्प्रथम राल-धानीक राबय पर अल मधुमायाक योगोचित अधिकार लेल जे मैथिल प्रताप जोषिल कहजोखन आ लोठीक मरि लेखनि तल उचायको नहि। एके ने कहेत छ अक्षिते गाय गीतनाह। मुकि मोर्बाक दक्षिणा अधिदेवक सम्म जे ई नेता जी पीट मे छुहा भोक्कनि जे लोक भने निहारि खावो मुदा समादक जी हारा त पुरे सेरी मरि विवास अइ जे अहां नहि विस्तार होइह।

नेता जी दार बरौ नम गप कह-निह-समादक जी। अमने कें ते बुझले होइत जे फुरारक फुरार कसे हाथ मे मादि अगल देखैत छइ तलरो पावू लागि जाइह।

से नेता जी तहिना कहान राखनेतिक गंध पति पतिना हलया आ मारलया सँ बुझि गेलाह। जे स्मृति मैथिली अकादमी के पठिनिये कोना दोहर संस्था कहि आलो-चना लेने छयि तथा डा० बालाचय मिश्र तें मैथिली प्रेमी छयिये नहि बल्ल अहि राखीने प्रि दल सँ संपर्कित छयि सेह दल सम सँ देवी मैथिलीक सति आइ धरि केवल अछि। छिले छयि से जे आइ यदि संस्था क प्रोपराइटक पाछा जाइत होखेत भीरु छयि ते तर कारण त अक्से छेक। आ से छेक 'छला खाम' जे प्रे धरि नहि कछरका होइतपटक केव धाम पहुँचि जाइत छेक। आ ते अकरा खाम जकरा हाप मे नेता जी देखैत छथिना तलरो गण्डा लागि जाइत छयि। ओना जे एकरा नेता जी सारे स्वीकार क विचारि त लख-दुम्बर के अपरि के फइद, परिधामरि प्रकलता होइतनि। कहियो छ जे देखि पाकल आम सेह ने भेलाह ईल का। आ कि नहि? आ तें जे नेता जी अपन का चामुट्याक संग हवाब गइ बापर जा के ओही जनानाय मिश्र के फलक माछा पहिरा कइल त कदले की? निम नेमक जोटा त निश्चिना मे रहरी पाओले जाइह।

समादक जी पच अनावसक सस से दसारा सेल बा रहल-छ तें समात केनाइह उचित। अपने सँ हपर के-केव पाकल प्राब्ता जे एकरा अमरति धरि राखी। कम स कम चरित पत्रिकाक संपादक लोकनिक मीठ-दृष्टि सँ अक्से बगानी अयथा हुनको लोकनिक प्रामाणिका ने कही सदिध म जाइह।

प्रमोदर नहि देवाक प्रकल आलोची श्रीमान छालकुम्भक कुम्भक गामबाही

अओर अहां त जति छी माह-नाम, विमलत केव छीक्या करै।

## मेरणा-ओपना

लोक ओकरा बारे मे कने छइ आ सेवर ओ जे कि ओ सविहू होइह।

किन्तु छडु छर तीरू स्याक अकाने एक बरिय रूप सेरो मुखक होइ छइ। ओ ई, कि जे ओ नयि होइह, माने जे ओ बनबाक इच्छा रखैत, जाइ सँ ओकरा अपना कइवाक वा उन्नीत करवाक आकांक्षा अना छइ। संस्कृतः इयद्वयो चारिम आयास छइ जकरा द्वारा मनुष्य किनारी मे किछु क छैह। हजर बहिया हमरा रोष भेठ तहिना अना के एक समूह पवित्राक दुखसा कवाक सम मे पावगेल। तहिना सम तइक दुविधा छेक। पिता रतिक मत छलाह। मा परम संकारी। नया कइर सनातन भरी। नाना आय समायी। दाइक कुमुन पल्लार मे चलेत रौक आ इस ओकर एकलौताक पहिल सनात। माने दाइक अभिनाकारक उत्तराधिकारी। आ फेर समय करोट केबलक जे रौक से नयि रहै। टटल छेक छइ आर ओकर अतीतक याद। हजर यादक हक नया विखिल छइ जे मुह म गेल त किछेक नाम नयि छि। तंहेन मे एतने बड़ी वे लिखा एक नयि ओकर भीतर आ ओकर सग चेतो केलेको लिखा।

ते माह-नाम अपनो बारे मे कहनाइ कह सब नयि। किन्तु ज कनन केओ अपना बारे मे कहैत व ओ भीतर-भीतर कोल अपना के 'धूर' पाने ते तइति के छै। कह लखनाक काब छइ ई किन्तु आदमी ते जनायिते अइ खतरा उठावे छै। यदि ओ स्वयं के अनावाक हो वा दोहरा के कटाक किंवा अपना-आप के परिवार मिश्र, समाव वा देव से देवनाक-हो। हालांकि घटना कलनो अहां के अतीतक धरि पहुँच नयि देल किन्तु कतौ ते जौ पहुँचावौत धरि अक्से।

ई पहुँचनाइ विशेष अर्थ रखै। खाल के तलन जलन कि अहां अपना बारे मे कहैत दोहरा के समेटि रहल होइ।

खड्ड दोहरा के समेयवाक सेरो सकला छुग होइ छइ। आतिर किनारी। अक्से अपन पिरीवानी दुख-सुख के एक छत्रके रूप लेत छइ।

कसर माफ हो। हजर माह-नाम, जे हम अही जे एर समाव मे बहिया लोकक कहियो ने लगता मेले। ज होइते त अहांक वा हमरा देखैत छइ समाव मे याइ छ के फलन नमस् ते दनयद सवार रहल छइ अहिना दिनायका के कसरवाक आदति ओ कहिया ने सतम म गेल रहैत। किन्तु पदि जाइ छइ आ कसरवाइ मे ओकरा परमानन्द प्राप्त होइ छइ-ठीक इहं हाड हमरा समक अह। शिक्षात करवाक ठीक-दारी त लोक नेने अह परतुव खान-अमन मे आइ 'कसरवान' केर हिलेदारी कोत जाइह।

अओर अहां त जति छी माह-नाम, विमलत केव छीक्या करै।

अखोदिय प्रकसन ३३५, डा० देवदार रक्षान रोड, स्वकता ७००३३ क लेल भी महेस्वर भा द्वारा प्रमदित तथा पापनिगर आद मिच्छ ३२ वी, बुदामन बैराज स्ट्रीट



मैथिली आन्दोलन आ मैथिलीक  
साहित्यकार

नामो धम म धोकर कलशः ओकर समान मोह साति लेख लेके ।  
 दुसरो उठि मने तेन से एही भावत से आगत आग जनि रम लखे ।  
 भगत सोई से ज म मरने पछाणि पण प्रहरे पाछे जगत में धल जाति आइ ।  
 वे नीम लखे से माय प्रेमलेख ले पाव ओही दुखी भोगे ।  
 छेक से कोनो लड़ाव लुट द गजाननी नहि धाम से आनि छेक ।  
 भुमका कोइ संकेत छे । जका । तिमोरि मे न सें पड़ल आ प्रसन्न ।  
 होइत छेक । छेक दुमका लया निमिष आओ मरथलु होइत जेना ।  
 अकल नीम नाइस्यार लोकनि मयाभरण ओइसो भौमि केलैत ।  
 छेकिये जे मरनेलेख ले होइत छकिन को अलग रचनात आग जनि लेख लेके ।

[illegible]

ई रूप नबलत कोनो सांस्कृतिक संस्था  
करत अछि, तँ ओकरा नजरिसे गति-मंद  
रहेत छैक, चंद्रा-चंद्रां रहैत छैक । कोनो  
कार्यक्रम आ नीति नहि रहैत छैक ।

निम्नलिखित वर्षों जलन मैथिलीक  
कोनों सेक करत छथि तँ ओमेराशा  
कोनों देवी नामाकर आबा करैत छथि जे  
आकाश तँ कोनों अन्तरा उतरसाह आ  
मन्त्रि मे हूबल मिथिला मा हैभैतें के  
उत्तरि रैनह

[illegible][illegible]

एषां प्रथम  
नदि  
क्षेत्र  
म  
प्रथम  
नदि  
क्षेत्र  
म

अखिल भारतीय सामाजिक दलक सदस्य  
छद्म, बन्ध मिथिला आ मिथिलावलक  
बात करब राष्ट्रद्वारा बुरसल आबैत छैक । ते  
बाधिर राष्ट्र दुनका उपैत खैरत छनि ओ  
मिथिला-मैथिलीक बात ठार पर नाहै अनेत  
छथि । कोनो प्रकारक गर-दुष्या पढ़ला पर  
ओ आकाश मे मिथिला क माला बन्ध  
लागेत छथि ।

मिथिलाक लोक संगठित नहि अछि,  
तँ मिथिलाक कौनो नेता नहि अछि ।  
एहि ठामक लोक अने एम० एल०  
ए०, अथवा एम० पी० अथवा मिथिलाक  
कोटापर बहाल मंत्री तँ जाहिना कहियो भेट

करते अर्थात्, मैं अपने व्यापक, स्थायक, रा-  
 करते अर्थात् अपना कर्मो वैयक्तिक स्थायक  
 पूर्विक लेख तलाशी करते अर्थात् । कर्मो  
 नीकनी लेख, कर्मो वरदी लेख सेहो पैरवी  
 करते अर्थात् । कर्मो में भगदा प्रेक्ष, तकर  
 बदली लेख सेहो पैरवी करते अर्थात् । एहन  
 लोक जे पटना-गडडी बेनी काय दोहेत  
 अर्थात् । साल मे देय-बीच हजार समार-  
 दहने अर्थात् । ह लेख कोनो रामक बिकाल  
 लेख कर्मो पैरवी तहि करेन अर्थात् । एहेन  
 लेख कोनो पैरवी तहि करेन अर्थात् । एहेन

[illegible][illegible]

अने नाई नैयतीक सांगितल्ल्या, हीं चव केवळ  
असवादांत असपादेंयिक । ओलां-हमरा सगें हें  
जे आदें नें कालि ह्मण्ट अल्लाह न्यायः नव अंत  
न समल न्यायोवित अदिकार नसत सयरे ।

— अ.प्र.दत्त



करऽ पढत भार विफलता अडफस्ताक कारण  
ताकऽ पढत ।

कह पड़त भार बिखलता अमरालका कण  
ताक पड़त ।  
एहि तथ में अथिकार नहि केह  
बा सके अ अना के बालक कदनिहार  
मैथिल समाजक तबे में पंचांग प्रतियोग  
मैथिल मित्र नहि भ सके छथि । अतः  
इह, दुनका लोकनिक माना में दुनका  
लोकनिक निहित सत्य स-प्रवाक  
काकाका हव सय के दोहरा पर आरोपित  
करवाक अधिकार की भय सकेह । इस  
अपन व्यक्ति अथकक साधार पर  
कदाक साहस कह सकै छी जे मिथिला-  
मैथिल भार मैथिली इतर सुदराय अछि  
जे सुलौटा अना भय नहि रहै अछि—  
ई सुदराय मैथिल अनाक सय बग मे  
निवमान अछि बारि को हुनक सुदराय हो  
अमकीनी हो, वाकरी पैसाक दाय हो,  
विकल सुदराय हो । राजपुस वा रावनी-  
विज हो । जे निमल भाषे देखल बाय तें  
आपुनक मैथिल समाजक सुदराय परि-  
वर्ति देखबा मे आभेति जे शूद्रता सुविधा  
बाती हव अथवावारी भय गेलेक अछि  
ककरा अना पर विवाह नहि छैक  
ककरा अथन माटि-पति । अथन संहति,  
अथन भाषा आर सुविभाक प्रति स्नेह  
नहि रहि गेलेक ममलक बातें कोन । गाम-  
पर हें छहस मांगना । बार छिदिआल  
मैथिल समाज केँ महामारी इतर स्तर पर  
प्रतिक फलेने छैक अ आँ समय देत एहि  
समय अथार नहि केह लेलेक तें शक  
पणिमन भोषल नहि मेह । गाम-पर  
अना-दमा आउ, ककरा-  
अमरालका आर समराली केँ ओ आन-पर

अध्यात्म नाहि मेळत तें जि श्रवण लेव मंडो ।  
 कोतो समया छेक । लेखिहार साय छपि  
 काय से हीन । मयाम-लोपि-रागाज-  
 वामनामो-मोक्षमय से वासख । चकती येता  
 भवभंगना । असने से अल्पना । धुनिअ-  
 व्यापारि-समाक लेख गीत-लेख । हात मे-  
 उजार-चटवक अतीक कोतो संमये ने-  
 छेक छेक । शिवल-श्रव के संसार-शोर-  
 पापना । उलसव ये-हावाल आला मया-  
 येने ने बतो कवक लेख केतो खलने नहि ।  
 ओ । तड भय-अछे मिषाक-होहार-  
 डाक छोक फळा मे शिवा आ-मनि-  
 चिओने मिषाक-चोया भाक, कळत कोतो  
 होयल । कोतो चव नहि मेळत मया तयो । ये छिणीक

सुखध्यायल अछि । तँ मिथिला के भूभाग  
पुष्पक राय भोवका मुगमसीका देखा-  
ओल जाउक वा मैथिली के बिहारक द्वितीय  
राज-भाषा नैबलक आन्दोलक आवहान  
करल जाउक वा मिथिला के औद्योगिक  
परिष्कार दिअक लेल कानूनि नियुक्त राज-  
ओल जाउक, मैथिल समाज ताबधुन  
नहि आगत पाबत भरि ओकरा ओकर  
‘समस्या’ भा ‘अभावक’ शान नहि करावाक  
जागत छैक, हहि प्रकार आन्दोलन सँ  
सम्बद्ध स्थायी तल समक निश्चित नहि  
करल जात छैक । मुदा एहि समस्याक  
समाधान हब ओलेक संकल नहि । हमरा  
समक समाज नरल ऐब समझा अछि-  
नेतृत्वक - संकल नेतृत्वक अभाव से निश्चि-  
छाक जन-मानसक मोनल दुई लेक  
अछि ओकरा तोय आ सामय छुड़िया  
लेक अछि - अवस्थाक छेक सँ शक मोन  
नब के जाउभाग ... छिदियाल सौय  
मार सामय के बरो ई कल प्रकृति कनकक

आत्मपूजा के मैथिल के मिथिला राज्य  
सम्बन्धी दोषों का 'नोट' बतानेवाला महा-  
पुरुष सभक तिरछार कवाक - स्वयं  
रानील द्वारा शान मे पुनः प्रवेश-  
लेल मैथिल जनताक समक्ष पसारल गायी  
जाल के छिन भिन कवाक ।

मुद्राई काय सम के कत ! मैथिल  
समाज कोष काटि रहल अछि । राजनीतिक  
सम प्रारंभ भऽ गेल छथि । राजनीतिक दल  
सम मात्र आगत शक्तिवाक मयाल मे वस्ति  
अछि, बुद्धिजीवी वर्ग अन्तर अन्तर  
मेव सहेल मे कतल अछि, अन्तर  
एकरा निराल के ॥

देवक अमुनिक परिवेष्ट भे अ-पिक  
रक्केनिक वा कौनो प्रकाशक सम्पादक  
सम्पादन सकार द्वारा साक्षर बरि नहि  
कैठ गारठ छेक यावत् थरि सम्पादक सम्पादक  
हुमठैत भऽ सम्पादक ह्ये सकार सकार  
नहि राखब जावत छेक -सकार पर प्रवर्त  
वा भयलब ह्ये दवाव नहि देव  
छेक। भाई इच्छा अछि जे यदि मन  
कायक निमित्त कसो के इच्छावाक वा  
अनिच्छा से कौनो के कोनो राखतिक छेक  
पर नियर कहि पवत छेक कारण राज-  
नैतिक छेक मन हरि राज छेक नरान  
संगठन कहत उपर छेक -सम्पादक ह्ये  
छेक भारतीय राजनीति मे राजनेत छेक  
सक छवि याव विकृति भऽ गेके अछ  
तथापि ई मम कसे अछि छेक सम्पाद  
भऽ रहके अछि। हुनरा सम्पादक  
तभीक प्रमत्त देव देव ह्ये ह्ये अभावत  
थरि सेह अछि ते कौनो कौनो के कौनो  
-सकार ह्ये अछि पवत वा-कौनो दून  
राखनिक छेक संगठन काय पवत अछा  
छेक मिथिला मे छेक मे येलक सम्पाद  
तथापि होइ दियक प्रतिष्ठित होइ  
ते लोक पार्टी कौनो मे मे कोनो पत्रक  
आगा करव कय हेत लाई ओ इच्छावाक  
कमि स ह्येन वा जगदीशजी मे वा भय  
कने छेक -कौनो छेक -कौनो पत्रक  
वा पत्रक नहि छेक अछि भऽ अछि  
रखके अछि सम्पादन मे अछि अछि  
छेक -सम्पादक नहि कऽ  
अछि अछि कसो पार्टी अछि सेह  
अछि अछि सम्पादन मे अछि अछि  
वाक छेक प्रणामस कर रहके अछि  
तखन मौवल बागमरी पार्टी सभ से भाई  
राम सम्पादारी पार्टी (सी०पी०) भाई  
के घृणित चरित्र देखि होके सम्पादक  
सम्पादारी विचार धारा से सेहो आशाति  
उखल होयव छावके अछि -तथापि दून  
पक्षा एत बागमरी पार्टी सभ छेक  
निष्ठापूर्वक आन काय कवाक प्रयास  
छेक -सकार जन सम्पादक मेहोदय  
आ आ ओकरा से कबल जा सकैछ। से।  
एहन विषय परिस्थिति मे लोकब भय  
हम हम कोनो दून पार्टी विरोध होवा  
कली तथा ओकर संग दियेक ते हमार सभ  
के बहुत किछु सकलता भेह सकैछ। मिथि  
लोक समिन्धान मे भक्तिकोदिक कऽ उदाहर  
के भिन्नात्मक छव मुद्राव के जगह मे  
छे हमब निष्ठापूर्वक कोनो निष्ठावान पार्टी  
के धर्याव कसिक ते रहल काय आ  
जरी भऽ सकैत अछि मुदा ए सभ काय  
से पूर्व हमरा सभके एहि बातक लोका  
सतत राखव पवत जे हमार सभक चनाक



**बनबर्फ**

मात्र अपना समक भारते या मे नहिं  
अविष्ट संपूर्ण विषय मे अतः-कतः शासनक  
लेख कर्ताधिक पदार्थ के स्वीकार कण्ड  
गेलक अछि, ओतः इतल सार पर दू या  
चीन समान रूप परिकल्पित होत छै -  
बान्ता इतल प्रसन्न विनिम प्रकाश 'भाग'  
मार' सकारा द्वारा निःशेष रूप देल गेल  
किमिय किमियक आन्धानल । परिणामक  
मुद्रा कएला पर कतः कम-बेदा भनि भऽ  
सकेछ मुद्रा 'भाग'क 'स्तार' आ सकारा  
'आन्धानल'क 'प्रकृति' मे तबन समानता  
भेदा । अन्धाक भाग पर सकारा, आन्धानल  
सनक समीकरण केँ हल कएला मे आन्धा,  
प्रधाननन्त सभयें ब्यस्त देहना मे आबोत  
मुद्रा समीकरणक दूर पक्ष मे मात्र संवेक  
बुद्धि या होत देलख गेलक अछि, आर  
क्रिष्टा या सरेत छैक । ई 'भाग' आर 'आन्धानल'  
चोग-बुझी कोनो नव रथ वा चटना नहि  
छियेक बलू सानिके केँ नव आबि रखेक  
अछि परन्तु इहि मे एकटा बात तत्परक  
छैक, ओ ई अपवादिल / अद्ययमक मांगक  
लेख देल गेल आन्धानलक निःशाला केँ  
स्वयं क लैन छैक तँ ओ देतालिदा पर  
उतरि अरेत छैक आर तलन ओकरा ये  
किन्तु प्राप्ति भऽ नाउक ( कुकुल काष्टा  
स्वल्प ) ओ ओहि मे तुमिक अनुभव कऽ  
छोत छैक वा दुष्कारि देल गेला पर अपन  
नागरि सखा सखि जात छैक मुद्रा अमय  
एवं सभ्यक औचित्यपूर्ण मागक निमित्त  
देख गेल आन्धानलक अन्धेखनाक पल्लवस्व  
रम्यता, विस्मयक रूप धारण कर, जेत  
छैक - केष्टा कुक्कुट मे मूर-रचना प्रारंभ  
भऽ जाइन छैक, ई प्रस्था देतिहारमक  
मात्र भिन्न कएला गकरल नहि जा सकैत  
अछै । अंजान एहि तब की सेहो अस्ती,  
कार नहि देख जा सकैछ जे आदिम /  
अमरयक मभरा मांग नाजायमे होत छैक  
वा ओकर कोनो औचित्य नहि रहैत छैक  
कन संकाय एवं प्रदान-तय आदिछ ।  
अमरय लोक सभक यथि केँ धीने रहैत  
छैक, तेँ ओकरा समक जायजो मांग केँ  
लख देत छैक - ओकरा समक देख गेल  
आन्धानल पर ध्यान नहि दैत छैक - ते  
अविष्ट भाग देखैक आनि देखैक ।

उत्प्रेत, परिशेष मे अँ हम सम  
अन-अन शिवाक पर्यवेक्षण करी तँ  
पलक हेतु ई निर्णय करवाक लेल प्रायः  
समके धमकि जाय. परत जे बहुतत हम  
सम कोन गोल हँ, सरसिनि छी? अर्थात्  
अवयव/आदिजक गोल सँ या समय/  
समयक गोल सँ? ओना हमरा अनेत  
मैथिल सँ अवयव/अर्थाजि भइये नहि  
सकेत अछि? ? ? ? आ जँ हम सब  
दोसर गोल सँ सम्पर्कि छी अर्थात् अर्था-  
केँ सखन/समय बुझैत छी तँ मिथिला-  
मैथिलीक सर्वांगीन विकासक लेल न्यायो-  
चित एवं औचित्यपूर्ण मार्गक पहन भीषण  
उपेक्षा किछक भउ रहल अछि? हम सम  
अधिकांशक किछक जा रहल छी ?? एहि  
तथ्यक अवहेलणक लेल हमरा सम केँ सख-  
सँ पढ़िते अपन-अपन आत्म निरीक्षण  
( Self Introspection ) करऽ पड़त  
पछाति अपन मार्गक औचित्यक विवेक्षण

कस्ट पड़त आर विप्लवता अवपल्लताक कारण  
ताकऽ पड़त ।

[illegible]

इस कड़वाक आशय ई कथमपि नहि  
जे हमरा सभक समूह कोनो प्रकारक समस्या  
नहि अछि । - गर से बाहर भरि विभिन्न  
प्रकारक समस्या सब सुरसा जकाँ मुँह बोले  
दाद अछि । भारत सन अब्दु विकसित देश

[illegible]

आवायकता छै नै येल के मिथिला राज्यक  
समझा देला कऽ 'गोट' बटोरलस। महो-  
पुष्य अयक तितकार कबक - त्यस्तिल  
राजनीतिग द्वाँरा' शासन नै पुनः प्रदेशक  
छेल मै'बल जनताक ह्मस पसाल माय।  
बाल के छिन्न-भिन्न कवाक ।

मुद्राई काय सध के कल । मैत्रिक  
समाज काय कल । शल अल । राजनीतिक  
सम भ्रष्ट भट नेल छैय ॥ राजनीतिक दल  
सय माय शासन हियनक मयाय मे गल्ले  
अथि, बुद्धजीवी योग अल्लदरा अल्लदरा  
गोल बना एक देश के पठोदकक दाय  
पेय नैकसा मे गल्ले अथि । अल्लतः  
एक, निलत की भः ।

देशक अधुनिक परिवर्द्ध ने आर्थिक राजनीतिक वा कीनो प्रकारक समलक्ष समलक्षन सरकार द्वारा ताबल अछि नहि केह जाइत छैक यावत और समलक्ष समलक्ष संगठित भऽ कमजोर रूपेँ सरकार समलक्ष नहि राखल जाइत छैक - सरकार पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ दबाव नहि देख जाइत छैक । आर्य प्रत्यक्ष अछि छैक इच्छापूर्वक वा कायक निमित्त जनता के इच्छापूर्वक वा अनिच्छा सँ कोनो ने कोनो राजनीतिक दल पर नियंत्रण करि पड़ैत छैक काय राजनीतिक दल वन रहि सकल लेख पारल संघटन कहल जाइत छैक - संसद, इंडियन एके । भारतीय राजनीति ने राजनीतिक दल अछि समक छवि यथाय विवर्द्धित भऽ रहेक अछि तथापि ई कम कार्य ओकर समक मायसे भऽ रहलक अछि नै, इमरा समक असत समलक्षक प्रसन्न वेलेलेख सभस्य समक असत पूर्व सेल अछि नै, कोविद, कोनो ने कोनो दलका सभस्य सभस्य महत वा कोनो दलने राजनीतिक दलक संगठन कस्य पदव अछि लेख सिधला संसद मे राजनीतिक समलक्ष नैतिक होक, देशक प्रातिष्ठन राजनीतिक कार्य किंमयी कोनो प्रकारक आनर कस वषय हेत लाहै कोनो प्रकारक काम स होत, वा जनजीवनीक वा असत काम के । लेखक - सौधरी चरम सिद्धि व्यक्तित्वक नीति सँ आनरा भऽ छल्यो रहलक अछि सभस्य जनता नाहीं अछि विदेशीजीक चरणगुहकाम परलमा, क ओकरा अछि जनता नाहीं असत भूतिय राजक लेल प्रणयाम कऽ रहलक अछि तालत भौचल सामांयरी पावै सम से भार तीय सामांयरी पावै ( सी० पी० आर ) के मृणित चरित्र देखि लोक समकें अस सामांयरी विचार धारा सँ सेहो असराजि उलल होमय कानेक अछि तथापि ई एकटा दलत सामांयरी पावै सम छैक के निष्ठापूर्वक असत कार्य केलक प्रयास करैत छैक - जनता जन समर्थन भेटैक तऽ केहू आन ओकरा नै कहल जा सकैछ । ते पछन विषय परिवर्द्धित ने साक्षात् भय सँ सम वन कोनो दलत पावै विषयक जुवाव कसरी तथा ओकर संग दिखै तँ इमरा सम के बहुत किछु समलक्ष भेट सकैछ । मित्रिय लोक जनतावतक क भक्तोपदि कऽ उदाहरि ने, सिधलाक छाप समर्थन क जनान ने जे दलत निष्ठापूर्वक कोनो निष्ठावान पावै के सदस्यो करियेक तँ दलत आय वार जवरी भऽ सकैत अछि मुदा ई सम कस्य सँ पूब इमरा समकें एकरि बातक समलक्ष तलत राखल रहलक । एकरा समलक्ष



शिक्षा मंत्रीक नाम पत्र

निहार सरकार, परदा ।  
पटना में अपनेक निवासाथान पर अपने स  
मै- के मरे = अपने

अधरि मातृभाषाक माध्यम सं शिक्षाक अधि-  
कार सं विधान स्वीकृत छै के आ इ अधिकार  
सबैक छै, नहिने अछि, बरन एहि विधानक अन्त  
दखैत छै: पाठ्य से अतिव्यवहार होत अछि।

अन्तर्गत अने ठेकेदार यांच्या वतीने  
वर्ग रेटा स्थापित प्रेक्षाक उपराती व्हार  
सकाकर नैमिषी विरोधी नीतिकारणे  
चंद्रोप अधिकार अ अन्तर्गत व्हार साकार  
लामसे संकेत ( १२५६ ) द्वारा पुढे  
मेरे वर लिखिते छुंयत मुठ्ठान

मैथिली भारी छात्र अत्यंत धर्म मायुल था  
 पवित्र अधिकांश सँ वंशित राखल गेल अछि । जेना कि हमरा अप संख्या- ११० रा०  
 केँ निर्देश देबाक कारण केने छलियनि ।  
 एकरा कार्यान्वी मान्यता समर्थि देखल गेल छल द्वारा संयुक्त भारत  
 दिनक २२ जून ८४ द्वारा संयुक्त भारत

नेपाल, उचित करवाइ दिए राष्ट्रिय प्राप्ति परबन्ध वालािकता इपर ठक ज माव पठिअ आ दोसर बाग मी मैथिली मे उपलब्ध छे कोस बाग भरि मैथिली आ देश बाग ( एन संख्या - ३६५-पी १९७३ )

३३३ हिदीक भाषामें पढ़नाइ १५ कौक अमः  
यिनांक ३५-५-५५

[illegible]

आ त्कर अयिमावक्क मैथिली माध्यम के मैथिली भाषिक मैथिली

नहि चूनुत अछि । त आबसक छुन सकुन

अनतिविलास वर्गों काठ घरों का  
रामक १५०-

१३  
१४  
१५  
१६

一、

10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044

[illegible]

$\frac{1}{2}$   $\frac{1}{3}$   $\frac{1}{4}$   $\frac{1}{5}$   $\frac{1}{6}$   $\frac{1}{7}$   $\frac{1}{8}$   $\frac{1}{9}$   $\frac{1}{10}$   $\frac{1}{11}$   $\frac{1}{12}$   $\frac{1}{13}$   $\frac{1}{14}$   $\frac{1}{15}$   $\frac{1}{16}$   $\frac{1}{17}$   $\frac{1}{18}$   $\frac{1}{19}$   $\frac{1}{20}$   $\frac{1}{21}$   $\frac{1}{22}$   $\frac{1}{23}$   $\frac{1}{24}$   $\frac{1}{25}$   $\frac{1}{26}$   $\frac{1}{27}$   $\frac{1}{28}$   $\frac{1}{29}$   $\frac{1}{30}$   $\frac{1}{31}$   $\frac{1}{32}$   $\frac{1}{33}$   $\frac{1}{34}$   $\frac{1}{35}$   $\frac{1}{36}$   $\frac{1}{37}$   $\frac{1}{38}$   $\frac{1}{39}$   $\frac{1}{40}$   $\frac{1}{41}$   $\frac{1}{42}$   $\frac{1}{43}$   $\frac{1}{44}$   $\frac{1}{45}$   $\frac{1}{46}$   $\frac{1}{47}$   $\frac{1}{48}$   $\frac{1}{49}$   $\frac{1}{50}$   $\frac{1}{51}$   $\frac{1}{52}$   $\frac{1}{53}$   $\frac{1}{54}$   $\frac{1}{55}$   $\frac{1}{56}$   $\frac{1}{57}$   $\frac{1}{58}$   $\frac{1}{59}$   $\frac{1}{60}$   $\frac{1}{61}$   $\frac{1}{62}$   $\frac{1}{63}$   $\frac{1}{64}$   $\frac{1}{65}$   $\frac{1}{66}$   $\frac{1}{67}$   $\frac{1}{68}$   $\frac{1}{69}$   $\frac{1}{70}$   $\frac{1}{71}$   $\frac{1}{72}$   $\frac{1}{73}$   $\frac{1}{74}$   $\frac{1}{75}$   $\frac{1}{76}$   $\frac{1}{77}$   $\frac{1}{78}$   $\frac{1}{79}$   $\frac{1}{80}$   $\frac{1}{81}$   $\frac{1}{82}$   $\frac{1}{83}$   $\frac{1}{84}$   $\frac{1}{85}$   $\frac{1}{86}$   $\frac{1}{87}$   $\frac{1}{88}$   $\frac{1}{89}$   $\frac{1}{90}$   $\frac{1}{91}$   $\frac{1}{92}$   $\frac{1}{93}$   $\frac{1}{94}$   $\frac{1}{95}$   $\frac{1}{96}$   $\frac{1}{97}$   $\frac{1}{98}$   $\frac{1}{99}$   $\frac{1}{100}$

$$\begin{array}{ccccccc}
\text{Average } \bar{X} & = & \frac{1}{N} \sum_{i=1}^N X_i & & \text{Standard Deviation } S & = & \sqrt{\frac{1}{N} \sum_{i=1}^N (X_i - \bar{X})^2} \\
\text{Standard Error } S_{\bar{X}} & = & \frac{S}{\sqrt{N}} & & \text{Coefficient of Variation } C.V. & = & \frac{S}{\bar{X}} \times 100\%
\end{array}$$

১৯৬৩-৬৪

एक परियामक सम नवः एक संग नह भोकरा संग छल कुले छल छिनि

होइत छुं के । वंशानुगत के जो कि जिकि होइत

उक्त से हम नहि मानत छी जे

सन् रायवीर

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कुल्लामनी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

ज. हमर शान वा खानेक पराम. यह तकर आर शोषण होइत छुके ज.

छोट कीछ, ते ज भतीन्द्रियं, छ के, तकरा  
 दासक अइ ओ दसक चरइत आ

व्याह सागरक असंख्य लहरें उठें। के  
निरपराध अहिल्या, शातक पक्ष आ विपक्षक

छे के १ खावी एक बातक पता अछि समरा  
 आही के पहन नहि बुझि नैछ, हजुर नाह  
 गाय  
 छे के २ खावी एक बातक पता अछि समरा  
 आही के पहन नहि बुझि नैछ, हजुर नाह  
 गाय  
 छे के ३ खावी एक बातक पता अछि समरा  
 आही के पहन नहि बुझि नैछ, हजुर नाह  
 गाय  
 छे के ४ खावी एक बातक पता अछि समरा  
 आही के पहन नहि बुझि नैछ, हजुर नाह  
 गाय  
 छे के ५ खावी एक बातक पता अछि समरा  
 आही के पहन नहि बुझि नैछ, हजुर नाह  
 गाय  
 छे के ६ खावी एक बातक पता अछि समरा  
 आही के पहन नहि बुझि नैछ, हजुर नाह  
 गाय  
 छे के ७ खावी एक बातक पता अछि समरा  
 आही के पहन नहि बुझि नैछ, हजुर नाह  
 गाय  
 छे के ८ खावी एक बातक पता अछि समरा  
 आही के पहन नहि बुझि नैछ, हजुर नाह  
 गाय  
 छे के ९ खावी एक बातक पता अछि समरा  
 आही के पहन नहि बुझि नैछ, हजुर नाह  
 गाय  
 छे के १० खावी एक बातक पता अछि समरा  
 आही के पहन नहि बुझि नैछ, हजुर नाह  
 गाय

पाचक भेट सधाइ, सधल सम कर्छा माइक

बदर भा दूरा-मन्त्रित-शा-सप-मर-श-प्र-द-इ-वी, बुद्धान-वैशाल-स्टी-  
धी-अन-द-भा

वर मा दास्यन्मदितुं दयां नाप्यनयत् आठ प्रिन्स, ३२ वी, बुलावन वेशाल स्ट्रीट,  
श्री अनन्दन भा

[illegible]

100

Journal of Management Studies 45(6) 799–820



# रामनि रचना

वर्ग-१ अंश-१ अक्टूबर, १९८१

मूल्य-प्रवास पार

## सम्पादकीय

बालचन्द्र विजयवर्धन भाषा  
दुहु नहि लगार दुजन हावा  
ओ परमेवर हर खिर सोहर  
ई 'णभइ नाअर मन मोहर  
देसिल बयना सम बन मिट्ठा  
ते तइलन करमो अवहट्ठा

### विद्यापति

२५.१६ स एव वल पूर्व, जखन कि भाषा चैतना नामक वखु कम सं कम भारत मे नहि छउ, ताइ समय मिथिलाक सन्तान कविपति विद्यापतिक ई घोषणा निओते हमरा लोकनिक लेल गर्वक विषय थिक। कइबाक प्रयोग्य नहि जे आगा बलि केँ सूर दुखी आदि विभिन्न कवि केँ अपन भाषा से काव्य रचनाक प्रेरणा एतहि सं प्राप्त भेलनि। विद्यापति बाइ हट्टा आ विद्यापति 'गं ई घोषणा केलनि, तहिना एकर पाछन सेहो आ तकरे परिणाम मेरु जे मिथिलाक भाषा-साहित्य चन्द्रमाक आलोकहि कर्को देश-कालक सीमाक अतिक्रमण करवा से संकल भेल, मैथिली मे काव्य रचना परम्परा नेपाल सं आलाम भरि आ उईसा सं बंगाल भरि बनि गेल, बाइर सौच कहीक रूप मे नीचम शताब्दीक बंगालक 'मानुषिदेव पदावली' थिक।

ई कवकवि विद्यापतिक जनवारी चैतनाक परिणाम छउ जे जनगणक कथा व्यापक जूनी साहित्य मे मेरु, जनभाषा साहित्यिक भाषाक गणना प्राप्त केरक। इहए कारण छउ जे विद्यापति जनगणक कंठधार बनि गेलह, हुनक रचना मात्र हमर सामाजिक सर्वात्मिक नहि देनन्दित जीवनक अंग बनि गेल। ई विद्यापतिक लेखनी शक्ति फल छउ जे नवदोलक वैयक्तिक शक्ति केँ परास्त केलक आ मिथिलाक स्वाधीनताक रक्षा केरक। त विद्यापति मैथिलीक पर्याय बनि गेल छथि।

खेदक विषय जे आइ दुन मिथिलाक माथ पर दुर्दिनक मेघ मरहा रहल-ह'। मैथिली तर राहुसयल भेल छथि। मैथिल सन्तान अवचेतनास्था मे पड़ल अर, साहित्यिक आवाज केँ छोड़ि (एवानुवृत्ति मे) छागउ छथि आ शिवखिंदक स्थान पर कतेको नवदोलक बननि गेल ह'। एहना अवस्था मे खता आर एक नजि अनेको विद्यापतिक जे नवचेतनाक शक्ति फलक सूर्य, मैथिली आराधना क पुनर्जागरणक सूर्य, नवदोलक कोल दाजि मैथिली केँ राहुसयल क सूर्य आ आकाश केँ मेयसुक्त क नव आओक पवारि सत्ताथि। 'देसिल बयना' हुनकेँ स्वागतार्थ प्रतीक्षारत अह'।

### प्रसिद्धि-पूजा

भगवती दुर्गा शक्ति प्रतीक छथि। आसुरी शक्ति प्रवृत्तिक विनाश आ देवी शक्ति प्रवृत्तिक प्रतिष्ठाक निमित्तहि दिनक प्रादुर्भाव भेल छउ। ई अमन काम मे सफल भेल छउह आ तें दुनो सं हमरा लोकनि उरव मनमेव आबि रहल छी। शक्ति स्वरूपा भगवतीक पूजावंता करत आबि रहल छी।

भगवती दुर्गा मातृरूपा छथि। माइक रूप मे दिनक पूजा-ध्यान हमरा लोकनि करैत आबि रहल छी। माँ अरन नेना केँ खिनेह करैत छेक, शक्ति-सदबुद्धि प्रदान करैत छेक, हमरो लोकनि तकर आकांक्षा रखैत छी।

आब प्रश्न उठैह जेकि हमरा लोकनि एहि पूजाक अधिकारी छी? पूजाक निमित्त जे पवित्रता, हट्टा, सत्यनिष्ठा आ समर्पणक भावना आवश्यक—से हमरा लोकनि मे अह'। रामायणक अनुसार मैथिली केँ रावण अपहरण क के ले गेल छल। मर्यादा पुरुषोत्तम राम प्रण उनहननि जे एहि काजक निमित्त रावण केँ उचित शिक्षा द क ओ मैथिली केँ आपस अनताइ। रामायणक कथा संग मराठवि निराशक 'राम की शक्ति पूजा' बना कथा जोड़ि दी त आर नीक होएत। तदनुसार राम अपन प्रण केँ पूरा करवाक निमित्त शक्तिक पूजा केलनि, पूजाक समय हुनक फुलझाली सं एगो फूल लिपटा म गेल, बकर अर्थ भेल पूजा मंग भोगाई वा अर्घुन रहि गेताइ। रामचन्द्र कनिजो विव-जित नहि भेलाइ, ओ नहि बिखरलल जे ओ कमलोजन छथि आ तें सुलत अपन ओलि

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानबिब बिनु मिथिला धाम  
हाहि-बारि सुहाइ करव-इप  
विद्रोही मिथिलाक खान

—रामलोचन ठाकुर

## बाढ़ि : अइ नदिया केँ पैह बेबहार

मिथिला मे एक बड़ प्रचलित कहवी दहावन आ माल-बाल केँ भविष्यवत छेक जे 'देवी दुवल बातक। कारण कोथी एखनहुँ मिथिलाक छेक अभिधाप-मिथिला एकर युक्तमोगी अछि। बैर बेरक बनले अछि। एहि बेरक बाढ़ि सं ओना तऽ समस्त मिथिला प्रभावित भेल अछि प्रकृतिक विपर्यय एकर रीढ़ कमजोर कऽ देने छेक। मायवादी मिथिला आर बेटी भायवादी बनल जा रहल अछि। एहि वर्ष पड़ने रौरीक प्रकोप छेलेक आ समस्त मिथिला घू घू कऽ बरि रहल छल। खेत सबने लज्जहाइत नीया-वाछि-बरि गेलक। घर खाली आ बाहर साफ। बहल वर्षा होमय जालेक तऽ लोकक मन मे हक लडाइत रहल आ ओहव अपन सम्पूर्ण शक्ति सं चाल-बाज मे लगि गेल छल। ठीक एहने समय मे बाढ़ि हलेक आ लोक त्राहि त्राहि करय छागल, ओकरा समने रौरी-रौरीक समस्या चकमाउर देमय जालेक।

मिथिलाक मरिखकेँ कोनो एहन अंचल हेलैक बाहिठाम नदी नहि होइक। एहि देशक प्रायः समस्त ग्रामांचल नदीक परि-सर मे बसल अछि। ओना तऽ नदी प्राकृतिक समस्या थिक आ खास कऽ ओहि देशक हेतु बाहिठाम लोक-जीवन दुषि पर आधारित होइक ताहिठाम एकर आर देवी सूर्योपनिता आ मरुता छेक। पंच हरो तहिना सत्य जे संप्रतिक हरो विपत्ति सेहो रहैत आयल अछि। सम्पत्तिक सुरक्षा आ उचित उपयोग नहि पओने विपत्ति क दारल नहि आ सकैछ। कृषिकाल मे ई नदी सम भरि जाइत छेक आ उछल्य लगैत छेक आ संगहि ताण्डवदृश्य करय लगैत छेक। ई दृश्य मिथिला वालीक हेतु केहन विनाशकारी भऽ जाइत छेक तकर प्रत्यक्ष रूप एखन बहुतेक टाम मेटि सकैत अछि।

मिथिलाक पंच पंच नदी मे गंगा, कोशी, कमला, बलान, गंडक, करै, बागमती आदि अछि। बाढ़ि मे एहि नदी सबहक भूमिका रहैत छेक बाघ बोन मे लागल-बनल केँ डूबावन, गाम-घर केँ कनिजो विचलित नहि भेलाइ, ओ नहि बिसरलाह जे ओ कमल नेत्र छथि आ तें दुलत अपन आसिद्धि बहार कम भगवती पर सौच पुनक रूप मे चढैबाक हेतु उबल भेलाह। भगवती तेखन प्रकट भेलथिन विषय पर प्रदान केलथिन।

आइ फेर मैथिली व्यथोक वाटिका मे बन्दिनी छथि आ हम चारि कोटि मैथिल सन्तान चुपचाप हाथ पर हाथ घेने बैसल छी। कि हमरा लोकनि माइक दूध नहि पीने छी? कि हमरा लोकनिक देह मे शोणित नहि? कि हमरा लोकनि बरिछी जे बंगला देश, अरुम, इस्लामिक, फिथीलाहन वा आयलक गर्बन नहि हुनाइ पड़ैह? आ कि हमरा लोकनि ननु सक छी? आ बं से छी त की अधिकार अह शक्ति पूजाक? आ-ब से नहि छी त आउ—एहि पवित्र आ शुभ अवसर पर हमरा लोकनि अपन माय भाषाक उद्धारक शपथ ली तेखन शक्ति पूजाक सार्वकता आ उससक समर्थिता।

चि-ग-इ-जि-पर-चा-नी-मे-हा-ए-क-न-मके-क्षण-आ-बाक-उठल-मलिन-पहिने-।



## कलकत्ताक रिक्सा बाहक

ऊँचि प्रधान मिथिला देश मे अमरक महत्ता आदिह काल सं हुकल गेल-ए आ मात्र बुकले ठा नलि गेल-ए एकरा नव पेव स्थान देल गे-ए । ई गोरव मिथिले देस केँ टा छह जे माथ पर राजकुट आ हाथ मे लगानि देने कुनू राजा हस्वाहि केने छथि । राजर्षि बनककेँ हटान्त इतिहास मे अन्तीम आर । तँ मिथिला वन बान्य सं मरु-पुरल छह । अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नलि छन्ह । ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छल । एहए कारण छह 'जे' एहिठाम विद्याक ओतेक प्रसार छल, ज्ञान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास म सकल । केँ नलि जे-ए जे भारतीय र गोटे दर्शन मे चारि गोटे एही श्रूमिक देन सिक । पञ्चात आनि केँ स्थिति बदलि गेलैक । लोक आम केँ अबल्लाह नजरिने देखल नामक आ अमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक चोकक रूप मे हुनक बाय लागल । अमविमानक आधार पर बनल समाज व्यवस्थाक स्वयं-सबल देर मे जेग वानक गहरी लगी गेलै । प्रज्ञाक कथन जे 'पुन आरम्भक आधार पर' हम चारि वर्गक विद्वजन कहल-ए' विस्मय देल गेल आ तकरा स्थानपर गहलाम युद्ध सं आरक्षण आ नहि सं राक्षस आदि जनजाक कथा केँ मटि देल गेल राजर्षि जनकक हर बौद्ध-वाक काज केँ नून देल गेल । मियक बना देल गेल । तथा कथित उँच वर्गक हेतु आनि लगानि घेनाद पाप म गेलै आ एही-ठाम सं मिथिलाक अधोगतिक इतिहासक आरम्भ होइ-ए ।

अम केँ देस हुकनगर तथा एहि सं विप्लव भेनाह विलासिता आ संवयक प्रवृत्ति केँ बन्म देल आ ई मष्टि पुनः घोषण प्रवृत्ति केँ बन्म देए । स्वयन्तः अमिक वर्गक घोषण आरम्भ भेल । समाज दू वर्ग मे बँटि गेल—शोषक ओ शोषित । एक दिव शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लागैक त दोसर दिव शोषित अमिक वर्गक अभाव यातनाक नीच । एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाइ स्वाभाविक छह आ जन-बान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नवन दल्य प्रारम्भ भेल ।

एक दिव जनसंख्या वृद्धि आ दोसर दिव उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानु-दिन अभाव ग्रस्त होइत गेल । खेती पर आधारित रहितु ओइ मे नव-नव तरीकाक खोज उपयोग नहि कइल गेलैक । फलने केँ करैत ? खुसामी अहरी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दोसर दिव अमिक वर्ग शक्तिहीन छह । ताइ पर सं रोटी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लगलैक । बीविकाक अन्याय्य साधन रहलैक नलि । एहि यंत्राणुगुह मे मिथिला

मे कलकारलानाक विकास नलि म सकल । एकरो कारण मैथिल-जातिक अवचेतनता तथा घुणित राजनीति आ नवच मिथिलाक राजनेतागण छथि । आलुस राजनीतिक पहिछ मार्त होइ छह बनता केँ मुक्त बना-कइ रहलनार तथा अभाव मे रहलनार, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक बनताक भाषा, ओकर संस्था-संस्कृति केँ नष्ट क देनाइ । राजनेतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काम मे पूर्णतः सफल भेल छथि । दोसर दिव अमिक वर्ग केँ दिन-राति खटलाक बादो फेटमरि अनन्य आ देशभरि वल नलि उप-लब्ध म प्रभोले । -पेटक-ब्लाज मे ओ स्वर्ग हु सं पेव अनन्य बन्नी-बन्मर्भूमि केँ, अन्त भाइ-बहिन, बन्नी आ नेना केँ परिवन् - पुरजन् केँ तेजि शहर दिव पड़ाइल ।

मिथिलाक अमिक भारतक कुनू शहर सं बेसी 'बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपव्य नगर मे आर । इतिहासक जट मील हो बा गंभीरील वा छापाखाना सम ठाम मैथिल अमिक लडुआ छह । आका वाळा, टेखल्ला आ रिक्सावल मे अहरी प्रतिशत मैथिल आर ।

रिक्सा कलकत्ता मे दू तरहक होइ छह पहिछ त साइकिल रिक्सा जे- आनोठाम पाओल बाइए परंच दोसर तरहक रिक्सा जे मात्र एही ठाम टा पाओल बाइए ओ थिक 'टाना-रिक्सा' । 'टाना' बंगला शब्द थिक—बकर मैथिली मेले लीचनार । एहि मे रिक्सा वालक नहि रिक्सा खिचनि-हार होइ-ए । एकर आकृति एतनेम टमटम सन होइत छह आ टमटमक शोकाक स्थान मे एहिठाम मनुख रहै-ए—मनुक सन्तान । शोकाक गोरदनि मे बँटी रहै छह आ एकरा हाथ मे हुयवा पर टम-टम मारेत गह्वी आ बस सं बचेत ओकर संग दौकत ।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिक्सा छह आत्यमावर्ग एगारह हजार परिवारक दून-रोटी एही सं-चले छह ।

एहि रिक्सा पर बेहत काज प्रामः अपना केँ अमानुष शोचवा लेल बाध्य भेल छै । मेवाखक टहसीर दुपहरिया मे बखन सुबह गोसाइँ आनि ओकरे लयि आ नीचा नाटक पीथ घमि बाइ छह तलने खाली देह आ खाली पदरे दूतीन मादमीक स्वारी लय दौकना मे जे की परिश्रम होइ छह तकर हमरा लोकनि कस्यनाओ ने क सकैत छै । तदिना अखल मे बखन सुखलधार बगौ होइत रहै छह नाट पर पानि बमि बाइ छह आ खिचि-खुचिक पता नहि चले छह, आंकड़-पाथर बागि बाइ छह—जैन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पादरे बन्नी अर्धमव तेरेना स्थिति मे सबारी लय दौकनार क

परिश्रम आ खराबक अनुमान सहजहि कइल जा सकै छ । आ एहन बीताइ परि-अम केलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहै छह । एह मे दू टाका रिक्सा मालिक केँ देमय पवे छह । बाँकी मे अनन्य लेनाइ-पीनाइ आ परिवारक हेतु मनिआइ-ए ।

ओना त छ वै तक मे एगो रिक्सा मेटि बाइ छह, पछव सेहो तुला एकरा लोकनि केँ नहि रहै छह जे अनन्य रिक्सा कीनि सकल । दोसर बात जे खाली रिक्सा कीनिसे छह सं त होइ नलि छह । रस्ता घाटक जे स्थिति छह ताइ मे सखिलन किछु ने किछु प्रस्ताति लगले रहै छह आ ताइपर सं पुलिसक खर्च आय क छह । तेरेना स्थिति मे भाड़ा पर रिक्सा केनाइ छोड़ि दोसर उपाय की छह ? आतेँ मालिक केँ द 'क' जे बचे छह ताइ मे भरि पेट अनन्य आ भरि देह वल सपनाइ बनल रहि बाइ छह । देना—मिथिलाक हजार-हजार अमिक, कोरि-क सहै-ए—अम सं विमुल नलि होइ-ए । ओ अमक महत्ता, यो नाम आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य केँ नीक बर्ना हुओइ । तँ एक टा पाँच रोटी आ एक रुप चाइ पीथि दिनभरि रिक्सा नेने बँटी बजवेत दौकैत रहै-ए ।

एमहर बंगाल सरकार नाट आमक बरबा क केँ 'बिनु कार्टेसक रिक्सा केँ बन करवाक योजना बना रहले-ए । कहवाक प्रयोजन नलि जे बाँखन मे बाइ ट्रेक-टेमूक कारणे आ ट्राफिक पुलिसक बड़ी ओषरीक कारणे नाट काम होइ छह तार पर सरकारक किछु चलि नलि संके छह आ तँ अनन्य 'पासार'क उपयोग एही अंशगठित मकदूर वर्ग पर करय बना रहल आर । एहि ठाम मात्र पाँच हजार रिक्सा केँ कार्टेस-लेक आ बाँकी बिनु कार्टेसक आर ।

## मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आधुनिक युग मे सिनेमा केँ प्रचार ना लोक शिक्षाक सम सं सहज आ फारसर माध्यम कहल गेल अछि । परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छैक जे ओकर माध्यम लोकप्रभा हो । विहारक तीन गोटे प्रधान भाषा—मैथिली भोजपुरी आ महग्री एहि संदर्भ मे पूर्ण उपेक्षित अछि । ओना भोजपुरी मे कइकटा सिनेमा बनबा केलेक अछि आ नीक बर्ना चलैक अछि । मगही मे सेहो सफल खाय लेल सिनेमा बनल-छलेक परंचव्य सम सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि । एमहर कइकटा सिनेमा निर्माणक समाचार बदा-कदा सुनमा मे आयल अछि परंचव्य आरंभपर एकोटा पूर्ण नहि म सकल अछि । १९६८ मे हमहुँ एहि क्षेत्र मे प्रकाश कइल स्व० राजकमल चौधरीक समर कथा 'लडका पार्ग'क संग । ई धरो एहन जीवन्त सामाजिक कथा थिक बाइ मे मिथिलाक संस्कृति बनेत

सिनेमा संसारमे - थ्यूपि एमर प्रय

प्रदर्शन छल परंचव्य नाट्य-मंचक दीर्घ व

पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जनताक स्वा

तिनामा कइकर लोकनिक संग सहयोग

हमरा प्राप्त छल । हमरा पूर्ण विश्वास अछि

जे ब ई फिल्म बनि सकल त निश्चिन्ते

टकर के होइत । प्रमाण मे एकर गीतसम

जे रेकोर्डिंग म खुल अछि आ बाबा मे

पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि । एहि फिल्म मे

लक्ष्मण पवास हवार टाका खर्च मे डुकल

छैक आ गीत रेकडिङक अतिरिक्त कला-

कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो सौं

क लेल गेल छैक । मात्र अर्थक अभाव मे

कार्य हथगत अछि आ न अर्थ लक्ष्योन्नि-

रोपाइ पृष्ठ ४ पर

अछि भारतीय-नारक आदर्श सीत

प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि । एहि कथ

वर्तमान समय मे बहू बेसी आवश्यकता न

उपयोगिता छैक । तँ हम एहि कथ

चयन कइल ।

सिनेमा संसारमे - थ्यूपि एमर प्रय

प्रदर्शन छल परंचव्य नाट्य-मंचक दीर्घ व

पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जनताक स्वा

तिनामा कइकर लोकनिक संग सहयोग

हमरा प्राप्त छल । हमरा पूर्ण विश्वास अछि

जे ब ई फिल्म बनि सकल त निश्चिन्ते

टकर के होइत । प्रमाण मे एकर गीतसम

जे रेकोर्डिंग म खुल अछि आ बाबा मे

पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि । एहि फिल्म मे

लक्ष्मण पवास हवार टाका खर्च मे डुकल

छैक आ गीत रेकडिङक अतिरिक्त कला-

कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो सौं

क लेल गेल छैक । मात्र अर्थक अभाव मे

कार्य हथगत अछि आ न अर्थ लक्ष्योन्नि-

रोपाइ पृष्ठ ४ पर

अछि भारतीय-नारक आदर्श सीत

प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि । एहि कथ

वर्तमान समय मे बहू बेसी आवश्यकता न

उपयोगिता छैक । तँ हम एहि कथ

चयन कइल ।

सिनेमा संसारमे - थ्यूपि एमर प्रय

प्रदर्शन छल परंचव्य नाट्य-मंचक दीर्घ व

पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जनताक स्वा

तिनामा कइकर लोकनिक संग सहयोग

हमरा प्राप्त छल । हमरा पूर्ण विश्वास अछि

जे ब ई फिल्म बनि सकल त निश्चिन्ते

टकर के होइत । प्रमाण मे एकर गीतसम

जे रेकोर्डिंग म खुल अछि आ बाबा मे

पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि । एहि फिल्म मे

लक्ष्मण पवास हवार टाका खर्च मे डुकल

छैक आ गीत रेकडिङक अतिरिक्त कला-

कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो सौं

क लेल गेल छैक । मात्र अर्थक अभाव मे

कार्य हथगत अछि आ न अर्थ लक्ष्योन्नि-

रोपाइ पृष्ठ ४ पर

अछि भारतीय-नारक आदर्श सीत

प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि । एहि कथ

वर्तमान समय मे बहू बेसी आवश्यकता न

उपयोगिता छैक । तँ हम एहि कथ

चयन कइल ।

सिनेमा संसारमे - थ्यूपि एमर प्रय

प्रदर्शन छल परंचव्य नाट्य-मंचक दीर्घ व

पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जनताक स्वा

तिनामा कइकर लोकनिक संग सहयोग

हमरा प्राप्त छल । हमरा पूर्ण विश्वास अछि

जे ब ई फिल्म बनि सकल त निश्चिन्ते

टकर के होइत । प्रमाण मे एकर गीतसम

जे रेकोर्डिंग म खुल अछि आ बाबा मे

पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि । एहि फिल्म मे

लक्ष्मण पवास हवार टाका खर्च मे डुकल

छैक आ गीत रेकडिङक अतिरिक्त कला-

कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो सौं

क लेल गेल छैक । मात्र अर्थक अभाव मे

कार्य हथगत अछि आ न अर्थ लक्ष्योन्नि-

रोपाइ पृष्ठ ४ पर

अछि भारतीय-नारक आदर्श सीत

प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि । एहि कथ

वर्तमान समय मे बहू बेसी आवश्यकता न

उपयोगिता छैक । तँ हम एहि कथ

चयन कइल ।

सिनेमा संसारमे - थ्यूपि एमर प्रय

प्रदर्शन छल परंचव्य नाट्य-मंचक दीर्घ व

पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जनताक स्वा

तिनामा कइकर लोकनिक संग सहयोग

हमरा प्राप्त छल । हमरा पूर्ण विश्वास अछि

जे ब ई फिल्म बनि सकल त निश्चिन्ते

टकर के होइत । प्रमाण मे एकर गीतसम

जे रेकोर्डिंग म खुल अछि आ बाबा मे

पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि । एहि फिल्म मे

लक्ष्मण पवास हवार टाका खर्च मे डुकल

छैक आ गीत रेकडिङक अतिरिक्त कला-

कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो सौं

क लेल गेल छैक । मात्र अर्थक अभाव मे

कार्य हथगत अछि आ न अर्थ लक्ष्योन्नि-

रोपाइ पृष्ठ ४ पर

अछि भारतीय-नारक आदर्श सीत

प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि । एहि कथ

वर्तमान समय मे बहू बेसी आवश्यकता न

उपयोगिता छैक । तँ हम एहि कथ

चयन कइल ।

सिनेमा संसारमे - थ्यूपि एमर प्रय

प्रदर्शन छल परंचव्य नाट्य-मंचक दीर्घ व

पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जनताक स्वा

तिनामा कइकर लोकनिक संग सहयोग

हमरा प्राप्त छल । हमरा पूर्ण विश्वास अछि

जे ब ई फिल्म बनि सकल त निश्चिन्ते

टकर के होइत । प्रमाण मे एकर गीतसम

जे रेकोर्डिंग म खुल अछि आ बाबा मे

पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि । एहि फिल्म मे

लक्ष्मण पवास हवार टाका खर्च मे डुकल

छैक आ गीत रेकडिङक अतिरिक्त कला-

कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो सौं

क लेल गेल छैक । मात्र अर्थक अभाव मे

कार्य हथगत अछि आ न अर्थ लक्ष्योन्नि-

रोपाइ पृष्ठ ४ पर

अछि भारतीय-नारक आदर्श सीत

प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि । एहि कथ

वर्तमान समय मे बहू बेसी आवश्यकता न

उपयोगिता छैक । तँ हम एहि कथ

चयन कइल ।

सिनेमा संसारमे - थ्यूपि एमर प्रय

प्रदर्शन छल परंचव्य नाट्य-मंचक दीर्घ व

पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जनताक स्वा

तिनामा कइकर लोकनिक संग सहयोग

हमरा प्राप्त छल । हमरा पूर्ण विश्वास अछि

जे ब ई फिल्म बनि सकल त निश्चिन्ते

टकर के होइत । प्रमाण मे एकर गीतसम

जे रेकोर्डिंग म खुल अछि आ बाबा मे

पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि । एहि फिल्म मे

लक्ष्मण पवास हवार टाका खर्च मे डुकल

छैक आ गीत रेकडिङक अतिरिक्त कला-

कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो सौं

क लेल गेल छैक । मात्र अर्थक अभाव मे

कार्य हथगत अछि आ न अर्थ लक्ष्योन्नि-

रोपाइ पृष्ठ ४ पर

अछि भारतीय-नारक आदर्श सीत

प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि । एहि कथ

वर्तमान समय मे बहू बेसी आवश्यकता न

उपयोगिता छैक । तँ हम एहि कथ

चयन कइल ।

सिनेमा संसारमे - थ्यूपि एमर प्रय

प्रदर्शन छल परंचव्य नाट्य-मंचक दीर्घ व

पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जनताक स्वा

तिनामा कइकर लोकनिक संग सहयोग

हमरा प्राप्त छल । हमरा पूर्ण विश्वास अछि

जे ब ई फिल्म बनि सकल त निश्चिन्ते

टकर के होइत । प्रमाण मे एकर गीतसम

जे रेकोर्डिंग म खुल अछि आ बाबा मे

पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि । एहि फिल्म मे

लक्ष्मण पवास हवार टाका खर्च मे डुकल

छैक आ गीत रेकडिङक अतिरिक्त कला-

कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो सौं

क लेल गेल छैक । मात्र अर्थक अभाव मे

कार्य हथगत अछि आ न अर्थ लक्ष्योन्नि-

रोपाइ पृष्ठ ४ पर

अछि भारतीय-नारक आदर्श सीत

प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि । एहि कथ

वर्तमान समय मे बहू बेसी आवश्यकता न

उपयोगिता छैक । तँ हम एहि कथ

चयन कइल ।

सिनेमा संसारमे - थ्यूपि एमर प्रय

प्रदर्शन छल परंचव्य नाट्य-मंचक दीर्घ व

पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा जनताक स्वा

तिनामा कइकर लोकनिक संग सहयोग

हमरा प्राप्त छल । हमरा पूर्ण विश्वास अछि

जे ब ई फिल्म बनि सकल त निश्चिन्ते

टकर के होइत । प्रमाण मे एकर गीतसम

जे रेकोर्डिंग म खुल अछि आ बाबा मे

पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि । एहि फिल्म मे

लक्ष्मण पवास हवार टाका खर्च मे डुकल

छैक आ गीत रेकडिङक अतिरिक्त कला-

कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो सौं

क लेल गेल छैक । मात्र अर्थक अ



## कलकत्ताक रिक्सा बाहक

कृषि प्रधान मिथिआ देश से श्रमक महत्वा आदि काल सं बुझल गेल-ए आ मान बुझले ठा नजि गेल-ए एकरा नइ नेच स्थान देख ले-ए। ई गोरव मिथिले देश केँ टा छर के साथ पर राजबकुट आ हाथ मे लगानि छेने कुनू राजा हवाहि केने छथि। राजर्षि जनक केँ दृष्टान्त इतिहास मे भरतीम अर। तेँ मिथिला घन बाण्य सं भर-पुरल छर। अभाव नामक वस्तु लोकक जीवन मे नजि छर, ई शब्दकोशक एगो शब्द मात्र छल। इहए कारण छर केँ एहिठाम विद्याक ओतेक प्रचार छर, शान-विज्ञानक, साहित्य कलाक ओतेक विकास भ सकल। केँ नजि बने-ए केँ भारतीय ई गोट दर्शन मे चारि गोट एही भूमिक देन चिक। पञ्चत आदि केँ स्थिति बदलि गेलैक। लोक श्रम केँ आबलाह नगरिने देख्य लागल आ श्रमिक वर्ग समाज मे नीच श्रेणीक लोकक रूप मे बुझल जाय लागल। श्रमविभाजनक आधार पर वस्तु समाज व्यवस्थाक स्वभाव-संरूप देख मे वर्ग बाँटक गान्धी लार्नि गेले। प्रशासक कयन केँ 'गुण आकर्मक आधार पर' हम चारि वर्गक सिद्धान्त कहल-ए। विचार देल गेल आ तकरा स्थान पर प्रशासन मुह सं प्राप्त आ बाहि सं सम्बन्ध आदि जनशक्त कथा केँ मति देल गेल गेल राजर्षि जनक हर कोत-बाक काज केँ नूतन तेल लगा मिथक बना देल गेल। तथा कमिल उंच वर्गक हेतु आब लागनि जेनाह पाप भ गेले आ एही-ठाम सं मिथिलाक अत्योगतिक इतिहासक आरंभ होइए।

श्रम केँ हेय बुझनाह तथा एहि सं विमुख भेनाह विप्लविता आ संघर्षक प्रवृत्ति केँ जन्म देल आ ई प्रवृत्ति पुनः शोषण प्रवृत्ति केँ जन्म देए। स्वभावतः श्रमिक वर्गक शोषण आरंभ भेल। समाज दू वर्ग मे बाँट गेल—शोषक ओ शोषित। एक दिव शोषक वर्गक समय विलासिता मे कटय लगैले त दोसर दिव शोषित श्रमिक वर्गक अभाव यातनाक बीच। एकर प्रभाव उत्पादन पर पड़नाह स्वाभाविक छर आ घन-धान्य सं भरल मिथिला मे गरीबीक नरन दृश्य प्रारंभ भेल।

एक दिस जनसंख्या बृद्धि आ दोसर दिस उत्पादनक कमी सं मिथिला दिनानु-दिन अभाव ग्रस्त होइत गेल। खेती पर आधारित रहितहुँ ओर मे नव-नव तरीकाक कोन उपयोग नहि करल गेलैक। करवे केँ करैत ? भूखाभी अहरी भेल आ दिन-राति विलासिता मे डूबल रहल त दोर दिस श्रमिक वर्ग शक्तिहीन छर। ताइ पर सं रौंदी-दाही महामारीक प्रकोप बढ़ये लागलैक। जीविकाक अभाव्य साधन रहलैक नजि। एहि यंत्रप्रगुह सं मिथिला

मे कलकारालानाक विकास नजि भ सकल। एकरो कारण मैथिल जातिक अवचेतनता तथा वृणित राजनीति आ बंचक मिथिलाक राजनेतागण छथि। आनुक राजनीतिक परिदृश्य तर्त होइ छर बनता केँ मुल्ल बना-कए रखनाह तथा अभाव मे रखनाह, आ एहि निमित्त आवश्यक छैक जनताक माँचा, ओकर सम्भन्ध-उल्लंघन केँ नष्ट क देनाह। राजनेतिक नेतागण अपन एहि पवित्र काज मे पूर्णतः सफल भेल छथि। दोसर दिव श्रमिक वर्ग केँ दिन-राति खटलाक बादो पेटभरि अन्न आ देहभरि वस्त्र नजि उप-लब्ध भ पओलैके। रेटक स्वाडा से ओ स्वर्ग हुँ सं पेच अन्न जननी-जन्मभूमि केँ, भयन भार-बहिन, पत्नी आ नेता केँ परिजन-पुत्रजन केँ तोल शहर दिस पड़ाइल।

मिथिआक श्रमिक भारतक कुनू शहर सं बेनी, बंगालक कलकत्ता तथा ओकर समीपस्थ नगर से अर। एहिठामक जट मील हो वा गंभीरील वा छापाबाना सम ठाम मैथिल श्रमिक बहुश्रमा छर। कोका बाला, ठाकुरा आ रिवाबला मे अस्सी प्रतिशत मैथिल अर।

रिक्सा कलकत्ता मे दूर तरफ होइ छर परिदृश्य त साहसिक रिक्सा केँ आनोठाम पाओल बाहर परंच दोसर तरफ रिक्सा जे मान एही ठाम टा पाओल बाहर ओ थिक 'टाना—रिक्सा'। 'टाना' काला शब्द थिक—जकर मैथिली मेल लीबनाह। एहि मे रिक्सा चालक नहि रिक्सा चिचिन-हार होइए। एकर आकृति एतनेन टटपन सन होइत छर आ टटपनक बोझक स्थान मे एहिठाम मनुवल रहैए—मनुक सतान। बोझक गोटनि मे बंदी रहे छर आ एकरा हाथ मे हथड़ा पर टन-टन मारैत गाड़ी आ बस सं बचेत ओकर संग दौकत।

कलकत्ता मे सरकारी रिपोर्टक अनुसार एगारह हजार टाना रिक्सा छर आबलावतः एगारह हजार परिवारक नून-रोटी एही सं चले छर।

एहि रिक्सा पर देखत काल प्रायः अमता केँ अमानुष रोचवा लेल बाध्य भेल छी। बेतालक ट्याही दुपहरिआ मे बलन सुख गोलाई आगि बोको छथि आ नीचा नाटक बीच बसि जाइ छर तलने खाली देह आ खाली पदरे दू-तीन आतसीक तवारी लय दौकना मे केँ की परिश्रम होइ छर तकर हमरा लोकनि कथनाओ ने क संकेत छी। तहिना आबलहुँ मे बलन मुसलाधार बली होइत रहे छर नाट पर पानि बसि जाइ छर आ लाघि-खुधिक धरा नहि-चले छर, ओकड़-पाथर जागि जाइ छर—जैतन स्थिति मे हमरा लोकनिक हेतु खाली पाथरे चक्की असंभव तेना स्थिति मे सबारी लय दोकनाह क

परिश्रम आ खताक अनुमान सहजहि कएल जा सकैछ। आ एहन बीतीछ परि-अभ कैलाक बादो एकरा लोकनिक दैनिक आय ५-१० टाकाक बीच रहे छर। एह मे छल तैयार नजि अर सं कारण हो किछक ने होइ, परन्व एत चरि छर जे एकर बल भ गेने छ हजार व बेकार बनि जाय। एकरा लोकनिक 'मुनियन' (संगठन) नजि छर। एक संगठनक प्रवचन भेल रहैक। नेता समे निदिचते रिक्सा खिचनिहार नजि छ पड़ा गेले आ प्रवचनकारी रिक्सा सब संक पुलिस नीक बडाँ पीटाइ केलेक एकरा लोकनिक लेल बनिहार केओ छर। फलतः बेकार मजदूर केँ अपन गा. सुरि गेनाह छोड़ि दोसर कुनू द्वारा नां छर। परन्व समया छर केँ गामे जा। ई सभ की करत ? की खाएत पीत क केना गुजर चलेते ? कहादन देश अजा भेल छर आ इहो सभ तार अजाद देश नगरिक छी ? संविधान मे लिखल छर जे सभ नागरिक समन छर। सभ केँ एदे रंग अदिकार छर आ एक रंग हुल-हुलिया भेटने। ओना हरे नोके छर जे से बात एकरा लोकनि केँ नजि बुझल छर। एकरा लोकनि केँ नजि बुझल छर जे देशक उत्त ते लोकक उत्पत्ति होइ छर आ इहो सभ तारी लोकक अंश थिक। मुदा एते भनसे बुझल छर जे ई सभ बिहारी ओ आ विहारक मुल मंत्री बाबू श्री बगदाथ मिशर छथिन जे एकरे गाम-बरक लोक छथिन। चुनाक समय मे गामेगाम बाहर—छथिन आ गरिबा लेल मारिने राव की कर्तव्य करवाक गण कहे छथिन कि से गण खाली चुनावेकारी रहे छर आने सरिपुं हुनका लगा एकरा लोकनिक समस्थाक निदानक कुनू योजना छनि ?

ओना त छ से तक से एगो रिक्सा भेटि जाइ छर परन्व सेही बुता एकरा लोकनि केँ नहि रहे छर जे अपन रिक्सा कीनि सकल। दोसर बात जे खाली रिक्सा कीनि लेआ सं त होइ नजि छर। रस्ता माटक जे स्थिति छर तार मे सदिलन किछु ने किछु मरामति लगले रहे छर आ तारपर सं पुलिषक खर्च आय क छर। तेरेना स्थिति मे भाड़ा पर रिक्सा लेनाह छोड़ि दोसर उपाये कीछर ? भातेँ मायलिक केँ र 'क' जे कचे छर तार मे भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र उपनाह बनल रहि जाइ छर। देना—मिथिलाक हजार-हजार श्रमिक, लोकिक सल्लेस—श्रम सं विमुख नजि होइछ। ओ श्रमक महत्ता, माँ बाप आ परिवारक प्रति अपन कर्तव्य केँ नोक बकाँ बुझे। तेँ एक टा पाँच रोटी आ एक कप चाइ पीवि दिवभरि रिक्सा नेने घंटी बजैत दौकते रहैए।

हमर बंगाल सरकार नाट बायक बहना क केँ 'बिनु लाइसेंसक रिक्सा केँ बसं करवाक योजना बना रहल-ए। कहवाक प्रयोजन नजि जे वास्तव मे बाइ टूक-टेपूक कारणे आ ट्राफिक पुलिसक बंदी ओइरीक कारणे नाट बाय होइ छर तार पर सरकारक किछु बलि नजि सके छर आ तेँ अपन 'पामार'क उपयोग एही अंगण्डित मजदूर वर्ग पर करय जा रहल अर। एहि ठाम मात्र पाँच हजार रिक्सा केँ लाइसेंस छेक आ बाँकी बिनु लाइसेंसक अर।

## मैथिली सिनेमा : स्थिति आ अपेक्षा

आनुक युग मे सिनेमा केँ पचार ना लोक शिक्षाक सभ सं सबह आ कारण माध्यम कहल गेल अछि। परंच लोकशिक्षाक लेल आवश्यक छेक जे ओकर माध्यम लोकभाषा हो। विहारक तीन गोट प्रान भाषा—मैथिली, भोजपुरी आ मगही एहि संदर्भ मे पूर्ण उपस्थित अछि। ओना भोजपुरी मे कश्कटा सिनेमा बनवो कैलैके अछि आ नोक बकाँ बल्लेक अछि। मगही मे सेहो सफल लाय लेल सिनेमा बनल छलेक परन्व सभ सं प्रधान प्राचीन आ विकसित भाषा मैथिली एकरे अपवाद अछि। एमर कश्कटा सिनेमा निर्माणक समाचार बदा-कदा उनमा मे आयल अछि परन्व आइबचि एकोटा पूर्ण नहि भ सकल अछि। १९७८ मे हमहुँ एहि क्षेत्र मे पराजित कइल स्व० राजकमल चौधरीक अमर कथा 'छलका पाग'क संग। ई एगो एहन बीकस्त सामाजिक कथा थिक जाइ मे मिथिलाक संस्कृति बजैत

अछि भारतीय नारेक आदर्श सीताक प्रत्यक्ष दर्शन होइत अछि। एहि कथाक वर्तमान समय मे ख बेसी आवश्यकता आ उपयोगिता छेक। तेँ हम एहि कथाक चयन कइल।

सिनेमा संसारो यद्यपि हमर प्रथम पदावर्ण छल परन्व नाटक-मंचक दीर्घ आ पर्याप्त अनुभव तथा सिनेमा बजारक स्थानात्मक कलाकार लोकनिक संग सहयोग हमरा प्राप्त छल। हमरा पूर्ण विज्ञास अछि जे बं ई फिलम बनि सकल त निमिचते टकर के होइत। प्रमाण मे एकर गीतसभ जे रेकर्डिंग भ चुकल अछि आ बाजार मे पूर्ण लोकप्रिय भेल अछि। एहि फिलम मे लगभग पचास हजार टाका खर्च भ चुकल छेक आ गीत रेकर्डिंगक अतिरिक्त कला-कार-चयन आ इत्य चयनक काज सेहो शेष क लेल गेल छेक। मात्र अर्थक अभाव मे कार्य स्थगित अछि आ बं अर्थ ल्याओनि-शेनाइ पृष्ठ ४ पर



## महाकाली

(स्त्रियणक देवी सीता भारतीय नारीक आदर्शक रूप से मानल जाए छथि। अस्ता मोरछाम कही छर—

सीता कम बेचोने गेठ, दुख छोड़ि दुख कहियो ने भेट। परचढ़, चंग, कल्ला आ त्यागक भूमिती सीताक आत्मामान पर बनन नोट पहुँचैत छथि। ओ महाकालीक रूप धारण केलनि। मिथिअ मे प्रचिक्षित लोककथाक आधार पर प्रस्तुत अर उदर चित्रण कय—महाकाली।)

कला विषयक उपरान्त अपन मन बासक अनादि शेष कइ राम जानकी आ लक्षणक संग अयोध्या फिरलाह। कौनो दिन तक हुनका लोकनिक छकुल छिर-याक आनन्द मे डुबल यैत रहल। बलन ई कम दौर लेलक त किन्तु दलारी राम प्रभाव केलनि के राकन कन पारकमी के कय करिक उपरस मे महराज रामक लक्षणक पूरा देवाक चाही। विरोधक मनो मे उठै सकत छल। पूनोलेखक तैयारी बड़ बोर-बोर सँ चलय लागल। सीता के सेठो इकर भनकी लगलनि। तेरो ओ एकदम राम सँ पुछि देखियत—केर कून उलखक आयोवन सँ रहल छर? महराज राम अकर सँ प्रतिपत्न केलनि—अहाँ के ननि पता? सीता खरख सँ किछु रेत नबली—खलन केओ कइने ने केलनि त पता रहल कोना? अखले तकर प्रपोजेन अहाँ लोकनि ननि हुनैत छी। ली त माय मादेस वालनक निमिष रीत अर मोकरी के आभा दौर छर, इत्य दौर छर, से सोचलाक पलखतिर अहाँ लोकनि के कहीं अर। राम बल्लाह—दमरा छैर अर ने अहाँ हँ विचार ननि केह। प्रजापणक विचार कनि के महा-पराकमी राणा राण के सय कलाक उप-लक्ष मे हार बाँकि पूसा हो। प्रजाक विचार मे हम तेरा म कँ बरि गेलहुँ मे बनिका द्वारा पूसा होइत तिनको से केनाह विवरि गेलहुँ। परस्य त्याग बाबति अहाँ अपन स्वीकृत ननि देय—ई पूजा ननि होएत।

सीता कह गिन—रम लीकृति ननि देव से अहाँ बिष्णुक लीकृति केरु? काओ बहुत अगुआ गेठ छ।

राम—ते बते किबकू ने अगुआ बाँभो—तकर चिन्ता हमरा ननि।

सीता—आँ! हमर विचार पुछे छी अथवा स्वीकृति चाँहि छी?

राम—निमित्त विचार पुछे छी। जँ अहाँक विचार ई काज उचित हो तबान स्वीकृति दिये।

सीता गंभीर अर मे कहलनि—अहाँ के पता अर जे राखनो सँ देव परा-क्रमी आर एगो राखन अर। बाबू देवक महिलागण नोडिऊन राखन के पकड़ि

ओकरा दशो मायबर दीप जालोने छुड़ारि आ नई अतुल्य विनय केलाक बाद ओकरा मुक्ति भेटल छलैक। तारी पताल लोकक राणा वरसगोठु राखण दलनो—बीवैर। राम गंभीर सँ गेलाह आ बर सँ बुने बारा गेआर। प्रात सेने भरिनगर मे विगदिया पीटवा देठ गेले के बाबति महराज राम वरसगोठु राखण पर विषय ननि पओताह ताबति ई उलख लपगित रहल।

नखन लक्षणक ई बात पता चकनि त ओ फन के के रामला पहुँचला माममी केठबिन—माँ! हमरा आला देठ बाओ हम आरट बाँकबति ओकरा परल कय नदीबना आपस आवि बाणम। उलखक आयोवन लपगित न के देवाक चाही।

महराज राम किछु रेत कलबिन लखन ई अहाँक शक्ति सँ बाहरक बात थिक। हमरो शक्ति सँ बाहरक। हरि निमित्त हमरा दुनू भाएक संग देवरीक रक्षाना परमावश्यक अर। बाउ रक्षमान के कहियतु रय तैयार करिय आ वेदेरी के सेठो तैयार देवाक निवेदन करनि। हमरा लोकनि आर बेरी ननि कय छिमे निदा हो।

लक्षण रामक दुनू तनैत जुवाय निदा गेलाह। कनिज काजक बाद रय तैयार भेल। रामक नामदिस जानकी आ दरिना मे लक्षण गेलक। सारथी श्रुवान।

बलन रय वरसगोठु राखणक राखक सीमा मे पहुँचै त गुलबर् हारा ओकरा खरि ल्यालक। लो ओहीलास सँ तीर लोडलक आ समदिया द्वारा समद लेलक त पता चललैक सारथी बातर निपटा म गेठेक। राणाक बाँण सँ हुनमान उतलवगुद पर भेठा गेलाह। ओ दोषव बाण लोडलक त लक्षण के खरद गति। देख मे राम मुँछित अर रय पर टरि गेलाह। तकर बाद ओ कौनो बाण लोडलक परक सम धर्य गेठेक। सीता किबलरय बहो रय पर सेठक छडीर। राखण के अखन राम पता चललैक त ओ आनन्द भेल। ओकरा हुनता मे देरी नहि लगलैक के रय पर गेलकि मदिया दोषर केओ ननि आदि बाकि चिकीह। बाकि उपलक्ष देवाक कारणे ओ मोमेम हुनका नमस्कार केलक आ अपन यूँक लेल बना याचना केलक।

हमर देवलोके मे लखली मन्त्रिणी आ राम देवावि देव-मादेवक मोतय पहुँचलाह के ऊँर द्वारा खराड मे त अमर्द सँ बाणत। देवाणक आकुलता देखि मारदेव प्रस्थान केलनि। ओ सीताक समीप अपन रूप बदलि पहुँचलाह आ हुनका खिचिबक पैत नाना तरक बल्य बाण लोडय लगलाह—बन्य छी हे देवी स्वामी मुदल पकड़ लक्षण सन देवोर मल, हुनमान सन सेवक मारल कबरा अहाँ अपर

## कविता

## वसन्त गीतक मादे

(कवि जीवकात्मक डेअ)

एक गोट  
सन्तुष्टीन-वदाल  
पतझड़ वन मे  
भेल छल हथार जन्म  
आ  
अलीस बर्ल चीतआक बाँदो  
स्थिति ओहिग छह  
ओना  
सूखड़ व हमरो अइ जे  
कहियो पहिठाम रहैत छल  
बाहोमास छतीसो दिन  
वसन्त वहार  
आ ताही आशा मे हम  
पटवैत आएल छी साध्यानुसार  
पहिल पतझड़ वन के  
वसन्त सन  
पावस सेहो दसकथा बनि चुकल-ए  
यहना स्थिति मे  
हमरा सँ वसन्तगीतक आशा  
करबे होएत अमुचित  
भाइ है।  
आव ने

हमरा लोकनि संग मिलि पठावो  
(कारण  
गाछ सभ पल्लो अइ प्राणसँ त  
हमरा विवाह अइ  
आइ ने कालि  
पह मे होवैक तब पक्षम  
अर मादक गंध सँ महमह करल सर्वत्र  
पीबि मधु मातल मधुप गुंजन करत  
तखन  
हमहूँ लिखय आ  
निचिते लिखब  
बसन्त-गीत जे  
अकारणक नहि  
परिवेष्टिक वपज थिक

—रामलोक ठाकुर

अमर, देवाक वरदान देने छलनि तेरो आर देले वन सन। ई त अही वक हो। मानस रूप मे आवि मानस के भंडकित बिष्णुक करैत छी।

हँ प्रकारे बहुत कलक बाद सीताक आन सँग भेलनि। कोमेने अहिते हुनक गरीर छरी म गेलनि ओ बाँगा बादल केछा छुलि फहराय लगलनि। ओ रय सँ उतरि सेकि विदा सेली आ बे सोमने मे पहुँचि ताहि मे बहुतो त हुनक मंयकर रूप देखि आतंके हँ प्राण त्यागि देलक। हँक राखल हुनका पर महरा केलनि ओ तकर बाय पकड़ि कता छीनि केछाँयन आ सँ धमक माय जोपैत अगुआत रहली आ अखन खल्लाहुँ राखणक नगर शून्य सँ गेल त दोषर दिस बुरली। सीताक रणवही रूप सँ पुनः देवगण वरदाओ ओ खोचलनि ज एता मे त बाली लोक बिहीन स

सीताक नयनक परिपटी चलय कायड।



## बालगीत

### चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अबे छो  
होरा छे किछु छबे छो  
जतय नबै छइ गीगा-काला-  
तकरे गीत सुनबै छो ।।  
आदि माटि सं जतमलि सीता  
सखइ हमार ई बरती  
पाऊल्लस्य गंतम, कपिल के  
नुमि रहत ननि परतो  
सुमो शासक गय करे छल  
तकरे गीत सुनबै छो ।।  
ई लोरिक-सखइसक धाती  
ई शिवसिंहक धाम छर  
महादेव बनि चाकर अण्डा  
मिथिला बेरा महान छइ  
जाधरि चान-सुरुज ता खलै  
सहय रायय दोहबै छो ।।

—रामलोचन ठाकुर

### मैथिली सिनेमा

हम प्रेक्चर मेडि बाचि ठ ६ मालक  
अन्दरे फिल्म बनि के ठेकार म बाकल ।  
आना एहि ठेक हम बिहार सरकार सं सेहो  
समर्थन कवाक प्रभाव बरत परत सं सरकार  
दिल सं लक ठकरो तक नहि जाति  
सकत

फिल्म हमार अतो हटि सं उपयोगी  
अछि । आइ केकरिह मे हमना केिक  
तकर बहुमुद्राचि समर्थन एहि माफ्ते  
म सकत छैक । अतेके मुता इट कपाकार  
मे त कमिशन के सेबी-सेडीक संहरि  
अनन प्रतिया विप्लवक दुयोग मे दे केने  
छनि । कमावा फिल्म सभ, के तिरिने के  
सल मनेरक रीट, लालक लाल टाका  
मिथिलाबल सं क बाएछ । मैथिली  
फिल्म मेने तापर रोक लगातक भा परक  
पार करे मे रहत । मिथिलाई व्यवसायी  
लोकनि देखा-देखी एहिमे अंगर होय-  
साह । फिल्म उपयोग के आर्थिक सहयोग  
छैक एगो केन्द्रीय संस्था छैक—एन०  
एफ० डी० सी० ( National Film  
Development Corporation ) के  
राज सरकार माफ्ते फिल्म उपयोग के अर्थ  
सहयोग देत छैक । माराए, ५० मंगल,  
तामि नाडू, उड़ीसा, मणिपुर आदि राष-  
तकार एहि सं प्रचुर टाका कम अन-

मन्सुराद प्रबन्धन, ११, कुछन मलय रोड, कलकत्ता-७०० ०१२ क ठेक बी मेरेकर का एग प्रकटित तथा पब्लिश करि लिउने, १२-जी, इन्दिरा देवास स्ट्रीट,

कलकत्ता १ मे मुद्रित । सम्पादक : जी कमलदेव

## आन्दोलन समाचार

### मैथिली शक्ति यात्रीक अग्रील

तुम्हारा—हमरा लोकनिक दक्षि-  
तमगा प्रतिनिधि स्वचित केनहिरे  
के स्थानिय मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा  
नवरसक दोहर सत्कार मे एगो इतिहा  
उमेठनक आयोजन करय बा रहल-ए ।  
पहिल दिन मिथिलाई स्वर्णिम विमाल  
पर विचार-विमर्श होएत । एहि मे समस्त  
मिथिलाईक प्रतिनिधि भाग लेय तकर  
प्रभाव चलि रहल-ए । दोसर दिन विराट  
प्रदर्शन होएत बाकि मे लगभग पचास  
हजार लोक के भाग लेयक बात अछि ।  
अनंतर्ष मोर्चा एहो निर्णम लेखक, ए  
मे मार्च १९८२ मे बनपुर मे बकटा  
अन्तर्षीय मैथिली साहित्य सम्मेलन  
आयोजित छल । कार्यक्रमक सफलता  
लेख देखि कथनाक शुभकामना ।

मिथिली—हमरा लोकनिक दिखी प्रति-  
निधि स्वचित केनहिरे मे आखिल भारतीय  
मिथिला संघ, दिखीक सलबान १४  
विमानत के होमबन प्रदर्शन । १४  
मंगल कार्यक्रम तत्काल स्थगित म गेएछ ।  
ई कार्यक्रम कहिया बरि हेत से अकात  
अछि । आठव्य के बी मोर्चाक २५, २६  
वी० एहि संस्थाक गृह गेहक ऊँचि तथा  
राष्ट्रिय नदर, हुमादेव नालन बाइक,  
उमेश्वर झा (बाबु) आर्थिक सहाय  
एहि संस्था के प्राय छर । देशक राब-  
बानी मे देवाक कारणे तथा राजनैतिक  
नेता लोकनि आज्ञाया मे रवाना काले  
ई संस्था निश्चिते मिथिला मैथिली निमित्त  
बहुत काम क सकै-ए आ हमरो लोकनि  
तकर आशा करैत छी । बेसी त भविष्ये  
करत ।

अनन सम्पक फिल्म उपयोग के बड़ा रहल  
अछि परन्तु बिहारक अकर्मन्ताक काले  
बिहार राबना एहि सं संचित अछि । हमर  
दिलोक टाका सबर मे जुका रहल छैक ।  
बिहार का रोव आ कमिचिवाली भेख मे  
एगो फिल्म स्टुडियोक नहि नेनार केनेन  
छाहाएद विषय फिल्म से खरबिह संवक  
बा सकैछ । बरती छैक के से दुसिक त  
वेडक के छैक ? पता मे बिहार सरकार  
ई दुसिके छेक अथवा ओ बिहारक विकास  
नहि बाहेत अछि । परंवि स्थिति देख छेक  
आ मिथिलाईक संगहि समस्त बिहारक  
लेबक, कलाकार, तक निधियन सरकार सं  
ई अपेक्षा रखैत अछि के ओ आनहु एहि  
दिखा मे खलै रोअओ आ अनुचित प्रभाव  
करलो ।

—जी कान्त मंडल

## विपत्ति असगरे नहि आबैछ

समाचार कुत्र सं शत मेलेक के दक्षि-  
मगा अंबल मे ई बाक प्रकाय छैक ।  
बाकि बाप एहि तरहक समाचारिक पर-  
नाइ कुत्र नम घटना नहि चिह्नक । बाकि  
समय माताबालक संगहि सेव बलक दुखित  
म नेनार स्वाभाविक छैक आ ई मध्याह्निक  
कम प्रायः एहीदाम सं होएत छैक । परंवे  
अवरलक बात त ई छैक के एहि सं सच-  
बाक छैक सरकार द्वारा कुत्र तरहक प्रभाव  
पहिले नहि भेल—नहि होएत छैक ।  
बकन रोम पूर्णतः एहिरी बार छर लोकन  
सरकारी यंत्र सक्षम होएत अछि तकर  
ठकना-कुचिदा छैक । आना सरकार के  
बीमारी रोकनार सं बीमारी खलानार मे  
आम छैक कारण ओकरा समया समय के  
कमेवाक लक्ष्य-सुरीय मेदेत केिक आ सका-  
रक प्राय सकत होएत छैक । हम रे  
अभावाल मिथिलाक लोक । कि आनहु ओ  
सं नहि चेतत आ एहि कुतिय रोग-भातना  
सं मुकि प्रभाव प्रभाव नहि करत । आना  
ई बात त भविष्ये मे एह होएत परन्तु  
इतेभरि एह छैक के बं आनहु ओ नहि  
चेतत त ओकर दुखक नहि ओर' लागि  
सकैत छैक ।

विपत्ति लोकनि सं—

‘देखि कथना’ क इलेक्ट्री केड सम्पक क—

विचार अवस्थाक,

असगरीय प्रकाशन,

विज्ञापन दामा लोकनि सं—

‘देखि कथना’ मे अनन विज्ञापन-सं काम उठाब । कम कर्त मे मुदर दंग सं  
आर्थिक प्रचारक एक मात्र साधन ।

सम्पक कर

विज्ञापन व्यवस्थापक

असगरीय प्रकाशन,

## लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

१. अकन मौलिक आ अप्रकाशित रचना देखि कथना मे प्रकाशनाय पठाव ।
२. देखि कथना मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र छि : आन्दोलन सम्पकबी  
रचना के अप्रकाशित देख जायत ।
३. मिथिला मैथिली सं सम्पकवि समाचार पठाव ।
४. देखि कथना सं सत्य विचार आ रचनात्मक सुझावक संगत करैत ।

## कह लोचन कविनाय

जगन्नाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगार होत  
सब सम्पकी फाईय सतत निरिन्त कयल बथान  
निधित कयल बथान माछ ई सरल-पताली  
अपन के साएत सोचत शुभ अनके खाली  
कइ लोचन कविनाय बजा नट जुद्धो जगन्नाथ  
बेबू मत कदाइक होय ई अलख जगन्नाथ



## चेत कबड्डी

चेत कबड्डी अये छो  
तोरा छे किछु छवे छो  
जतय बहै छर गंगा-कमला-  
तकरे गीत सुनबै छो ।  
जाहि माटि तँ जलमलि सीवा  
सयइ हमर ई घाटी  
याकहरेख गठम, कपिल के  
मुमि रहत नबि-पल्लो  
सुगो शाकक गप करै बल  
तकरे गीत सुनबै छो ॥  
ई कोरि-सलेसक घाटी  
ई शिर्बासक धाम अइ  
महादेव बनि चाकर अपला  
मिथिला देश सहान जइ  
आधरि चान-सुनल ता खलै  
सहय शपथ दोहबै छो ॥

— रामलोचन ठाकुर

## मैथिली सिनेमा

हार मोक्षपुर मेडि जायि त ६ मातक  
अन्दरे फिलम हनि के तेयार भ जायत ।  
बोना हरि छेइ हम बिहार सरकार सं सेरो  
समर्थ कलाक प्रयास कयल परब सरकार  
दिल ह पनक उत्तरो तक नहि आबि  
सकल ।

फिलम आर अतो हउ सं उपयोगी  
अछि । भार केन्द्रिक के समया छेक  
तकर बहुदूरपरि समाधान हरि माकसे  
भ सकत छेक । बनेको युवा युव क-पाकर  
मे व कमिथियन के सेकी-रोटीक संगहि  
अन्य मजिमा विकासक युगेल सेटि सकेन  
छनि । बयस्या फिल्म हम, से निजोप के  
सला मनोरंजनक होइत, लाखक लाख टाका  
मिथिलाकल हं क बाइछ । मैथिली  
फिलम सेने ताहार लेक स्वागत आ भार  
पाइ जे मे रहत । मिथिलाक व्यवसायी  
लोकनि देखा-देखी बहिये गमहर होय-  
हाइ । फिल्म उद्योग के आर्थिक सहयोग  
छेक इगो केन्द्रीय संस्था छैन-इन-  
एफ० डी० सी० (National Film  
Development Corporation) जे  
राज्य सरकार माकसे फिल्म उद्योग के अप्य  
सहयोग देत छेक । मद्रास, १० बंगाल,  
तामि नाडू, उड़ीसा, मणिपुर आदि राज्य-  
सरकार हरि सं प्रचुर टाका कम अपन-

भरपौरय प्रकाशन, ६१, इस्लाम अलाय रोड, कलकत्ता-१०००३३ के छेक श्री मोक्षर आ द्वारा प्रकाशित तथा पब्लिशर आर्ट मिडल, ३२-जी, इन्दिरा नेशाख स्ट्रीट,

कलकत्ता ५ मे मुद्रित । सम्पादक : श्री बलार्दन झा

## आन्दोलन समाचार

### मैथिली मुक्ति मोर्चाक खीछ

विभङ्गा—हमरा लोकनिक दक्षि-  
टमगा प्रतिनिधि सूचित केहनहै  
जे स्थानीय मिथिला बानसर्ष मोर्चा  
नवभरत दोहर सप्ताह के युगो दुहिला  
समोहनक आयोजन करय बा रहल-ह ।  
पहिल दिन मिथिलाक सर्वांगीण विकास  
क विचार-विमर्श होयत । हरि मे समस्त  
मिथिलाक प्रतिनिधि भाग लेयि तकर  
प्रभाव बनि रहल ह । दोसर दिन विगत  
प्रत्येक होइत जाहि से खामया सचात  
हजार लोक के भाग लेयक राइ अछि ।  
बनसर्ष मोर्चा हरि निम्न छेक ह,  
जे मार्च १६मर से बनसपुर मे एकटा  
अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य सम्मेलन  
आयोजित कत । कार्यक्रमक उपलब्धता  
लेक 'देसिक कथना'क शुभकामना ।

× × ×  
टिप्पणी—हमरा लोकनिक टिप्पणी यि-  
निधि सूचित केहनहै जे अखिल भारतीय  
मिथिला संघ, टिप्पणीक तलाबधान १५  
दिसम्बर के होमबवा प्रदर्शन । १५४  
मार्ग कार्यक्रम तलाब स्थिति भ गेलह ।  
ई कार्यक्रम कदिना बरि हेत से अभाव  
अछि । शतव्य जे श्री मोनेन्द्र झा, एम०  
पी० हरि संस्थाक पृष्ठ पोषक छयि तथा  
राजेश्वर यादव, हुस्मरेव नासपण भादव,  
विजयचन्द्र झा (सावर) आदिक सहयोग  
हरि संस्था के भाव छह । देवक राव-  
बानी मे देवान काले तथा राजनैतिक  
नेता लोकनि छानछाना जे रचनाक कारणे  
ई संस्था निश्चित मिथिला मैथिली निमित्त  
बहुत काम क छेक-ह आ हमरो लोकनि  
तकर भाषा करै छी । मैथिली त भविष्ये  
कत ।

अन्य राज्यक फिल्म उद्योग के बढा रहल  
अछि परब बिहारक सकसपताक कारणे  
बिहार राज्य हरि सं वंचित अछि । एकर  
हिसाक टाका बजइ मे उछा रहल छेक ।  
बिहार सन पैय आ समसिवाली प्रदेश मे  
एगो फिल्म स्टूडियोतक नहि मेनाइ केवल  
छायासद विषय फिल्म से सञ्चालि बाबल  
बा सबैक । कहनी छेक के भरे दुपिक त  
जेतुक के छेक ? पता नै बिहार सरकारक  
ई दुविके छेक अथवा ओ बिहारक विकास  
नहि बाहेत अछि । परब विपति मे छेक  
आ मिथिलाक संगहि समस्त बिहारक  
छेक, कलाकार, तक निधियन सरकार सं  
ई अफेला रहैत अछि जे ओ आनहुं हरि  
दिवा मे शतक होअमे आ समुचित प्रयास  
करखी ।

—श्री कान्त मंडल

## विपत्ति असगर नहि

### अबैछ

समाचार छत्र हं जत मेरइ वे दहि-  
अंगा अबैछ से हेबाक प्रकोप छेक ।  
बादिक बाद हरि तरक महाभारत खर-  
नाइ छुट नब घटना नहि बिकेक । बादिक  
समय वातावरणक संगहि रेष चलक हुनत  
म मोनार स्वाभाविक छेक आ ई मयामाक  
बनम ग्राम परितम सं होइत छेक । परब  
अबैछक बाद त ई छेक बे हरि सं य-  
बाक छेक सरकार द्वारा छुट तरक प्रयास  
गहने नहि देख-नहि होइत छेक ।  
कलम रेष पूर्वतः पछरि बार छह तलन  
सरकारी मन्त्रिकय होइत अर ओकरे  
ठहना-कुविदवा छेक । बोना सरकार के  
सीमारी रोकरार सं सीमारी प्रयास मे  
खप छेक कारण ओकरा समया हम के  
कलेवाक खण-युगेल सेटि छेक आ सरका-  
रक पाया सकत होइत छेक । हम रे  
अभागत मिथिलाक लोक । कि आनहुं ओ  
हं नहि सेतत आ हरि कृतिम रोग-युतवा  
हं मुक्ति पेशक प्रयास नहि करत ? बोना  
ई बात त मयिले मे रह होइत परब  
एतेवरि राइ छेक जे बं आनहुं ओ नहि  
सेतत हं 'ओकर दुलक नहि मोर' आनि  
लेकत छेक ।

वितरक लोकनि सं—  
'देसिक कथना' क इमेन्टी छेक संयर्क क—  
चित्रण व्यवसायक,  
अखणोदय प्रकाशन,

विभाजन द्वारा लोकनि सं—  
'देसिक कथना' मे अपन विभाजन द्य काम उठाइ । कम लन मे सुन्दर टंग सं  
अधिक दुवारक छह मात्र बाबन ।

संयर्क क—  
विभाजन व्यवसायक  
अखणोदय प्रकाशन,

## लेखक / पाठक लोकनि सं निवेदन

१. अपन मौलिक आ अप्रकारित रचना 'देसिक कथना' मे प्रकाशनाय पठाइ ।
२. 'देसिक कथना' मैथिली आन्दोलनक मुख पत्र छि । आन्दोलन सम्बन्धी  
रचना के अप्रविहार देल जायत ।
३. मिथिला-मैथिली सं सम्बन्धित समाचार पठाइ ।
४. 'देसिक कथना' स्वयं विचार आ रचनासक सुझावक स्वागत करैक ।

## कह लोचन कविाराय

आल्लाथ बिनु नाथ के तोड़ल पगड़ा आन  
खइ समकी भाइय सवत निबिन कयल बथान  
निबिन कयल बथान मात ई सारङ्गताली  
अपन नं खाएत सोचत शुभ अतके खाली  
कइ लोचन कविाराय बजा नट अन्दरी छाबू नाथ  
रेचू बर कयाहक हाथे ई अलख जगन्नाथ







## संस्कृतनक सारापर सचाक बबुर

संस्कृत भाषा मात्र मिथिल्या मे नहि, सगल भारतभरि मे देवभाषाक नामे ख्यात अछि आ एकर लिपि, जे वर्तमान मे मैथिली, हिन्दी, नेपाली आदि छेलन में प्रयोग होइत—देवाक्षरक नामे। ओना त सेवता-एक-अस्तित्व संदिग्ध अरु सलन हुनका लोकनि द्वारा कुन भाषाक प्रयोगक प्रस्न उठओनाइ कमना, परन्तु इतबाधरि सत्य के दिवदूक लगल बरि गेब बरी भाषा मे छै। ओतये किरक, एकर के विद्याल आदिल भंडार छैक आ दीर्घ परम्परा छैक से एखनो कुन भाषाक हेतु इगर्गक विषय न सकैछ। किन्तु, सभ होहलहु ई भाषा मुताबतवा के पास भेल अछि आ तकर हकनाम कला छैक जे ई कसिया लोक भाषा नहि बनि सकल।

एकर बरि कल दिस सं मिथिलाबलक सुनि एखल विचार मे संस्कार भेजक बादि कत आबि गेल-ए। अस्तित्वे कुन गाम कुन हो जाइत अछि मंचक विद्यालयक विद्यार्थी नहि भेब से से भएरि बागतेपर कियन नहि भेब हो। ई भित कथा मे अइ गामक लोक संख्या हजारो सं ओर छैक आ ताइराम पहिलि सं अंग्रेजी कार वा मिडिक स्कूल विद्यालय छैक। हरिनाम ई लिपि देव अनुचित नहि होइत जे अंग्रेजी स्कूल मे सेहो संस्कृत पढ़ेबाक पूर्ण व्यवस्था छैक, मत दि से से चूँक किरक नै होइक। बहने एक गोठ गाम अरु सुबहरी विद्यालय कयनो। हरिनाम प्राचीन संस्कृत पाठ-शास्त्र अ टेरिक ओकेबीक मिडिक स्कूल पहिलि सं एखलक बादो दू गोठ नव पाठ-शास्त्रा खुबचर। हगो संस्कृत प्राथमिक पर माध्यमिक विद्यालय आ दोसर संस्कृत प्राथमिक पर माध्यमिक बाकि विद्यालय। हरि गाम सं अपन कोठ उखर अवस्थित प्राचीनगम गाम मे सेहो दू गोठ प्राथमिक पर-माध्यमिक संस्कृत विद्यालयक स्थापना भ चुकल-ए। हगो पहिले सं हगो अपर मासरी स्कूल विद्यालय छैक आ परक अपाव मे मिडिक स्कूल नहि बनि एको-छैक कवन फि विद्यापी न्य देही छैक। जे स्कूल छैक से प्राचीन गुप्तकल बका गली मे चडि रहल छैक आ मेव देखिते गुप्तबी लोकनि जुष्टीक धंरी हुन-हुन देल छथिन। अनेक बटिया दम कुटी सं कुटेर फलेत बर चड करार। परक विद्या मे गामक, लोक के छेक नै सरकार के। आ लगभग रहने स्थिति मिथिलाक सभ गामक छैक, उपवाद के छोदि।

विचार सन लिबेरि प्रवेश मे आ खाल के मिथिला मे, भारतम भारतीय चेतना नामक बल नहि छैक अपन भाषा-संस्कृति सं छेक पूर्ण उदासीन अरु अरु अपन अधिकार प्राप्तिक ब्याप मे न्गु-संस्कृतन प्रतिबन्ध व चुकल-ए ताइराम हुनक संस्कृतन-मेलक नहि देखि ककरो हठगुटा बगि

सकैत छैक। बी सल्लहु ई संस्कृत मेन बिके आ नै आन लिखु।

हरि गमनक छोटो उदार पैसा छैक हगो लोकनि के स्नेहक पाछा बाप पड़ल। १० वन १९८० के बिहारक वर्तमान मंत्री मण्डल अपन पहिल बेला मे उरू के विहारक दोसर राकभाभा जेलाक निर्णय छैक। पहिले ई करि देन भावस्थल जे उरू सेहो बिहारक प्रियक समल गाल मे कुन सुखानक प्रादुर्भाषा नहि छैक। भाषा चर्मक नहि लेखक होइत छैक आ स्वभाषा, जे बार जेन मे स्थायी माने निवार करैक ताही लेखक भाषा ओकर मातृभाषा होइत छैक। परन्तु हगो सत्य छैक। जे संस्कृत जेना हिन्दूक छैक एहिना उरू मुलमानक छैक आ काल के तबा-कयित हिन्दी प्रवेशक सुखमानक छैक चर्मक भाषा बिकेक। सुखमानक सगल वर्ग अंग हरी भाषा मे छैक। ई मिल कथा जे संस्कृतक पंडित कां बकां शुभा-मौलवी के छोड़ि सर्वव्यापार्य के ई भाषा अकितो नै छैक। किन्तु, चर्मक प्रति कने मैथी कटार देवाक फारणे लोक के हजरा प्रति मोह छैक आ शिदु कनने हुनको हजरा समर्थ बनि बाहर। बिहार सरकार एही कटारवा सं काम ठगोळक।

चर्म मेलि जे कुन किरक नै हो एकर उदासीन सचाक कनचक रूप मे लेल छैक। ई मानव बानि के निमित्त हुन्की मे नाँद ओकरा वनकल बना देने अरु बार सं ओ एकजव भय शोषणक विरोध नहि क सकैर। चर्म सर्वसाधारणक विरुद्ध महात्म पदयंत्र विरुद्ध जे सत्ता द्वारा अनाथ शोषणक पक्ष प्रस्ता करै। आ सत्ता सनवि राखतय वा तथाकथित सवातय जे किरक नै हो ओकर बानि दके छैक। उरूक मान्यता चर्मक आधार पर कताक विरुद्ध एक पणित पदयंत्र छोड़ि अरु किछु नहि बिक। बल कंटरोल आ भद्रासी मे कटार स्नेहाक हरि पदयंत्र मे बिहार सर-कार अपन-इण्डिय नायक हा० बगलब मिश्रक नेतृत्व मे किछु समयक छैक एखल कनको मेलाह। हरि नीति सं एतेबेरि अवस्थि भेल जे आब मिथिलाक कुन सुखमान अपन भावभाषा मैथिली नहि पढ़त ओकरा बला मे उरू पढ़त। मैथिली पढ़ने ओकरा नोकरीक बाधा नहि छैक जे उरू सं छैक। ई दिनां बात जे उरूओ नोकरी नहि दिया सकैत छैक—पहिल लेप मे भनहि पाँच-दस हजार के बोलिका भेटि गेलैक। परन्तु प्रत्यक्ष सानने लोक मगान नहि तकैत अर।

आइ भाषा विचारक वातेरया नहि बोलिबोपावनक शक्ती अर। अंग्रेजी पढ़ब कोक हरी हुआरे आरय देवक आ हजरो पढ़े जे हजरा हगो बोलिका मेहन सत्य छैक। मैथिलीक सरकारी सम्मानक मानक गामा हजरा करार छैक। दोसर समुदायक

## कलकचाक ठेलावला

महानगर कलका सन विद्याल विक-वित आ खल घर मे बाट बाट बापु रचनाइ साधारण बात छैक ओ प्रयत्नको के केना देख-देखल न गेल छैक। दूर-दूर, दूक ट्रेपू टेपरी ग्राइडेट बालक बीच रिक्का ठेआक भिखार अनायासे ककरो जान आना दिय आकर्षित क छैम मे पूर्ण स्तरेन सलल होइर। ई केना कहैत हो जे मुनबल खनोपरि बिक मशीन ओकरापर लिखर नहि पाबि सकैछ, ओकर स्थान नहि क सकैछ। देव सं पैर कलकलाता समष्टि को बिहार मे पहरि बामो यह उद्योगक अस्तित्व ओ

माखमे भारतीय चेतनाक विकास तथा बाणीय शक्ता संचाल होइत छैक जे देश-वासीक स्वाक्षिण विकासक पूजापर पिक। इतर आराम छैक जे १० खुनक प्याल मैथिली आन्दोलन शक्ता नव मोन लेलक आ पहिल खेर मैथिल स्थान अपन योगित सं पटनाक रणधर के दूरा लेलक। ई आन्दोलन नकारात्मक नहि सकारात्मक छल, ककरा विरोध नहि अपन आपगत अधिकार प्राप्ति छल आ जे एकर प्राप्ति शक्ती प्रवर्धित अर जे समय प्राप्ति कब-नहुं दवानकल कम द सकैर। ओना निमित्तक स्वयंसेवक मित्रावर हजरापर अस्तै संकीर्णक हेतुल लोक के दिग-वेल्ड आ अवलोक लेलपर लोक के दिग-प्रमित करल छैक संस्कृत विद्या-विकासक पदयंत्र रचलक।

सरकारक हरि योजनाक-पाठा दू गोठ उल्लेख छैक। पहिल मैथिली आन्दोलन के दिगप्रमित केदार बाल मद्रासी मान्यता एखनो अंकक भय नै नहि हल्लेह जाणन आ कल कालक के छोड़ि आत कां रखने अना के मैथिल कइना मे संकोच दोष करैर आ अपन भावभाषा के मातृभाषाक रूप मे स्वीकार कइना सं विचारविचार। लोककल उद्यम हरि बिदेर के बनेने मे आगि मे चीक काच छैक। पच्छिम मैथिली आन्दोलन मे बहुसंख्यक मोदी वर्गक लोक छल जे संस्कृतक मोदी वर्गक लोक छल आ संस्कृतक द्वारा ई सुविधा योगी कां अपन स्वाधयंत्र होइर देखि आन्दोलन सं विमुक्त न बाणत। दोसर हरि वर्गक सरकारी सचवा सभ के मातृसी नामक 'कौल' प्रेरित घेनेक आ ओ सदा सरकारक पाछा मार्गदि होखैत रहल। मुक्तिम सर्वदाय मे जे सरकारी सचवा छल तकरा उरूक माखमे 'मर' बरा रेल गेलैक। हरि तहरे शालक दलक पया मकसुत बनि केवाक पूर्ण संगाना छैक। ओना होइक की से त मनिबो कल परन्तु हतेरि निवर्तक कल बा संकर जे अपन अपन इतिहास अनेको मिथिल-मैथिलीक अवा-बानिक छैक पूर्ण विनिमय एकर भाषम आ कर्म-आलय रह-ए।

नहि मैथी संकेत। संविधानक रोषा बने मोट किटक मे हो विवेची बावतकलित शक्ती मे देखल लोक आ ठेला भिखि लोक समान नहि अ सकैर।

ठेलापदी मोते ओ शक्ती माख छैक के न गेल बाव। ई ठेलापदीक किंतुकर बिक बाव मे बुआ अथवा बाला नहि होइत छैक। एकर सुरा ठेलापदी बकां सलल नहि रीर अथिद दूर, अंग्रेज कीन हाथ टेदेक कला खाली रीर छैक बकर प्रेइ मोट रही सं मिथिलोस रहैछ। हरि मे (सेवाथ पुख ३ पर)

से से हो परन्तु सरकारी योजनाक परचाव आन्दार्याही संस्कृत विद्यालय खुन्य जालत। ओना त एकर अर्थात् भुगत पहिले स्थान भ गेलक मुदा स्कूल शक्ती खुबि रहल-ए। दूरीन कल पहिले सं सातापन तेयार कएल बाइल आ पटना बा के 'पेक डेट' मे लोक दक्षता इ भवेर। ईस्वीसकन वाला उत्कार माय योन से टाका रखने छैक आ सेहो से-प्याव उपरी देने 'पेक डेट' मे बना होइत छैक। मात्र किछु नेतो देते 'इलसेसन' केनहारक सनन करवाक परीकार लोक के छोटि बाइत छैक। असी लेक अपन लोकक कपोली धरो० हल० ह० को एपाकि मेला छबि। लिखा अंगिका सुगत मे 'कोट' क मातृसी बारी।

माध्यमिक विद्यालय छेड़ ओकरा नाने पली-पराते जे कुन तराक आठ कटुटा सनोन बलीपुटी होइक बारी। छाता मे अलक नामक अनाम नहिरे जे होइत छै। अमली स्थिति देखने के फेछ? सलामी बीनोबाद। मोट बीनोबाद!! गामक बने जे भानड छैक आ खाल के 'दिव्य-कॉन्टि कला, जे मैट्रिक त नहि पास क सकल मुदा कुन तराई माध्यमिकक प्रयास एवं तरा क लेने भर—हरि स्कूल मे शिक्षक बनि गेल। ई भित बात भेल जे ओकर, संस्कृतक विषय तक नहि करय अकैत छैक। हगो शिक्षक मोदीय विमर बलक, छाता छाता लगात करैत छात्र बाइ मे हगो लोक मे लिखकनि 'भीष्मा अवकाश'। हरि तराई संस्कृतक केवल विकास होइत से त बुरा छै आ तलय मैथिलीक अस्तित्व अवस्थे इहल। हगो लोकनि संस्कृत-पाठ-शाळा मे पढ़ने की मैथिलीक प्राम्थमे। संस्कृत पाठशाळा मे व्याकरण, योगिष हा व्याव सभ मैथिलीक माध्यम सं पढ़ाबोल बाइत छल। आइक हरि स्कूलक भाषा हिन्दी छैक संस्कृत एक विषय अनिवार्य, अस्तै रचैक प्रत्येक आन विषय कम ओमोरी स्कूल सन रहलक आ जे विद्यार्थी बापू काक अल्ल-गेल छात्र मैथिली नहि पढ़ब छैक शाय कलक बाबत। एक सहर मे बरी त संस्कृतक सरापर सचाक बपूक शांठ रोषणाक ई पदयंत्र बिक।

—अभिराम





## चिह्नी पुरजी

देखिए बगाना प्रवेशक मेरु। कौन नौक लागत के वगन नहि बर सहरत छी। वास्तव मे पत्रिकाक माषा, विषय आओर सग वन सेह सुन्दर भार उपयोगी सेह अछि। एहि प्रयास हेतु अमना दिलि सं आर "देखी समाचार" परिवार सिंघि सं शतशः अभिमानदर आओर अभिमान स्वीकार कर।

—डा० हरकान्त मिश्र, झाडाबाद, देखिए बगाना पहुँचल। मन प्रफुल्लित भइ गेल। हम हार्दिक अभिमानना व्यक्त करैत छी की पत्रिका लख कुम्हार से कामना करैत छी।

देखिए बगाना! बन बीचनक प्रतीक बनल हे इगार इच्छा अछि आ सक्ने विचारवैतिक माषाक समुचित समार होयत।

विनु माषाक लोक अछि।  
बानू युवक समान  
चरैत बास पीवैत पानि

माषा पशुक समान  
हरा आशा अछि जो पूर्ण विचार  
करैत छी के अपने लोकक बाहिसर सं  
मे बनी माक सेवा करैत छी तकर मूल्य  
माझी पीढ़ी सेह करत।

—डा० महेश मिश्र, भद्रपुरा  
बर्तना देखि बगाना सब बन मिटवा  
तहिना ई पत्रिका हम मे कह पुन के पीढ़ी  
ज्योत रैन आ ई अन्तगत प्रकाशित  
होयत एह ईह हम विचार अछि। हमर  
सम बुझामना आ-वहनीया बल होयत।

—सूर्य नारायण मंडल, नई दिल्ली  
देखिए बगाना लेल बहुत रास कुम्हार  
मना। भरिलक वस्तुसंग देवा मे पावै नहि  
हटन, विचार रखी। अगिला अंक सं  
मूल्य आपूर्ति करव।  
अने लोकनि मेथली लेल खान-पान  
ढगा देने छी। हमरो छात्र लोकनिक किछु  
कृतव्य भय बात अछि ककर निर्वाह  
करन, से आशा अछि।

—कोरेन्द्र झा, दक्षिणंगा  
देखिए बगानाक पहिल अंक देखलौ।  
बौ ई 'मेथिली मुक्ति मोर्चा' के प्रमुख  
माषिक पत्र चित्र तखन पढ़रा घतेक  
सामान्य दंग सं छपने मुक्ति मोर्चाक भयस  
हैत।

हम निवेदन के धन्यप्रदान स्वीकृत  
दंग सं केल बाह। मुक्ति मोर्चा एखनचरि  
की हम कलक आ भविष्य मे की हम  
करबाक योजना बना रहल अछि से हमन-  
दारी सं छापी देख बाह। ओहि अंकक  
एक प्रति की बंदन कुमरक पता सं पठा  
देख बाह। 'मिहिर' मे हम देर ओ मुक्ति  
मोर्चाक प्रति किछु अभिमानजनक शब्द-  
समक प्रयोग करैत छलथ, ककर बलास  
हम 'मिहिर' मे पठा देने छलौ।

—नीती चौधरी, हल्द्वी

अभिनंदन प्रकाशन, २१/५, डा० देवदार रामान रोड, कलकत्ता ७००००२३, क लेख ओ पत्रिका आ द्वारा प्रकाशित

वर्षाक सूर्य, कलकत्ता-५, मे प्रकाशित। सम्पादक : श्री बनार्दन झा

## मिथिला एक्सप्रेसक सामने धरना

हमरा लोकनिक उत्तर कलकत्ता प्रति-  
निधि बनार्दनमिहिर के मत २५ अक्टूबर  
के विचार संस्था मे मैथिल युवक लोकनि  
शक्का टीशन पर क्या मेनाइ आ क्या  
रेल पटरी पर चलना द्य मिथिला हस्तो  
के पवास मिटि अरि अंककओने रहल।  
बाद मे अधिकारीक आवाहन सेटलाक  
बादे पटरी शुक्र मेले आ सम्भावित गाड़ी  
घंटाभरि विराम सं प्रस्थान केलक। युवक  
लोकनिक माँग छलनि के उत्तर विचार  
लेल मात्र २ गोटे गाड़ी देवाक कागो बड़  
दिहदारी होयत छैक तँ गाड़ी-बढ़ाओल  
बाय। पूर्व लेखक मेनेबर महोदय अपन  
आवाहन पूरा करवा केल छथि पाननचरि  
शक्का करैनीक हथो स्पेशल गाड़ी देवाक  
घोषणा तकर पठाते क चुल्ल छथि। कोना  
त उचित छैक के गाड़ी हललीपुर तक  
बाहत आ रोड बारत, परबन्...

मिथिला आ नार्थ बिहार हस्तो—  
इकर २ गोटे गाड़ी-बढ़ा सं पहिले सम्-  
ललीपुर बाहत कल आ आन गोल्पुर तक  
जाइत। गोल्पुर चक गोने हस्तोचरि  
अस्से-मेलेइ के भीड़ बढि गेलैर आ

देखिए बगाना आओर आन्दोलना-  
त्मक कार्यक्रम मे आदि सं मेथिली ओ  
मिथिला के नव प्द्वर्ति आ प्रतमाय आमा  
मे संजीवनीक संवार करय एहि केल हमर  
हार्दिक कामना अछि। पर-पत्रिकाक पुन  
पर कोनो माषाक-संघ-खेले अछि।  
देखिए बगानाक प्रथम अंक देखि कोने  
उल्लेख अछि। मुदा एकर प्रभावित पर  
लन्देइ बगाना बाहक। कारण हस्तो ओ  
हस्तो पुनक अग्रिहृद आनन्दक। देखि  
बगाना आन मेले माइ स्म मे सुतक-विह-  
रक, झुके-पिडइक, माँग-राखी-गाँगा मे  
हस्तो के प्रथम मैथिल बगानाक के  
उद्विग्न करय एहि लेल हमर आशा  
अछि। हमरा के धर्मोपे करय से देव।

—वेदनाथ मिश्र, गल्मा

□ प्रिय पत्रिकाक कपुण !  
बय मेथिली।

सुभाष आ एमोपेयक आशासन लेल  
आभारी छी। एक सेह केरि छिरी के  
देखिए बगाना आन्दोलनक पत्र चित्र,  
केयोनक नहि। इकर अर्थ आन्दोलना-  
त्मक चेतना बागत केन्द्र देखि—देखल  
घोषा बढ्योनाह नहि। चक्रा तारी  
हस्तो देखल बाय। बं हदि मे कोनो  
साथि बगाना बाय तँ निश संकोच लिखी,  
तार तरहक रचना धानी—बमरा लोकनि  
तकर स्वागतो नहि करव—आभारी सेरो  
तखन होयत बगाना कि एह एर प्रिय माण-  
गाम मे होइह—ई बन-क। चम पट्टि  
सकए। एहि कार्य मे अपने लोकनिक  
सहयोगक अपेक्षा अछि। आते माइ होयत-  
तारी विचारक संग—

—संपादक

संगहि श्रुतीकाल लोक के मुश्किल पर  
हललीपुर मे बढि एमोनाइ अंगभय म  
नेलेइ। इकर गेट पहिले सं चक रहे  
छर आ सं कोनहुना हक आन डा खुबो  
केलेइ त मासि-पीट बलिहटा बाहत छैक  
लोक २२. तीन-तीन दिन तक गेटकभराम  
पर तखन रैल-युल्ल-पिनाल। अन्तिम  
पट्टरी मे चम केनहार के नामा मेला  
हं से सिरीधानी होयत छैक तकर अनुमान  
त शुक्रमोर्गिह क संकेत।

छामगा पीट कल पहिले सं इकर २  
गोटे गाड़ी लेक बाहर सपूर्ण उद्योग विचार  
नेपाल आ उत्तर प्रदेशक एक पत्र भागक  
लोक के निर्भर करय पवैत छैक। तहिना  
ई दिहदारी सेहो नव नहि छैक। कोना  
लोक संका इर बीच कल मे कले भूलेक  
तकर अनुमान सके करय वा सकैछ। तँ  
सगता त ई छेले के गोल्पुर तक बं  
इकर गेटे कल त तार लेल थार कम  
हं कम २ गोटे गाड़ी देख बहलैक आ ई  
हुन गाड़ी सगलीपर तक रौत। दक्षिणंगा  
तक सही आन मेले ओतय तक बाहत।  
परबन् उचित सं हस्तो के की मतलब ?  
केनर बाग् गोल्पुर लेक के गाड़ी देखिनि  
सेह की थोइ ? मिथिलाचलक लोक युल्ल  
आ तँ सीमाना लेक होयतहुँ बगाना के  
कल दक्षिणंगाक क्री लाइन सेरो सगल-  
खाति मे पढ़य छैक। इहि निर्मित एक  
नहि अनेक देर लेक मंगल्य के लिखल  
लेखक-पत्रिका सगलो प्रसार। कम व  
हम चतार-चारका मे ई भदौत अस्से  
उल्लेख के बगानाक अभाव अभिमान  
छै—एतना देत छैक। कतिह सरकार  
त मोर माउगा गोतेव आनै। तँ आब-  
सकता छैक गोमर आन्दोलनक। हिला  
जुनि केने स्वामी समानात्मक अपेक्षा नहि  
कलक बा सकैछ। आशा आर वे सुभाष  
अगिला दिन लेक देवार रहता। देखि  
बगानाक शुभ कामना।

आन्दोलनक ले छावाला

देलाचलक मेनमि सेरो विचारलक  
अनुले लेक। बगाना आन लेक मे एक  
देलाचलक आनमदी ५० सं १५० तक  
होयत छैक बाह मे तीन व चरि आदमी  
तक रौत अरि इहि मे बलिहटा यका नहि-  
नवारी बगानाक सगामी स्वात छैक। तार-  
पर सं दिन मे ५-१० टाका शक्तिक पुच्छ  
के देखय पवैत छैक। युल्लक गारि आ  
हुल्लन उपलव्ध मे सेटि बाहत छै।

## कह लोचन कविराय

चमचा गुण के खान चिक करैछ  
वकरा चमचा छर कते से सतेक महान  
से सतेक महान राजनेता शुग चेता  
प्रातिशील कवि, कथाकार, शिक्षी, अभिनेता  
कह लोचन कविराय छप सम संभव बगचा  
भास मास बिभाता सम-जय-जय से बगचा

एह तारे के उगर्जन करैत। तार मे  
अन कल आनिकार के प्रतिआइ। केना  
हक केल एकटा लोकनि के देही लिता  
नहि रौत छैक। कल'अर' नौक पर खु-  
आ' कल वेकल रौत छैक। आदमी' यानि  
पीनि लाम बाह। गलत मे उकेर सृति  
रल। दिहदारी होइ छह, नलिखल'मे।  
परबन् चर माका लेवाक दस रौर नहि  
छैक। हेतु टुटो मयेया लेव केनरो  
अंकल मे लेव से केइ के स कम मे सेह  
निहार नहि। इत्य गेने काब मे अग्रिबा  
हेतुन। फलकानि परिभयक पबचतो  
खान पानक टोक नहि रौर लेक आ तँ  
इह लोकनिक देर पर कवियो माउल नहि  
होयत छैक।

इहि चंचा मे देही लोक मोबपुरी होय  
क अह। मिथिलाचलक मुनेर, मुल्लार  
पुर सभ्यताक मसूर सम अह। मधुबनी  
दक्षिणंगा आदि क्षेत्रक प्रमुख संका  
रिक्का मे देही लेक लेला से बड़ थोइ।  
से वे कुनू चंचा मे रिक्का मे हो उपभ-भम  
आ आर्थिक स्थिति घमाने छैक। समक  
वेग अपन ही शक्ति छोड़वाक सिखता  
छैक बीचनक प्रति मोह लेक आ समक  
प्रति निष्ठा लेक।

—मुल्लतवा अली

## बाळ गीत

## हुक्का-लोली

हुक्कालोली लेवे छी सम  
मच्छा के भइकावे छी सम  
अष्टाचार भगाने छी सम  
मेथिल-पुन कहने छी सम ॥

भारी के छकारे छी सम  
दुपचार के बारे छी सम  
भन-बन-अपनी घर छोली  
निर्बन्ता देखने छी सम ॥

मेर-भाव के मेदेवे छी सम  
दंभ-देव के धवेवे छी सम  
नाट-पाट मे दीप बरा के  
कत-कत ज्योति बगाने छी सम ॥

परिवन, अरिबन हो बा हरिबन  
सम सं शाय मिलने छी सम  
हुक्कालोली गीत गाने छी  
नव उल्लास पसार छी सम ॥

—सूर्य नारायण मंडल









## ६ दिसम्बर, १९८० : एकटा अमिट संस्मरण

ई कइत नहि पढ़त जे कोनो आंदोलनक पृष्ठभूमि बुझिबैकी खाती तैयार करैत छैक। कोनो सांस्कृतिक समस्या छेल ई नहि अनायास एक झुट भइ जाएत अछि। ई मानइ पड़त जे मिथिला से सेहो हज्जा मेडक अछि। समय-समय पर गोली, घमा मंच वा पत्रिकाक माध्यम सँ भावना उठाओख लेलक अछि। घुरा रहि तब से नीहिल स्वायत्तक प्रस्तावना रहलक। तय कथित मैथिली सेकी मैथिली मिथिलाके आरु में राखि अमन उखल खोजल कवा मे पयल रहल। कोनो ने-कोनो तरहें अमन स्थान समाज मे बना लेबाक लेल लोक केँ उकते रहल। रहि व मैथिली मिथिलाक फलक खुलाइत गेलक। आ मिथिलाक पताका फहराइत रहलक। एकर शब्दों उदाहरण अछि कलमक विचार सरकारक ओकर मिथिलाक प्रति किया कलाप, घुरा मैथिल रहि लक्ष्मी सभ सँ कहिया तक उकाइत रहल। आ तकर बनान देलकेंक ई.दिसम्बर, १९८० क दिन।

६ दिसम्बर, १९८० क पहिले तक लोकक चारणा रहैक छै मैथिल आंदोलन नहि कइ सकैत अछि। अर्थात् घुरा नहि कइ सकैत अछि। मैथिल मिथिलक होइत अछि, त ओकर बोझ या गम गम अभिनयक विचारन आ घुरे तक रहैत छैक, ओकर साहज मा पेरुख टाट झुलकावड आ आरि लोट तक रहैत छैक, ओकर दुष्प्रचारी मणिला आ परीक्षा पास कइत रहैत छैक। घुरा, ६ दिसम्बर, १९८० रहि चारणाक मिथ्या समाजित कइ देलक। तय कथित मैथिली मिथिला सेकी केँ दौते आंगुर कइत पढ़लक। मैथिली केँ मना कइ जायबला निष्पत्तक माय उनिक उठलक। गोलेली आ विक्कम लफाकड मच पर सुशोभित होवड बलाक होव ठेकान पर आनि गेलकें आ समय से बेसी 'भोक्क-मति-निधि' तथा मिथिलाकका हटि गेलक, ओकर कुली कोइस कोलक।

खुलख गोली मैदानसँ आरम्भ भेलक। विचारक रहैक जे पटनाक बुद्धिबिनी मैथिलक कयार जागि जेतक, मैथिलक भौद गोली मैदान सँ कइ आर कडाक बरि ठेकि जेतक। एहेन विस्तार कइ छेना मे सांस्कृतिक कोनो प्रस्ने नहि उठैत छेलक। कलाप रहि सँ पूर्ण बनता सरकारक समय पटना मे गेल हकटा आर प्रदर्शन बाहि मे पटनाक एट आ टाह चारिचम सेहो मैथिलीक प्रवर्तन कइवड मे लोकक अनुभव नहि कयने खाति। घुरा रहि प्रदर्शन मे हुनका लोकनि केँ कोन भय, केहेन भाषा बख

केलकनि नहि जानि सरकार ककर आ कहरा छेल। तकर ज्ञान नहि रहलनि। दण्ड अछि जे बखनो तक मैथिलक अर्थ ओ लोकनि किछु मुठ्ठी भरि तथा कथित समय लोक तक सीमित राखबाक चेष्टा मे छलियुता, रहि गलत चारणाक निराकरण ६ दिसम्बर, १९८० क दिन कइ देलक। अरुकी मैथिल-पुन सभ मांटिक रंग लाल कइ देलक। को आनो भयत सम हेर चलाक रहल त अनताह ओ, आ बनतनि हुनकर मायि। ई बात बखस छैक—ने भयत समय ने छुलहर छुट्य अर्थात् भयत छाळे नहि भयैत अछि। घुरा ओ मरत बखस ताहि से सहैर नहि।

ओहि दिन चोटाएल छतान सभ केँ दबाइ-बीरोक ककरति छेलक। ओकर किछु लोक विन्वार् होइत छेल छेव मे पतियानी मे जाइ छल। एकर ओकर संगी इतरि रहल छेलक, ओकर ओ सभ अखबारक पत्रा से भयन-भयन नाम छपवड छेल वेहाल छल। रहि सँ बेसी निष्पत्ता आर की भइ सकैत छैक। रहि सँ बेसी घुलता आर की भइ सकैत छैक जे सुभा स्वादीकारि लठीक मारि सँ ओबचाव भेल छल, आ ओकर किछु लोक सवा-बारिक ओतड चिन्ता-परिचय करला मे, हुनकर सखन करला मे लागल छल। आ बाह रे विवेक।

जे होइत छै ते नीके होइत छैक। महुत केँ चिन्तबाक मोका लोक केँ भेट-लेक। ओकर छल-बल-कल देलनाक अवसर छेलक। एकटा कलबीयो रहते घन छैक—कुन्नि नमो, कि कुन्नि नमो। ... केनत हस्ताक्षर बात—जे एगो कसु हसर दइक बोझा नहि कइ, कइलनि—मसी हुनि रोली तइ कहुना नमो छयैत। हमरा जगजग बेना ओ थार ब्लाकक पुलि तक हँदिया होय। ... घुरा, तेँ कि लोक रहि सँ हलोहा म बाहर। तेँ कि हम अमन संबैधानिक अधिकार लोकि देव ? कोँ करैत माँदि छेल काहि सँ एकर समय घरीर कलक अछि। हमरा घरीर पर माथ ओकरे अधिकार छैक बकर रूच पीनि हमरा समय बीक सँच-रित भेल अछि। ६ दिसम्बर, १९८० एकर पत्रा सवत छैक। को दिन मैथिल संतानक बीचक दलावे छैक।

माय के माय कवा मे जाब कथीन ? कबोहट रोखर बी, सर्वश्री भीम भार, प्रवाली भार गोकुल नाच बी, पुण्डु बी एवं भार राबमोहन बी अमन कलिय गौक बेना निमाहैर रहल। सुलिया बी आ

किरिच बी ? श्री चंद्रमौल खाँ आ श्री पीताम्बर पाठक पूर्ण सक्रिय छल। कि केही से किछु नहि, आ कइछक त बडे अवकाश। एकरिच प्रभावक स्वायत्त पत्र-पत्रिकाक निपटहता पर ओ आ दोहर दिख प्रेस पर आन्तरिक दबाव। प्रेस कल कइ देबाक चलत। माँदि-पानिक सवा-नक छल आर कडाक चोलावा पर बल, जे भूत, निरुद्धा आँन परचनकारी पर तादसतोइ कालीक प्रहार भइऽ मैथिली तीन करिहक भाषा, से भूत, मिथिलाक मुल्लानक भाषा मैथिली, से भूत, अर्थात् सीता, बनक आ विद्यापतक मिथिला भइऽ। ... तबान सख को ? ... सर माँदि विचार सरकार घोषणा, आ सख माँदि कोरी मुहर द्वारा सेव मे आचार केँ ताँदि-मरोहि कइ जाय देबाक बलद्वार। रेडियो प्रसारण मे नमनना छलैत। समनन हलछैय। ... जे नायक नहि भइ सकल से अमन ककर ? ... तकर अधिक-समलीय भेल ६ दिसम्बर, १९८० ककर मुख्य नारा छलक —

हिन्दु-मुस्लिम बीच कवान,  
हम सब छी मैथिल संतान।

## त्रोणित दे त्रोणित मैथिलार्थ

मिथिला गोरख बा० दक्षणा आ मिथिला-मैथिलीक उदात्तक लेख आन्दोलन-शुल चुकने रहिय आ कानिदरौ वीर कवि राजाचार्यक कदम कानिदरौ विनयी उगिय लागल। मिथिलाचल सँ प्रभावहार पसरल मैथिलक बीच राजाचार्यक विचार कुना पढ़लक—त्रोणित दे त्रोणित मैथिलार्थ, चारौ तकबल अछि लखम हरा। किछु गाँम-पक सुतल स्वनामधन्य मे पैल भुं छेल बन सय। त्रोणित त हूँ रामो, धाम परमेश देवाक ऊँचा नहि केहन।

कानि लखत नहि। कानि बाब-नमनक पालिक नहि पिक कोनो गाछ-किरीछक फल-पूल नहि पिक। कोँ तँ कइस्य चौबो। शक्ति, पीस पुख सँ निश्चित लाल बाण, गरम-नरम चिनगी बिक जे अटुल बाता-बयन पतिवै बचकि उठैत अछि। रहि छैक समर्थि भावना, हकानि निष्ठा, पैर, साहस का समयक संग मोन मे उताल तरा बकाँ उमंगक छोल बहरि छनारह आयलक। किछु एतय त विचारति ज्वक मंच सँ उताल तरंग उठैत अछि। विद्या-पतिक पदबलीक संग उमंगला नागरक आँवर, गोहड़ महाराजक तला आ अर-सक राखी राजनेताक मेघ-मयन (मर्ग नहि) सँ उताल तरंग उठैत अछि। गुटपन्दी मे अन्धत सार्य ओछुर, झुट ला भावक कतिपय कलिक बिछोल मे उठैत अछि—कानि क आहवान...

बा० दक्षणा आ केँ मारि पकन, राब-बाचार्य केँ कुहेर छटपटाव लोकि देव,

बाहि सरकारक शणितक लाल भोदि लोक रितक इनन करव कलिय छैक, जे को सँचि-चान मे ताल पर राखि शासन करैत, जे ओ गोली डहा हावे निरीह बचा, कुछकाय दूड अवका ली पर निर्मम प्रहार करैत, ओकरा पर मरोवा कयनाह कोनो तारक ओचिय नहि रहैत अछि। जे नेता लोकनि भूतपूर्व सरकारक समय अगना केँ मैथिली-भक्त साक्षित करैत छल। जे प्रतिनिधि लोकनि आस्वादन रेत छल। जे सभा मे अनेत देरी लोक मोग के पूरा भवस कर-ताह, हुनका ओकनिक द्रविक कोन विस्वास ? सरकार मातृभूमिक संतान केँ इहेन मुखयात संघ आ दल सँ सम्बन्धित होपवाक निराधार घोषणा कइ सकैत अछि बाहि दलक एक भाषा कपूरल मे खिबाव छैक, जे दल मैथिलीक वीर बिरोधी अछि, 'मिथिला सवत केँ' कहीं तक आबडौँ आ जे नहि आबडौँ जे ६ दिसम्बर, १९८० क दिन एकटा बगबियार अमिट चेहरा इति हास से सदा सदा के छैक अछि करैत मायक मुकि लेल संपर्क कुभारम कन-कन।

— सुशील

दामोदर लाल दास केँ वेहाल देखब आ विद्यापति-पक मंच सँ मैथिलक गतक कमानल देखब।

आब ई स्पष्ट भरोल अछि जे मैथिलक दृग सँ अछि—सर्पित सेवीक आ सौदमारक। हुनक अगना-अगना उ घोड़ छैक। मैथिली केँ अमने बरीती कुसमल सौदमार सँ सखिलत मधुर भूतबास शाक से बंधान हगोने रहैत अछि त दोहर रित समर्थित लोक दिन-राति स्वनामक कार्य मे व्यस्त। जँ सारिय के बात कइल बाब त आहचरिक मैथिलीक यकाक्षित सारिल सँ बहुत बेसी अग्रशक्ति अकारक दुनियाँ मे पड़ल अछि। जँ मूलांकन कइल बाब त निरिचिबे ई अग्रशक्ति सारिय प्रकाशित साहित्य सँ बेसी मिलक्षण आ सतीरिय अछि। परज्व एकर रजयिता सय स्वामिमानी आ भाषा प्रेमी देवाक काने सदा अनुवेवा मे रहला अछि, अनिश्चिदर रहलाह अछि। ई हुनक सँ दबा कथित मैथिलीक कानेवार कोननि गुप्ती खने छयि। सौदमार सँ समस्त सुक-सुबिबा हकिया अमना सार्य विद्व क रहल अछि। आ रहि दूरा विपरीत मिन्दुक बीच ठाढ़ छयि विद्यापति' एक तिल ताकि हरेत छयि त दोहर दिव झुरित आलि व नोरक चार नहर व्योत छनि।

अय-अय भरीब हबरो कर्षकार सुतला आ गल्ला सँ की देलक ? बाचरि मुहर

सेमथि पृष्ठ ६ पर

## कथा

ओकरा तिस ध्यान गेठ। विलोचन छह—  
सुलोचन छोट भार। पछिला माथ एक  
नेबर भड्डमा एक पौवा आनि सेने राख  
इया छह। एक कनमा दीनि क चौबीस  
घंटा सुले छै। आचर्यो लाइ छे लोक  
नोव्हा पर बसे चोर किइ दे छे ?...

## ठकैतो

आइ दू या वयना घले।

मेखक नोबर चाउर-दाहि, तीमन-  
तरकारी कीन बराकर गेठ राख। ओकरा  
छूरा निराक, सोरखा पर सख्या छीनि  
छेकै आ तकर एकेके घंटाक बाद, मानै  
बगारद केके दकटा छोड़ा पोखरि मे नहाए  
गेले आ दूने गेले।

× × ×

दकटा हल-बेदाह छै। कोपी,  
इन्टी, छिगरी, हवा, छुटे घाउज  
खबरि सं आब ककरी कोनो तरक उले-  
बना, कि आचर्य, कि तामस ने होइ  
छै। घेर किछु दिन रहिते सात कले  
सांक मे दू गाटे के बरि क चौर, चरी,  
सोया छीनि छेकै। जेना चौबक दाम  
चढ़ने लोक कम स-कम सभान कीन जोइ  
तहिना बरल सभाचार दुमि-मुनि निर-  
मिता क रति बाइद आ सांक मे पर सं  
बरोनाइ भर केने बाइद। ओना कह  
बा कहे छे छे सभठाम स इइद शमा  
इइद लोला छै। मुदा लोक कत रात  
समुके घर-साब मोल-याल बेदाक नेही  
बिना हेने ते।

बिचन-बिना दुकी तलेइ रई छै।  
पेसा अह, अंक सं कुंधी लडबाक।  
ने बाकल खो आही मे। बरल सभाइ  
मेछेर से काब मानै छेसा नहि गेनाइ  
आभासिक छै—साइ पर सं एक त दार  
सोरे क दोवर नैलोहे। अभाए होइ  
देखबाक रई छे जे काम कोनो हो बार  
सं कम-सकम टेकल लो, कम-सकम  
बोस देबे भई, इन्टी-देबे भई, अन्य  
मुनिवा देबे भई। मुदा इकरी भावयका  
कही रहि गेने अनिय मे। विपर बाब  
बिन्द्याद। भासुइ वरारक बरते सभा-  
बान सब सं होइत रहले त मुनी-कहा  
त बेग सवाल कथा मे खेर.....हे लवाल  
रही सांक स अंक मिश्रा मे। तऊने मो  
पहुंचल।

—आविन्द बाबू।

—की छै ?

मुनी मुनौनहि पुछे छिरे, आइ पेसा  
मे लोकक मुनमंडक स नेही मालपूरा आ  
प्यनाकर्षक दुकार छे केछुटेकरक कोन  
पर उगेत-बेन हरियका अंक सब।

—मुनोचन स सभ किछु की नै छेकै।

—की ?

इकबेर किछु दूर, मे नै आइल,  
जेना नेटरी धमक म गेला पर अभास-  
बाम अंक सब लहीन पर आम लगे छै।  
—छंदा छीनि छेकै।

—की छीनि छेकै ?

अकाम्यास एक सास मोष पर आनि  
गेठ छह। दूरी उठा सके छली से उठल।

दकटा ने दकटा हाकी चारी रहिते छै—  
सबदिन।

—पुनिके त कल दिवा स मे भत  
छह छै। ओकरा कोन गन छे इच्छेय  
करबाक ?

घरना मे घटना पर वयना मोन पड़  
छो छै, किछु दिन पहिले दकटा दूक बला  
मने चौमली नै देखे से चौक पुछि  
ओकरा दूक पर छटकि गेठ दूधवर केबिन  
दिर आ नव 'कर' कागल दूधर रोके  
गाही आले जवस केछ गुरा रोके  
किइ ? चौधिया गौटी स डा कथीक ?  
अतए कहदिन पुछि रिआरिग एकदि  
छेकै संतुलन विगाहे आ लोके छुडियो  
स बगारद दकटा परिचार पर चदि गेले  
दूधर आ पुछि संगि परादस यई आ  
नेटी स लकल मरि गेले-आइ छे। लती  
के कादि के अस्ताल उ बरद-लले ओकरो  
रखे मे घम मुटि गेले। पर मे सभा रई,  
बान माकल आमुलाक दोकर नाम छे की-  
टी० रोड।

—चोभा बला पुह, त हलस बाने  
रहे छै।

—केदाला पर त जवले पकड़  
बा सके छले।

—मुनोचन के हला कर चारै छले...

सीमा पर रह छे खुभाइ दू अही  
खुभाइ दू पर पड़ छे महादूक पूल बिहार  
विष दकटा गौं ठोकल छे अधिकतम भार  
पांच टन। लाबिओ दूक पांच टन स भारी  
रोइ छे दिन मे कम स कम दू घेर पूल बाम  
रोइ छे माल दूक सवक दू घाली आन,  
किपा, काद, टेपो आ लोक। पूल सके-  
रियाक रोपी कही शराराइत रई, पूल  
बाम रई छै। खोराका पर ककैत पकड़  
बा सके छले। मुनोचन हला नै केने हेने।  
—मुदा हला केनहु स लोक सभ  
देखिते ?...

—लोक सभ दिन प्रति दिन कावर  
देवक मेठ बा रहल।

—सके अपन बान के मोह छै।

—के उकत स दुमरी मोल छे ग  
ह, बान त बान। भाय भादिन आ पैट  
बलिख एक चारी सभन बायक भिन्ता  
केस स अपनो केदे कामाक लोहरी  
आवांका स रहिते छै।

—बीमन अभाइ मे पकड़ बा रहल छै  
चकाओत....

—बात-बात पर बम-बाकी होब को  
छै, चकू बमक लो छै मोली चक  
लौ छै।

विलोचन कमरू छले, इकपा गेठ  
ओ इपरा रिख देखैत रहल, सभ ओकरा  
तिस देखैत रहियो। संभवत ओ चारै छल  
जे आरविन्द बाबू किछु इपन कला आ  
ही बल्ला बाइ स आ रिपति स उगाव  
हेत इपरा ने मुसा रहल हन जे की  
बाही अथवा की भेटेरिल कंसयमान,  
युटिलाइशन परसेटेर, प्राफिट रेथियो,

लंब उकीरी एके मे निगर मेठ माथ मे  
बोधमरि कर' कागल राख।

—हत् छो सुलोचन ?

दकटा खरयोनी इमर बगदा करे  
छपि ओना अलउ मे इमर सधला नै छल  
है। घरुमी लोकिक कछम सदोदण मेठ  
बा रहल छे केना ककरा रोी की बरि  
मेले रेठ मे रस्ता पर, गबार मे, किछु दिन  
पहिले किछु साल पहिले, ओकिर देखल,  
बानक सुल, देखक भोलाछाई। क दू-  
माइ सेह। निगर मेठ बा रहल छे बर मे  
तखन ओको उदाहरण सभ अविने कलन,  
ककरा गाम मे, के झूले तखन कया  
अविने अबाध बराम' पर, पुनिस स मोट-  
माट कर' पर, सवके, भइ सवक कइबाक  
छेक दकटा क कया त रहिते टा छै, मुदा  
है कोनो सकारी कायल्य त छिप नै जे  
काब के तिठाबि द, बाइ विमि-विमि  
इरल इरल कया सवक पायन के बाइ  
की दल बाइ। से बात सभाइ केनाइ  
मायसक छले, कलनो भैनेबर भाविक  
गलनाइ आरंभ क सके छले इमरा किछु  
उपराइ ने राख-जेना बरबर कागल ह।  
खरयोनी आइ बिचि के संग करे छिप।  
इकरे करे छे पूरा चउर।

—गेट पर।

विलोचन आइ मिमिया गेठ जेना  
इइर सवाण सन प्रान कचरीक सभाज  
रोइ। सभ केछुटेर के भाँक करे छी।  
एते काल स चाखुइ छह।

—नववरी।

आइ बाम के बते जवरी संभस हो  
खतम केनाइ कावरक लो' कागल संभक  
अनला सेरो देखे। अग-पास मे  
नीक होइत नै छै। दूर बाइ पकड़ जेही  
टीविक, देखि जेना।

× × ×

—बात मुदा बड़ विचित्र दूसा  
रहल।

—इमरा त मुदा सवेइ म रहल।

—सवेइ इमरो म रहल। खोदना

सय नै माँचि रहल।

—सरासर बर-भावी क रहल, नमरी  
सबन अइ।

—बही साइकि देखि केछक  
अथवा ककरी बाने छले वेइ छिनि-कोहि  
जेकै।

—हत् इमरा सवके नाटक देखा  
रहल। बाइ के छुनी नै देखे छी।

इरन त है नै नुसाइ।

इमर कीण प्रविनाइ छल। दू बरल  
स त देखि रहल छिइ कहियो कोनो तरक  
गवकी नै केने छल कम-स-कम कम बगरि  
पर नै आइल छल।

दकटा सके के अही नै चिन्ने छिरे  
आविन्द बाबू, है चकराचि सभ अही नै  
बूझने सा-सा बसल अइ इमरा।

—आविन्द बाबू त बकरे सहेरे पर  
बिस्वास क छे छुनि। दकटा आइ मसलन  
जानाइ बुझिओ अथवा नै मुदा सभ आगे-



आर मेंटेशन मे अमना स दुधिरियर के विरुद्ध रतनर अचरक बुन्क वार हे के कन्वे कन्वेर गेटर उन्के ।

—इन्का अमर बाट छे । दुधेचनना परतु हमरा व पाद मोग' आइल छल ।

—देखिये ?

—ने ।

सोपा को हमरो व माने राइ । ओकर सार भा बाप आइल रहे । सरदेटीक विचार छले । तीन सौ सोपा मंगलक, हमरा ने छल-उते ने छल । कजिये, आन ठाम कोविषा कर । वंमस्तः सेो ने सेल्लेन सीक मे देरा पर आइल कजिये एक सीक स्पष्टता क देतो नोकीक लोगार बराडे । से ओ सोपा दखने बेदी ने अर ।

—निर त ने केले ।

—निश्चित कर स साइकिड-मरी केवि क' सोपा पर पठा देखलर पता लगा लिअ ओकर बाप आ सभ बलि गेल हेल ।

—सबल व थक्का वत' देगार उचित ने हेत ।

—अने सोचिक देखिगो के दिन देखार दकरो फाते से दु-मीन सीके छेल ? पड़ी फाल्सेर छले की मी तिवादी बी ? ई त देह ही मे नव भाने रहिये कचे सरल बकौलिये भ्ना बी !

—साइकिड भा बी भला छले-सेकब हेत । ओकर कचे देते तिवादी बी ?

—सादे पांच ही से नव भाने अने अजिये । कचे सरल वकौ लिये भ्ना बी ? तीन शाख । डाइरेक्टर साइवके सनक सगर भेलन आ ओकरा दिया देखियन अइदौर व फाल्स् साइकिड अजोद अर्थ ।

—वह, ने आवइ स अंगने देहु ? साइकिड याल' कने की भर्ता ?

बात-बात पर उतरावारी केनार डुर, क विशेषता छन । मोरी निच मे तिवादी की लीकार केकन के ओर साइकिड के दू लो-मददर ही स बी ने देते केओ भोना भी हरो चोक्लिन के आ भी एक-दमे भरलंडी बना देने ररकिन साइकिड के । अही बात पर डुर से फेर बारम्स होम' लाजनि डुरा इवने दरबान आवि गेल,

—सरो भ्रम स कम तीन सौ त मये गेल हेत ओकरा ।

—पाइ मारि लेकक आ भूटे के नेप चुभा रहलर ।

एक मिमेटक छेल मानि किअ के सचे किनि लेकक स एकर कप्यन की गेले ? पड़ी साइकिड रहे कमनीक आ साउर-राखि मेक । तीमन-सरकारी के पाइ देने रहिये सेरो मेक दू चारि थपर न' देने होइ तरे टा मेले ओकर हिसा ।

ई छला मेर ह'चाल । दिनका मेरक मील चाब' देवी म देवाक चित्रा व केकनि संभवतः इरा टीके ओकर कप्यन पड़ी किछु छिनेले । अने मेर मेरक चर्चा होइ छे उंच मोन पवि बाइए खुल आर ओर व कागि गेल ।

x x x

दरबान आवि क' दुचित केकक से इन्का लक देरावक रल बाइर सरलक लीका रोख' दे मे दुनि गेले । कमनीक राही स ओकरा लोक लव अस्तवाक क बाइल गेले ।

आइ गयी वेदीए छले । हुनार छले से उठिन क राखि देत बिरिक, इलाइ दे बला के भरवो छे वेदेने रौद । कमनीक दे इरियाक रोखरि छे नेदेवाक आ यम दून काब करताक छेउ पानि उपशर होइ छे ओर पोखरि स । बाकर स कमे छे डुरा लू वेदी महीर छे । लौड़ा अंग मे कने थालू बलि गेले आ दुनि गेले फट्टा क' लोक ओकरा बहार केकले ।

—कीनो गइवइ व ने हेते सारेव ? दरबान कप्यनीके इलाख म वेवाक रोका अचित छल

—ने, दरन कोनो बात व ने देवाक चारी । हम ओकरा भासल केलिये ।

—पुछकइ ने ? दरबान पूर्णदण भासल होम' चारि छल ।

—ने दुकि क व ने गेकइ डुरा एतना हाल मे पूछाक होए रहे छे लोकके । तो बाइ ।

सुलोचन आवि गेल ओ आइल लल दरबानक संगरि डुरा पावइर ठाढ़ छल । संभवतः प्रतीषा क रहल छल के दरबानक बात खतम होइ तखन होला बाइ । टा हेत आइल भइआइर लट्टआइर राइ मेक ।

—ही मेकी सुलोचन ?

—बाबू । सबटा कीनि लेकन ।

—केना छीनि लेकको ?

इन्का बान-पहिबानी मेटा गेले । ओ कप्यन देग हमरे बरा क गेले पान सगर के । तखने तीन गोटे आधिक धेरि लेकक आ फे दे चक्क भिरा देलक ।

—इन्का फिद ने केल्दी ?

—बलक 'धका करते व फादि देती । कलेमये निचा भूरे पकस धर खोली-खोली तकले व दुनि कि ।

—सबलन ?

—ओरा, साइकिड भा पड़ी क लेकक किछु डुरा पाइ रहइ से आ बेदी स चारी बहार क लेकक ताबत ओ जान-पहिबानी छेरो आइल । ओकर देग व पहिरि हमरा स छिनि नेतरि रहे । चक्क भिरा क ओकरो केवी हठोधि लेकके । लो मे इन्का टोक दाढ़ रहे, ओही पर चर्दिक भागि गेल ।

—साभिओ ल लेकको ?

—ह'

—ओर बान-पहिबानी की सभ लेकके ?

—भाट लो संधा रहे बग से मेक मे क्या कर' आइल रहे । बेनीयो मे नीस फनीव सोपा रहे, पड़ी रहे ।

—मेवक टाका तोड़' पकतो ?

x x x

सुलोचन डुरे रहल । बाभी हेरा गेले त ताका तोड़हि पकते ।

—ई राके इकर जप-वारी छिये ।

हिनकर डिमनाइ हमरा नीक ने अगाध सुलोचन के इंटवनिगाइ दुआरे ने, मिरा

वाताजिप मे अमन इरियार देवाक अंश

मे मूलखेप केकनि त अलक मे, हिनकर

चाहि हमरा एमकोरसी ने होइएइ ।

—हमर की जप-वारी मेले ?

सुलोचन भिरमिराएलः

—बाभी ल क फिद गेले बाबार ?

—च की करिदिये ?

—दरबान लग बापा क क वेवाक

चाहि छवो कोनो यो तोहर पर छिपी के

भाट राइव कर्षा चल्की चामी नबतेव

नबार । इबार बेर कहि चुकल छी । सन

काब मे ननारी । पांको ताका भात केकार

म गेले । देहु सै त लामे कस्ते । की

ओ तिवादी बी ?

—बेसीव सयेने अमने छलिये । गोद-

रेकक छले ।

—ओगोहरी कमनीक सात-साढ़े सात

ही से हरदिपूत ।

ओ राखि रहल कजियन आ हम

जोला रहल छली । नोकरक सोको मे

दिना स अमको ने केळ बा कके छल ।

अने राकमुतक चामी यो ल बार छवि

ककसा आ अशीदारी । ओना हमर

कूयटक चामी क्या क क नरिए बार

जिये...बात खतम करक चारी । सभ

सेरो मेक बा रहल छले आ थूख तेब मेअ

बा रहल छल । बातक सल पकड़ौ ।

ओ मेक ताका तोड़वान उपाय कर

आ देखरी के लेकक कोनो ब्यवस्था म

कके छे की ने ।

—कहाँ छे कोनो उमान ?

—किछु ने छी ?

—भाव आ राखि क्या क गेल

छलिये । ओकरा केना मरू द मोन पकल

होइ ।

—भइडा । तो की गेट पर स डार-

वर के पठा दे म ।

—दूर गाढ़ो त गेल छे ओकरे ।

—किद ? एनेट्टा स ने ल बाइर

गेलेइ छोड़ा के भलताक !

—देसर गेलेइ अपना डाकटर हाथेइ

के बवाल' ।

—मोहो । हो...'

साढ़े एगारह बाबि रहल छले । आन

दिन भिडन बाढ़े पाइर बने मोन पावे छल

तखन होइ उल के आब उठल चारी ।

आइ एखने स अकल छ पूसा रहल छल ।

सेवाक केळ बाइर पकस गेल । डुरा गाड़ी

आयोइ सबन ने । पता ने कचे देरी

खलते ।

सब अमन-अमन काब मे कागि गेल

छल । सेव मेर सभ डुरा अमनवाएल-

छल ।

सन । रहि-रहि क मया दिख देखेत आ गायीक स्तर अमानेत । समूह' कायत-यत्र सविधान जगल रही । दरबान देखैल आइल । सब साकाकि म गेल ।

—डोड़ा व मरि गेले सारेव ।

ह' ।

सबहक स्तर इनके बेर उठले आ निस्तबता पहरि गेले । मान मशीनक सर आवि रहल छले । केना सब मनुख नीक म गेल हो । गाड़ी आव मे त भारो बिबम्भ म अते ।

अर खचारा छीका के आइर, सेरो एखने इन्का कडे । चुनी मंग होइ छे । इन्का मेक-मुका के नरिए रहल गेलनि ।

x x x

मोन-मेव निरालेव, मिमांशा केत नाइर बज्योड । मेर पडू-वटो । एखन पांच गोटे की किछु सदस्य बाहर गेल छवि । सुलोचनः ताका तोड़ि चुकल छल । एनेट्टा तोड़' पकले । नोकी क सुदीकेट चामी गेट गेले । दिन मे आया-रोटी आबा भाव कले छे से गाड़ी अनुयाय मे बनल रहे । ओकरा उदरस्य केळ गेले ।

आइ केओ, कोनो सरलक चिकारत ने केळके । मात-दाकि मे चिकारतो की म सके छले ।

—मोटका चाउरक भात छी ?

मोटका चाउर' सुलोचनक केळ सगार

छे ।

—ने, काहिर सवि गेले । भार मने

छलिये ।

x x x

इन्का गाड़ी आवि गेल रहे । डुरावर बाकटर हाथेव के पर तक छोड़ि दलनि त

देरी गेले । पांको बन सगर म क पांच

मारल दूर होइल इन्विवाइ गेओ । सीबनक

पहिल निगर-सेशनक उद्घाटन मेले । अमेक

आरम्भ छे तै पहिल । टोयल कफ की

पाचाही सेवाक किळ उठले । मेर इन्काव

देखियन । पान सेवाक केळ बेर एक मारल

आनू गेल गाड़ी ।

सुखी काल मेर ह'चान पूछअइ ।

आइ सेवाक, माने इक लौ सचारी

सेवाक की कले ?

मेर खर्व मे देखा दिओ । लाडा व

भोरो ने छले ने ?

आइ बेर व कते जे इडबल्ट क चकी ।

पानक पीक सगारत हमर उतर

छल ।

समिलित टाका मे इ'नक आभाव

एक केर दुनि गेले

—कुगाल

### रेड डेविली

## प्रशासने लकैत अछि

रेड-कुट्टना तथा रेल डेविली भाद-काकि भारतीय रेलक दिनवर्ग वर्का म गेल अछि । समाचार पत्रक पाठक लोकनि सेहो रहि तरहक घटनाक समाचार वा त पढ़िने नहि छथि वा सँ पढ़ना के-नि त वहु सामान्य ढंग सँ । स्वभावतः हुनकर कोनो प्रतिक्रिया नहि होत छनि । घटना मनहि छोट सँ छोट हो वा १२ नवम्बरक साठ सात जन सभ ६ बुद्धद्वन्द्वपाट जन पेश सँ पेश बिहक ने हो । तँ मस्तिष्क लोक ई नहि धारण बाहिर के बलन दकटा बगी भुक्तान म गेलक सभक ऊ-ए आदमी केमा मुश्किल सेक बलन जात सत या बागी कोसीक पेट ने क्या गेलक तबन दहशिए आदमी केमा मुश्किल सेक होत ? तँ लोकक मन से भारतीय समाचार पत्रक प्रति बकर समाचार ने मिलियो नहि खलता नहि रैत छक घुना नहि बाँत छैक । लोक नहि जानय चाँतत अछि जे प्रेश-भावीनताक बाहि छैक प्रेश बल सभ चिन्तिया खल अछि असली अर्थ 'बलाकार' 'कण्डुद' 'बन्धुद' आदि जनविरोधी समाचारक उपायन प्रसारणे या फिएक होए छह । परन्तु दकटा मुक्तप्राप्ती केँ दहशिएक समाचार पढ़ि प्रतिक्रिया आवश्यक होइत छैक आ वेह प्रतिक्रिया समार जिलना केँक नाथ केँकक अछि ।

घटना घट छोट अछि समाचार पत्रक भाषा मे । घटनाक एगो समाचार पत्रक अनुसार आभोग भादवर्जन लोकक सामान बहेत छ लेलक । व्यापार, श्रमिक अर्थ बढी स्वयं क्या छी से हार अमरोच । ओना अर्थ अगो सीधि सकेत छी जे डकैतक दल ने छेकैक कतेक लोक आ ओकर सभक आवश्यकता कतेक सीमित छेकैक जे मात्र खामया भादवर्जन लोकक सामान ख्य वीकीक बीन-बान बकसि देलकैक । सले संतोष नामक बसु एल्लो कम सँ कम दहेत मे त छेक ।

घटना विगत स नवम्बरक चिक । गाडी टाटा मुक्तमपुर एक्सप्रेस । ओटापर क दकटा बिना खामया १२५ व्यक्ति, आदिने मोट दशक महिला छकीह अनन-अनन बजार दैने बलन गाडी खुजत अछि । गाडी बलन हरोती मे कतेक अछि त विडवाक लोकक संख्या दोवर म बाइत अछि । ठीक-ठीक त नहि कहि सकैत छी, परन्तु किछु दूर गेलाक बाद गाडी केर बिलमैक आ फेर बलि पड़ेछ । गतिक ला-भमा वाई एगाद वले बलन राजेन्द्र एक्स-प्राय, बीच-बीचमा से गाडी पहुँचैत त दिकना मे एगो वल भोतक मिश्रित कोला हल कुनाह पड़ेछ । पञ्चाय देवल बाइल जे खुप प्रिस्लीक सँ लछ गोर दसैक लोकक पकि-

वार केँ सारेत पीटैत नगदी बरी रेडियो तथा अन्य केर छीनि रहल अछि । हमरो नेटी केँ छुपि सँ फाड़ि रोडियो तथा टेबुल पदी ल छैक । तँयोगका हम सेप मे पदी आ ओकरो सभ केँ उतरलाक हड़की रैक तँ हाथक बारी कोनहुना नहि गेल गाडी बरहिवा टेंशन पर हुन लेलक सँक वीज रुकलाक अवस्था मे भेलक । हकैतक दल उतरि गेल आ वंगहि गाडीक गति तेज म गेलक । गाडी ऐकतेर कपूल से बकैक त हमरा लोकनि स्टेसन मास्तर केँ बहिनियेक लेकन हक मस्किफ फेर मे खुरा छगल छेकैक तकरो दबार निरो लेलक । फेर पुलिवाँक भागमन लेलक आ हमरा लोकनि खामया बीच आदमी सँ बचान लेल गेल ।

आप केँ समाचार पत्रक रिपोर्टर विचार करी त स्पष्ट म भायत जे प्रकाशित रिपोर्टर पूर्णतः मनगढ़ल अछि, भूति अछि । रहि तरहक रिपोर्टर छपलाक शाका निश्चित उद्देश छैक अध्यात्मिक तत्व केँ बढ़ावा देना, रेल प्रशासनक अपमान पर साँपन देनाह । आ येह कि भारतीय पत्रक-रितिक असली चरित्र ।

आप केँ घटना पर विचार कर । सुरक्षित दिव्या मे प्रवेशाधिकार मात्र ओतवै लोक के रैत छेक जे स्थान सुर-क्षित करओने हो । तेना अवस्था मे बँ बरोती मे ओतैक लोक हक गेल त निश्चिते टी० टी० साहेबक अनुकम्पा सँ कारण हुनको आमदनीक बरिया त वेद छनि । ओना बकैक दल बरोती मे उठक वा तकर बाद बलन गाडी निवमल समय से निस्सुकी त नहि कहि सकै छी—परन्तु बरहिवा मे जेना गाडी थमल आ सुरत सहीद पकड़ि लेलक—चार पर विचार करी त स्पष्ट म बाइछ जे दहशिएक बहि-गति बकैत दलक संघ छेक । खम टी० टी० मोहोय सेहो घटनाक समय उपस्थित नहि छल । हुनकेँ व्यानक अनुसार भीषक कारण ओ गाइक दिव्या मे छल । विडवा मे पुलिसक कोनो व्यक्-रमाइ ने छल आ बँ रहै करैत त ओरो टी० टी० बकै घटनाक समय बाहरे रैत । विवा-पीय हरो पिक जे रहि अंबलक ई पड़ल घटना नहि छल ।

एह छेक जे रेलक मजक अछि । रेल प्रशासने दहेत अछि । सँ उपरका कोनो अधिकारी एका अपवाद होय आ रेल प्रशासन केँ रहि कतेक सँ छेक करय बाहयि—स मेसबलाक मयकम्पा सँ हुनका छा सही रिपोर्टर बाइह ने पाओत । जनता मे अलग-वामने प्रतिरोध करवाक मनोबल रैत ने छेक वंगहि आनो व्यवधान रैत

छेक ! कोनो आवश्यक काब सँ नियत समय पर पहुँचना वा नोकरीक हामी । तँ सभचि शान्ति केँ भरोसा सँ छुट्टी चाहैत अछि । आ बाहि तरहे ई घटना निवेष्टी कर्म सन दिन दुना राति कोनहुना बलक वा रहल ।

—उदय कान्त मिश्र

शोषित दे शोषित मैथिलाय  
अन्तःकरण मे भोजीक नाद, बल-कल  
निनाइ नहि होयत ।

हकैक विषय जे हमर दू बर्ष सँ जन सामान्य मे चेतना आयल । मातृभाषा मेरी पगली मे देख बूज कोर-शोर लो-लनि अछि मुदा पगली मैथिलक आन्दो-लक बाइ, हुनक गर्वन कि शान बरि पढ़ि वक्त ? मैथिली छकि सोनो अथवा अन्य कोनो संस्थाक सेव म्दर सँ तकै नाम-पर दू बर्ष सँ जन साम बरक बरबर्मान पर मैथिलीक हेतु संगठन होमय । मुदा से अछि नहि ।

शाम-बर मे विद्यार्थि पर्व नहि मनैत बाइत अछि । पेश-पेश बाइर आ राजधानी मे एकर आयोजन आवश्यक अछि, बाहि सँ सरकारक कान पर डाकिने पढ़य । मुदा बाहि चोटक प्रभाव हरे-दूर बरि पड़ल नाम पर सकेने हैत बलन एकाग्र विद्या, नित्यब्रता आ दहीय भावना सँ उपर उठि केँ आकाश केँक लेत । परन्तु स्थिति त रहने अछि जे शोषित ककरो बल आ शहीद किनो दोसर कहेत अछि । राजवा-चार्य कबो युग-युग बरि निहोदक शूल मूक्यु—शोषित दे शोषित मैथिलाय ककरो हम सभ बय बय भेरीब गाबी, कतरो विद्यार्थि पर्व, ममाबोळ बायत, अपन शान पर मे थली मोहिना अहरे-चित उदय रहौह । शायदपरि क्यायति नल रहल, मिथिलाक खितिकार सुदितक जारी जेव म्दरगते रहत ।

• वेंचनाय विमल

## बोनिहारक गीत

बड़ा छे रे बुधना तौ हंसुआपर शान रहो ॥  
हंसुप मे शान अपत हंसुप गुमान हइ  
हंसुप हइ अप्पत पतन कार जाम रहो ॥  
हम सभ कमाएव आर खाएव केओ आन  
छागर छुगुना ई हइ केहन बिधान  
ककरा छे' चरा कर्म ककरा छे' देरा हइ  
अमरक के ठकना छे' हइ भावान रहो ॥  
सोनिह सुला क पसेना बनेछिये  
तकरा बुधा क छे सेनो पेटेछिये  
बगलै हें चरखी ई सोना सुगन्धि मल  
मरुआ, खेसारी, गहूम आर धान रहो ॥  
रोपने बी कटवें आ बर अपन भयवे  
अन्नक अमाने ने आव हुने भयवे  
ठकलक बहुत सुला आव ने ठेकै हम  
काळो सँ लड़वै अरोपि सेवे जात रमा ॥

—राम दीवन ठकुर

With the best compliment from :



ASHOK ROAD LINK

9, Munsri Sadruddin Lane,  
Calcutta-7





## सभा-सम्मिति

नवकी दिल्ली, १० नवम्बर १९८१  
स्थानीय मंत्रालय सभागार में मिथिला  
संघ नं० दि०) द्वारा दू दिना विद्यापति  
स्युति वर्षक आयोजन कइल गेल। पहिल  
दिनक उद्घाटन कला छलाह श्री केदार  
पाण्डेय रेल मंत्री, भारत सरकार तथा  
मुख्य अतिथि श्री बरत हाटे, सुबना हवन  
प्रवर्णन मंत्री, भारत सरकार। अन्त्यज्ज्ञता  
केलनि पंडित श्री हजिनाब मिश्र, संवद  
सदस्य। मुख्य वक्ता से बलिक नाम छलनि  
श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, अम राय  
मन्त्री, भारत सरकार, श्री अतुलसिंह  
राइह। अन्त्यज्ज्ञता काली, सतील वन्द  
श्री मोटा पलवान खाली, सतील वन्द  
निज कृष्ण चन्द्र पंत, नौ० राणी कुँही,  
डी० पी यादव, के० पी० तिवारी, शिव-  
चन्द्र झा प्रो० असीत मेहता, राम सदाय  
पाण्डेय, श्रीमती अनीता शर्मा, आदिक  
नाम उल्लेखनीय अछि। सांस्कृतिक कार्य-  
क्रम से माग केलनि श्री उदित जी, श्री  
मती शारदा सिन्हा। एहि अवसर पर  
हमो प्रमुख मंत्रीय मुख प्रमुख कहल गेल।  
अन्त से श्री गुणानन्द ठाकुर द्वारा वन्दनाद  
जापन कइल गेल।

दोसर दिन, १ दिसम्बर उद्घाटन  
कर्ता छलाह प० श्री खसीकांत झा,  
अध्यक्ष, आर्थिक सुधार आयोग, भारत  
सरकार। अन्त उद्घाटन भाषण से श्री  
आजी कइलनि जे बंगला भाषण उद्घाटन  
मेथिली सं गेल। विद्यापति जे बंगलाक  
कवि मानविक इन्द्र काय छल। हुन  
भाषा से बड़ समानता बोलै जे कालान्तर  
से निर्दंतर समकाल धराम, समकाल दूरी  
आ स्थानीय आवश्यकता कारणे फराक  
होएल गेल आ बंगला भाषा ओ लिपिक  
अन्ध विचार भेलक। एहि ठंठ में ओ  
पूर्ण चकल भाषाक उद्घाटन ओ विकास  
एवं पक्षर प्रभावक गान अन्धजनक  
आवश्यकता पर बोल देलनि। अन्त अन्ध-  
कीय भाषण से हिन्दुस्तान दैनिकक सभा  
दक श्री विनोद कुमार मिश्र जी कइलनि  
जे विद्यापति पहिल कवि छलाह जे परम्परा  
गत उल्लेख तथा अपभ्रंश के छोड़ि जन-  
भाषा से काव्य रचना केलनि आ मात  
रचनाए नहि ओकरा लोक प्रिय सेरो बन-  
ओलनि। इन्द्र काय चिक के खेतहुँ  
बलि पर-पर से हुनक गीत गामोळ बाइत  
अछि। मुख्य वक्ता श्री गंगा शरण सिंह  
जीक अनुसार विद्यापतिक काव्य से  
आधुनिक, भक्ति आर सौन्दर्यक अद्भुत  
सामर्थ्य अछि। हुनक गीत से गति, लय  
आर भावक तेज सांभल्य अछि जे ओकरा  
आधार पर कोनो सकल टुकल नाटिका  
आधारन कइल बासकैल। आधुनिक मुख्य  
आ तबिक पद पर छलाह श्री वेदानन्द झा,  
भारत स्थित नेपालक राजदूत।

एहि अवसर पर एक मध्य कवि  
अरणोदय प्रकाशन, १३/५, डा० देवदार रसमन रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पत्रनिर्धार मांट दिहल, ११-नी, बुधवन

देवाल फ्रीट, फलकता-५ से मुद्रित। सभादक ३ श्री बनारस झा

## बाल कविता

समोहनक आयोजन सेरो मेले छल। ग्राम-  
प्रित कविगण से छलाह सर्व श्री महा कवि  
शानी, राम सहाय पाण्डेय, रानाया  
अवधनी, आर० सी० भारद्वाज, कवि  
चूड़ामणि 'मधुरा, कविहर सुमन, प्रवर्णी,  
अमर नारायण कुँवर, रवीन्द्र, प्रवेश  
बीरेन्द्र हवन मायानन्द मिश्र।

अन्त से सर्वश्री विलकंठ, गिरिया,  
सरोज, लेखनाथ, शारदा सिन्हा, ए० के०  
विह, हवन नाटक प्रभावक कलाकार लोकनि  
द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रमुख कइल  
गेल।

(देखिल बयनाक दिल्ली प्रतिनिधि  
सुपनारायण मंडल द्वारा प्रेषित)

× × ×

कलकत्ता, ११ नवम्बर १९८१  
दुबक मन्त्रालय में मिथिला सांस्कृतिक  
परिषद द्वारा विद्यापति स्मृति एवं नमो अल  
गेल। अन्त्यज्ज्ञता केलनि श्री मुकुन्दवारी  
मिश्र तथा प्रवर्णन कला छलाह मिथिलेनुजी  
कवि पति के अद्भुत विनिहार अन्त्यज्ज्ञ  
वक्ता-मे छलाह सर्वश्री बाबू साहेब चौधरी,  
राम लोचन ठाकुर, शरद चन्द मिश्र,  
ब्रह्म नारायण झा, श्रीदेव झा आदि।  
एहि अवसर पर विद्यापतिक 'छलि हे हजर  
मुखक नहि मोर' गीत पर आपर्णित  
भावपूर्ण प्रस्तुत कइल गेल तथा आर  
संगीतक कार्यक्रम प्रस्तुत कइल गेल।

कलकत्ता, १५ नवम्बर १९८१।  
उल्लेख साहित्यक समर्थ आ मेथिलीक  
प्रकाशक पत्रिका प० बलकान्त झा 'भूतचर'  
क आकाशिक निचन पर स्थानीय मिथिला  
सांस्कृतिक परिषद द्वारा एक शोक समारं  
आयोजन विद्यापति विद्यामंदिरक सभागार  
मे कइल गेल। अन्त्यज्ज्ञता कइलनि परिय-  
दक अध्यक्ष श्री मुकुन्दवारी मिश्र तथा  
भाग केलनि स्थानीय राम मैथिली सेवी  
संस्थाक प्रतिनिधि लोकनि। अद्भुत अछि  
क्रम से विभिन्न वक्ता लोकनि 'भूतचर जी'  
क व्यक्ति आ कृतित्व पर प्रकाश देलनि  
तथा ओहि सं शिक्षा केनाक भद्रुरोच समस्त  
मेथिली भाषी सं केलनि। ए० सुतचर  
जी से काव्य समक तथा हुन कवि के  
नव दंग सं आ एकरदम मौलिक रूप से  
प्रस्तुत कइल अद्भुतक समता केलनि।  
'दीक्षावर्ण' महाकाव्य से हीनाक गरिमाक  
उपासना हुनक कला-कोशलक परिचायक  
थिक। मैथिली से 'मेषदूत' ओ 'गीतां-  
नाटक' पद्यानुवाद अन्त विद्यापति स्थान  
रखेद। एकर आतिथिक ओ कृतिको  
मेथिली सेवी संस्थाक संरक्षक छलाह।  
मेथिली भाषी वदा बहि विभूतिक शृंगी  
रगत। अद्भुत अछि अतिर केनिहार से  
छलाह सर्व श्री शरद चन्द्र मिश्र, कालिका  
मो, हरिवन्द मिश्र, मिथिलेन्द्र श्री, राम  
लोचन ठाकुर, शिक्षा-री काय मिश्र, एवं  
ब्रह्मनाथ सिंह झा। अन्त से विगत  
आत्मिक धार्मिक सेवा दू मित्रचरि मीन  
प्रार्थनाक उपरांत समाक निवर्तन गेल।

अरणोदय प्रकाशन, १३/५, डा० देवदार रसमन रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल श्री महेश्वर झा द्वारा प्रकाशित तथा पत्रनिर्धार मांट दिहल, ११-नी, बुधवन

## नलि छइ तकर बिनाश

सलखा तिलकोक छइ-  
ककरा छो ने नोक  
अनसोदात ककरा छो  
कोबर घर के गीत  
किन्तु साबटा नीक सं  
होएल की अलख  
लोक नपुसक के कइ  
की फरेत भाक्य  
गुरु सिंह निरचित सकय  
तोहि अकाराक बात  
पुनि दुर्लभ पहि अगत मे  
सकरा छे की आन  
मरियो अमर बनेत अछि  
कीर्तिक संग महान  
उषामहोन मनुकेल के  
बचे ने नाम निशान  
दिय' दिय' हा मात्र सं  
मेदय नबि अधिकार  
बंजलोटा बुरि जाइ छइ  
देहने छइ संसार  
हाथ पसारल बाटपर  
मरय हजारी लोक  
के मनेव छइ शोक  
हाथ बढ़ा जे छ' सका  
छइ तकरो इतिहास  
जगल सदा सतर्क जे  
नबि छइ बकर बिनाश।

—राम लोचन ठाकुर

विद्यापति दाता लोकनि सं—  
'देखिल बयना' मे अपन विद्यापति दय काम छटाइ। कम कच से सुखर हांग  
सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन।

सम्पर्क रूप  
विद्यापति व्यवस्थापक  
अरणोदय प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सं निवेदन  
१—अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना 'देखिल बयना' मे प्रकाशनार्थ पठाव।  
२—'देखिल बयना' मैथिली आन्धोलक मुख पर थिक। आन्धोलन सम्बन्धी  
रचना के अप्राधिकार देल जायत।  
१—मिथिला मैथिली सं सम्पर्कित समाचार पठाव।  
२—'देखिल बयना' स्वस्थ बिचार आ रचनात्मक सुमावक लगाव करे।

## कह लोचन कविराय-

आह एम एक के कइ थिक एक हवा सबो मने  
बक बेचि स्थायीनता प्राप्त करव तें फर्ज  
प्राप्त करव तें फर्ज अर्ज ई आइ समय के  
समाजवादक तर्ज वस्तु धर्मताक उदय के  
कइ लोचन कविराय ओ महा शत्रु देश के  
जे फरेत छि निन्दा फर्जक आइ एम एक के



# प्रतिनिधित्व

वर्ष-२ अंक-५

जनवरी, १९८२

मूल्य-पचास पाइ

## सम्पादकीय

### भीख नहि, अधिकार चाही

विश्वी मे आलोचित विधान-विषय संसारीहद उदघाटन करैत रहैतअओ की केदार पाण्डेय मैथिली के संविधानक अग्रिम अनुच्छेद मे समितित्व कयामक मास के समर्थन करैत रहि छैक एक विधायक के प्रधान मंत्रीक संग मेट करवाक आवश्यकता पर जोर देकैनि । ओ आरओ कहैनि के एहि विधानमंडलक नेतृत्व ओ कार्य क सकैत छथि जे कहैत बानि । केदार बाबू एहि सं पूर्व शरी मे सेहो ई घोषणा केने छलैक ।

एहि मे कनिहो संदेह नहि के केदार बाबू मैथिलीक छुमेछु छथि । मिथिलावासीक दीर्घकालीन मास आ आवाज-मिथिला विषय विचारधारा तथा बिहार लोकसेवा आयोगक वरीष्ठा मे मैथिलीक स्थान दिनकरि दुषमनीयकाल मे भ वृद्ध । मैथिली अक्षरमयी निर्माण के दिनक उदघाटन कइतअसकैत विवरक नहि बा सकैछ ।

बर्षाव विधायकक प्रश्न छै, हमरा पूर्ण प्रमाण छै के १९७० मे अक्टूबर २० कडिवा बाबू मैथिलीक प्रतिनिधि कोकनि के बने रहलिन के एहि निमित्त संस्थाक नहि, संवैधीन समिति ( Parliamentary Commission ) क प्रयोजन छैक, आ हुनके निर्देशानुसार कओ समितिक निर्माणो मे छै छक बकर ज्योतिषक लखार ओ समुना प्रसाद मंडल आ प्रायः मैथिलीक निमित्त बदा-कहा बनिहार समस्त एहिद कोकनि संस्थाक छल्ल । छेदक संग लिखक पढ़ैछ के ई समिति तेहन अकारण्य मे छ के एकर चर्चा नदारद । पना मे विधायक सं केदार बाबूक तात्पर्य केन तरक विधायक सं छैन । परन्तु सं बहने विधायक सं होनि त आका आका केनार बार्ब । कइयक प्रयोजन नहि के मिथिलाक एहिद संग 'वोटर्स' थि, नमक दाम थि । ओ खाल त मिथिलाक पन्थन बहा करत दिहो पटना । दोस ओको संभक नहि छैक । ओ संग हमरा हमर के, मिथिलावासी के कडिवा बार्बर नहि दुकेद । काही-कटेव भीन्दबाद । कयिटा टाका भीन्दबाद !

ओ केदार बाबूक तात्पर्य आन तरक विधायक सं होनि, बकरा संभक प्रयासे आरपरि बाह-बहुत कास मेलेद, त तहुत संभक मे हम केर १९७० क कदा दोहराव । १९७० क विवर मे एहि तरक विधायक प्रधान मंत्री ओम्रो इन्दिरा गांधी सं मेट केने छक आ ओरो धराउरिपूर्ण विचार कयामक आवश्यक देने छलै । परन्तु १९८२ नीति चुकल । आरपरि भीमती ओ के एहि प्रस्था पर विचार कयामक आवश्यक नहि मेहनत बा बानि मे सहसुपुष्टिक ज्योत बुझा गेलनि । तें जे केर ऊर विधायक मेट करैत करि आ य संकेद केर आरिण आका सनो सेटि वारन तयारि संस्थापित जनक संस्थावा नहिओ बुझा बाहल । स्पष्ट छैक के आखुक राजनीति में, आखुक नेता लोकनि छैक संसार-पन बा अस्वास्थ्यक कोनो मारल नहि । आकासकन टकराक छैक होइत छैक आ स्मारकक भाषा ओ कोकनि दुकेत नहि छथि । कोकनि एकेटा भाषा दुकेत छथि कानिक, रकछथी कानिक । प्रमाण ओ अस्वास्थ्यक आदोलन ।

केदार बाबू के हुनक पदसम्पन्नक छैक बन्धबाद परन्तु हुनका दुभि लेनाक चाहि-बनि के हुनको कल्प सं मिथिलावासीक संविधान कोनो प्रयास पर्विहार नहि । स्वान प्रमुष्टिक संग विवेकक प्रस्ने मे उठि सकैछ । तें मिथिलाक शरीरी शरीरी मासामरीपर पटना-विश्वी दलवार मे वरल नहि होइ छै । तें बिहु जाल सिनीक भाषा के संविधान मे स्थान मेटि बाहल छैक मुदा चारि कोटि लोकक मातृभाषा ओहि सं बारल रहै । अक्षराल-मेवाक्य सं राखि निर्माण मे बाह छै मुदा मिथिला के खिचरी रूपक संय राखि रहै बाहल । एकर कल छैक के मिथिला मे रह-कल नहि बाटो-बाटक लिपि संवर्नीय छैक । फलश्रुतताक त्वं की हो-एयो ओषो पेर मिल काले त सेहो उठि के आशय-चर्च मेले ओ कोटो समझा त 'धरत आरिण छथी' अरि । मिथिलावासी के भीख नहि, अधिकार चाहिद । मैथिला के संविधान मे स्थान हो-से हमर ज्योतिषक मास थि । हमर अधिकार थि क आ तकर पूर्ति केनार सरकारक कर्तव्य । एहि निमित्त विधायकक क प्रयोजन नहि होनाक चाही । परन्तु

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानाचित्र बिनु मिथिला घाल  
छाहि जारि सुझह करल हम  
विद्रोही मिथिलाक जनान

## जनकपुरक विद्यापति-स्मृति पर्व :

### स्थिति आ अपेक्षा

बलन बलनो हमरा कोकनि मिथिला-मैथिल-मैथिलीक बर्च करैत छी त निरिच्छे भारत बा नेपाल ताइ बीच मे ननि अवेद । एहो केना करत बलन कि मिथिला-मैथिल-मैथिली अपने-आप मे संयुक्त अर अनेक ननि-एक बर । ओतवे फिदक, विचार-वाहुत सं समय हमरा लोक-निक मन मे एहि तरक भावना ननि बनौद के बीच मे एहो आदि छै के एके कमीन के कमीनक फलित के रू भाग मे विभाजित करे छै, एक विरुद्ध पानि के दोसर दिह जेना मे नायक होइ छै । आ एकर भावनाक ननि बसमार एह आदि क उठिमा के प्रभाति करै । परन्तु आह एकर कतिमता समय छै काय एकरा पाठा राजनीति छै आ आखुक युग मे राजनीति एर सं पेश करि छै । ओना भावना सं राजनीतिक बन्ध जेनाक पटना ऊर नव ननि, किन्तु मिथिल-मैथिल-मैथिलीक संदर्भ मे एहि तरक मत केनाह नम अस्वच्छ मत केनाह सन इहल । से हो, किन्तु ई बरि समय छै के आह आदि क उर कातक मैथिल मुसुआहल य, ओकर भाषा-संस्कृति आ आन सगला हमर सरकार द्वारा अस्वच्छित छै । एहि संय मे एहि पारक तथा कचित् गण-राजिक आ ओर पारक राजनीति सरकार मे नव नेही फर्क ननि छै । फर्क ननि छै उर कातक मैथिल के के अपन दीन-दीन अवस्था छैक सरकार सं देखी देखी अपने अर कारण ओकरा मे थाग वित्तीयक भावनाक, बकर बड़ दीन आ तोरखानी परम्परा मिथिलाक रहलै-एकथो पूर्ण अपाव छैक । अपाव छैक संकल्प वेनाह । किन्तु, जे योद द्रुत चेतन लोक आ से अपन मान-प्रतिष्ठा छै, अपन अधिकार पेयलेल उपायना रहल-ए, आवाज बुलन्द क रहल ।

एहि संयक अतिरिक्तो नेपालक स्थिति भारत सं गिर छै । कोठाम राजनीति अस्थिर त ई अछि जे सरकार कोटो सरकार-बकर बर्चल सभदिन मिथिलावासी मे रहलै, बसबात मिथिला-मैथिली विरोधी अछि । आह समय अति गेहल जे मिथिलावासी के संयुक्ती एहि सरकारी राजन के बीरम पवननि । चीनक पवननि एकरा द्वारा बनाओल । पञ्जाबक वीरमक धर्मपरा के जे वीरमक वीर चीन आ माह-माह मे अपन कोटोअति करैत आ आखुक समझाक समझान छै, भारतीय राजन छैक अपन कोकनि के एक हंग नहि होय देह । हमरा कोकनि के अपने बाहुत आ दुदितक पर भरोषा राखि अग्रदूतक चाही । प्रश्न अस्वच्छ क छैक । अधिकार मील मलने नहि मेटेत छैक । एहि लेल चाही संकल्प

४-५ दिसम्बर के अखिल नेपाल मैथिली आरिण परिषद द्वारा बनकपुर मे आयोजित विचारपति स्मृति पर्व के एही परिषद मे देखल बा सकै । समारोहक उद्घाटन केनि नेपालक भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री मातुका प्रसाद कोइराला-मातुका बाबू राजनीतिक विचारक सुयोग आ अनु-अरी राबनेता छथि, मैथिलीक प्रबल पक्ष-भारत सं गिर छै । एहो स्वाधीनता-भेदीक हेतु

अस्थिर त ई अछि जे सरकार कोटो सरकार-बकर बर्चल सभदिन मिथिलावासी मे रहलै, बसबात मिथिला-मैथिली विरोधी अछि ।

आह समय अति गेहल जे मिथिलावासी के संयुक्ती एहि सरकारी राजन के बीरम पवननि । चीनक पवननि एकरा द्वारा बनाओल । पञ्जाबक वीरमक धर्मपरा के जे वीरमक वीर चीन आ माह-माह मे अपन कोटोअति करैत आ आखुक समझाक समझान छै, भारतीय राजन छैक अपन कोकनि के एक हंग नहि होय देह । हमरा कोकनि के अपने बाहुत आ दुदितक पर भरोषा राखि अग्रदूतक चाही । प्रश्न अस्वच्छ क छैक । अधिकार मील मलने नहि मेटेत छैक । एहि लेल चाही संकल्प

—पण मैथिली





६ दिग्गम्बरक प्रदर्शन

मिथिलीचलक यातायातक समस्या पर छिलेत मन स्पष्ट कहते रही (देसबोध, मुआला १६८२) वे बहुत नियति कुर खात्रासबादी देशक उपनिवेश न नीक नहि छैक । हम रहो छिह चुकल छी आ से पुनः पुनः सय भइछ, से माहक युग मे कुर-लेक आर्थिक विकास बहुत दूर बरि यातो, यातक मुजिआ पर नैकरि केछ । कबवाक प्रजात नहि मे रहि केछ हमरा लोकन । कान नव्य पर संकेतक सन्ध अपन कबुल के रहैत ओकर समर्थनक माह केत रहैत छै । किन्तु बहरी कहैत वन भारत सरकार आ तकर पोषा विचार सभा मार कहियो कान नहि पपटोभोलक समस्या बतेक तत पढ़ल भइछ । घेयक सेक एकटा सीमा होइ छैक आ तकर आधि कयन मैने लोक दोहर बात पढ़वा छै नाथ्य मे जाइछ । १. दिसम्बर १९८१ मे अन्त्य प्रमाण बिहक ।

विगत २६ दिवसक नेतृत्व से मिचिलाचल हवारी  
 लोक हवाई टीशन पर बना भेल छल ।  
 "गादीक बस" नामक—हवाई  
 निगम नारायणदेव आ नाथ देवक—हवाई  
 तथा सिमान्तक व हवाई गोट हवाई  
 गादी मुसफरपुर क लेल देल बाय (२)  
 मिचिला आ नाथ देवक मुसफरपुर  
 से आगा नदि बाय, (३) हवाई  
 मुसफरपुरक हवाई उपर हवाई  
 गादी देल बाय, हवाई  
 मुसफरपुर बरि दोरी जान होत  
 समीप दुरिगा वही जातक  
 निगम हो । परदाकारी सभ क पु  
 भीतर नदि बाय देखैत गे गादीक  
 नाम त नदी मेरु पारत फेला ।  
 भाषण नारायणी आरम केलि ।  
 किन्तु अति शीघ्र पारत दिह  
 प्रयास अकलै छेलि फलतः पुल्ल  
 बाय भेलक आ गोठ पवाले लोक  
 देखै देखै कालक ऐतु मीर  
 "हवाई गेट" गेब नरु अमर  
 नेतृत्व करल आ सभ केर बना  
 भाषण केलक प्रायिक कि  
 लोक गेल, नदीब क गेल प  
 आ हवारी नारायणी चलेत रहल ।  
 भेल हवाईक के नरु अमर अपना  
 नरु अमर कालोबर्जिन ।

ए. सुख के लक्षणों में  
 लक्ष्मीवर्ष मे गोपौकान्त भा के माघ  
 कुटि गेहनि, राखवेद फन, जगदुल हवन  
 भा कनैय्य भा के सेरो वद बेदी मारि  
 डारालनि । एकर अतिरिक्त अगुदुल ठकुर,  
 मो-बुगम, वनारसी प्रसाद, सो-अष्टार,  
 हर्षनाथ का महेन्द्र ठाकुर आदि पचासो  
 पानिक बायल भेसाह । से तेरो पञ्चव

पर्यटन सफल रहल आ तकर खर्चिनि  
परवर्तन भेल आरामद के भा तकर बाद  
अबुल ग़ाज़ि आ अमजुद हसन के । अतएव  
मे निहार अगामी पंचायतक आर्थिक और  
पू नोट फेस्टन देखल गेल छल—एक—  
एक पी. ओ मिथिला संघर्ष समिति।  
हहि घटनाक बाद १५ जू. के विचार  
समर्पण मुला मंत्री की कपुरी ठाकुर  
गंगाधर रायबहादुर आ देखे रिपोर्ट  
कलकत्ता देवदत्त श्री बी. डी पाण्डे  
सेट केउन अरु हवा। तथा 'सिवालय'  
एक आर गाँदी देवाक माह केउन मे ।  
हरो कलकत्ता मे गत बीच वर्ग मे ।  
टीशन आ उत्तर विहार तथा उत्तरी  
प्रदेशक बीच सेवक माहीक संस्था  
वर्द्धन नहि करल गेल । कपुरी  
के निजसो व सहा, बिबेक मेहन  
केल वत्सवाद देल जा सकल । अतएव  
त बहरा एव के तीन वर्ग ओहो को  
सत्ता मे छलाह सलन किन्तु मे क सकल  
हलनो किन्तो दवाए मे हुनको एव  
अह, एवक सभ कुपनी सलने अह  
कपुरी बी बका समया योनि  
तकर अपातक निमित्त बिबेक ने  
हार पर उपर करल छथि । गाँदी  
टीशन पर नहि समझिपुर  
प्रयोगन छैक ।

अना त स हदि सं पूरो लिपि।  
चुलु की के दहिहाम सं से लोक नाय  
विहार आ मिच्छा एषमोख से याताय  
करोट दहक दिबति आलुह नदा सं नीक  
नदि रौत छेक आ तें रेल मंत्री के  
नेर दिखबो गेलनि। पठव, वहीचिनि  
आनंदि समसोपुर-मुम्बयपुर मे हे  
वाही बे ओहयम सं गापी आन न  
आय। बं ज्ञानक विहार कइ गेले  
गादीक संख्या मे वृद्धि अवले हेत  
वाही। आनंदोत्त मात्र हावका मुम्बयपुर  
पुरक गादो देखा केठ नदि मिच्छा  
सं भारतक सभ प्रगत शहर मे बाय आ  
वका गादीक संख्या बढ़बा केठ आन  
हेराक वाही। आनंदोत्त हेराक  
मुम्बयपुर-बनारस (दक्किया नदि  
वाही कारण निर्माणक निमिष। आना  
हेराक वाही मिमिबल्लव मे नव रेख  
निर्माणक विमिष आ लोकल ग  
संख्या बढ़ेवक निमिष। हरा  
बनेत छी बे कतेक समय हराक सं  
पुर बार मे लोकल ततवे समसो  
बनारस वा लोकलपुर। आय मे मे  
बारल आ बार एक मात्र कार  
आभाव छैक। बनारस सं बनारस  
मे भरदिन समय लगत छैक। व

100

एक गाँव में वंशों गरीब लोक  
 रहिये। ओ कहते देखना-सुनना में सुखर,  
 तेरे मेधावी आ तेरे पदना-लिखना में  
 चतस्रार। नाम रहनि छपल।  
 छपल बहुत दिन भर परेख में  
 रहि दुखनि। ओ बहना विद्वान भ गेलाह  
 बाबूबर हुनक विद्या बुद्धिक बनी आमन  
 लागल। पायों-कोड़ीक चोरी आमन  
 होमन लगलनि। तबन शिक्षा भवन गाँव  
 नामक माटिया-निच छोड़ि मेकनि आ  
 गाँव बलि बलाह।

गाम पडुंवाला पर ठम्बालक खू  
म्हणत मेलनि। सर-समाज मे कुठू काब-

बाद्री निमिषावल मे कनकरखाना के  
समयना आ निपावक के ब लोक के  
रोबी-रोडी के दे बने छिछि नविन  
पेके । ई गणत निविाव आ ने आग  
कलकला-पटना भिजिजावाकी के  
रहेके । ओगी भावना आ राबरी  
बाह्य मे बलि रह के—बाहिया  
नोकी नहि होत छेक । त आदिल  
उरोख विभिनि समयना समान  
निमिष होवक बाही । देखर घड  
निमिषनक खगिण विपावक निमि  
होवक बाही ।

हमारा लोकनि बहजन कालीना भीषण  
आद्योन्नयन बात करते छी त तकर अर्थ  
इहए रहैत अए भिषिकाक उदा'गणिकाक  
विकासक हेतु मान्योव्ये। आ तै भै'गणिकाक  
न्यायोचित मायकार शक्ति भोकर विकास  
एक बात पहिने आवि बाहए। भाषा मूल  
कस्तु बिक। ई बातीय जेवनाक उल्ल  
बातीय एकात्मक भाषा बिक। बाती  
जेवना आ एकात्मक अभाव नै कुल आदि'गणिकाक

लक कलानी म दूर रह्यो।  
 सफावाक बात दूर रह्यो।  
 इतिहास देहाक वाही। बला बात पर  
 कहुनो के भावनि भ सकत छनि किनु  
 हम बानियो-पति के हक प्रयोग कइल  
 से हरी दुभारे के आदोलन नोकिया  
 पुत नहि क सके-ई काब रामकीति  
 देलक, सोकर नेता लोकनि छेक। राब  
 नेलक रलक विभिन्न घाबला निनिन  
 समसाक समाधान पर प्रयोग, उल्लेख  
 ताल क सके—करक आदिरेक। तेला  
 वलसाक समाधान संभव। अन्य  
 कलकाल लोक भयन दुविधाएँ हालक  
 ब्या दिखल प्रवाही मैथिली से भ  
 गाड़ी रोकि शिब—प्र सकल हुनक  
 बाबे-भुल पुराओ—प्र काहन-परब न न  
 फोटी मैथिलक समसाक समाधान  
 गादीक नहि भ सके।

सिमेंट—रामाधार मिश्र

22

उत्पन्न होर त हिन्का अर्जाव के खाओल  
बाह्रन आ विचार पुछत बाह्रन । पछव  
उभ होरहुं कवनो-काल हिन्का मत से  
हकटा नातक बह दुख होहन । से बात ई  
के छोक हिन्का उग्रमादिक नामे बघनि  
ई सेवकनि के बते पढ़ा-लिखताक बादो  
हम ठगराके रहि गेलहुं । बहरो कतो नाम  
मेल-बू ? भदा उगारि की ? गामक लो  
बनारि सं बार नामे बने-य तकरा बह  
लो केना बाय ? हं, एगो उगार छेक  
गाम नोकक दूर-दूध चिक बाह । अतो  
कुन नोक नाम राखि छे । आ ह  
गोवि ओ हक दिन अपन गाम ओहि सि  
भ गेलाह ।

बाइस-बाइस बजान भो न्ही दूर  
गेलाह स याकिन गेहाह भा त एगो  
गाछ क बि से बोट मुलाय आलाह  
भोरी गाछत बार एगो ओक वेसल छल  
ओकर पतिन रबी-नबी सेल छल  
दो बानि स एहकन सीवारि बुका  
छल । छयाल से ओकरा पर दशा भातिन  
गेहनि । किन्तु जिहासाक कम से नाएन  
पुछलिन त मो बाइकनि-बनपति  
तिनका मनहिनन बह ईंदी आबनि मु  
हंखे बनपति भंग्या से बंधय से बिवा  
बोकरा बाति उठि बिदा भ गेलाह ।

दूर आगाँ हरी टाल पर न बरि  
 लाकिन, वामने से हरी लोक पर न बरि  
 पवनि, से वो पोआर दोह रहइ ।  
 लग बवा से एक लोटा पाहन देवाक भाप्र  
 केछिन । ओ भ्र लोक वरन दुवबा पर  
 पोआर राखि लोटा माखि एक लोटा टटका  
 पानि दिनका देखकनि । पाहन पीनि है  
 तुम मेआर न ओकर नाम पुछलआवा  
 ओ कहलकनि—अबक । ठठाल आवा  
 रहलान । गाम वं बाराहले रहनि कि  
 श्रो:अधरी पर नबरि पवनि । आगा-  
 आगा अधरी आ तकर पाछाँ, कटिहरीक  
 किवाळ पातो । भो-भो होखनि—  
 निर्विवाद कुन पंच लोक मुल-र, ने त  
 एते कटिहरी कले पाबी । मृत लोक  
 वस्त्रय बनवाक हइ इच्छा मेकनि । अल  
 से एक आदमी सं पुछिइ देखवित—हूँ  
 मरबाबन संवार लाग केछिन है । “अमर

छाहुँ आ भयक भयल  
 ठपकक पर ठगि तेलन । दिनका  
 मन मे जेना बच्चा बिबिदि उठि गेल  
 होइन । अमर साहु मरि नेलाह । अपकी  
 पोआर दोह छलाह आ बयलिक देह पर  
 गुदीयो नदाल । इहल त निक नाक  
 महल । आ तन्दे फेर मे पडि हय अल  
 गाम-बार सर-सभा की । हमराकन मुल

## हड़ताल आ तकर मुकाबला : बिहारी स्टाइल

बिहार सरकारक छ गजल मन्त्रीकोटि कर्मचारी आ नव्वे सिङ्गल गज ११ दिह-भर सँ हड़ताल पर छथि । एहि हड़तालक चरको से बहुत मजबूत स्थिति छैक से ओहीदामक लोक कोत अर । एहू से त एतक गतिमा ले गेटाह पराम्भक म गेल छैक । बिजुलीक तेनेने स्थिति छैक कवन कि सामान्यो स्थिति मे बिजुलीक जे ओह-गाम स्थिति रौत छैक से अटुलीह । गाम स्थिति त कय नै हो । प्रति कय मित्र गाम मे बिजुली खरा गाढ़-तार लगा देल जाएत—अखबार मे प्रचारित क देल जाएत—अखबार मे बिजुलीक म गेल । बाइल जे खेते गामक बिजुलीक म गेल । ई भिन्न बात जे मात मे दुसरो दिन 'बाइल' नहि रहित छैक । अखताल समक स्थिति सम सँ लोकनीय छैक—पानि, कोटा लोकक समवे । आरोपन अग्या पर पकड़ रोगी कुहरि रहल आइ—बेखानिहारक पता नहि ।

निवारणीय किछ जे एहन स्थिति छैक बिम्बेनार के अर ? हड़ताली कर्मचारी, जे सरकार ? उपर-उपर देखने त कुसने कय नै दोसी सरकारी कर्मचारी अर परलक बिहारी के देखल-देखलक बाद अखली बात कहिला खेछ—अखली बिम्बेनार के चोन्हक बा सकेछ ।

हमर बिचार अर जे कर्मचारी लोकनि सेवते हड़ताल नहि करै छथि । हड़ताल पेटन किम्बुड नहि किछ । कवन दुकाका अर अर दोसी अर करवाक कुंर दोहर बात नहि रहै छथि तखने ओ हड़ताल पर जाए छथि । दोहर अर नै कने ओ कवन हड़तालक छेक नयन करल बात अरि—खेले हड़ताल करै छथि । अर देखलक ई अर कि हरिपुंरु बदन स्थिति आनि दुकायल छैक ?

हड़ताली कर्मचारी लोकनिक मोना त छोट-पेच करवाया माछ छनि परलक जे प्रधान माछ छनि आ बाइल कर्मचारी आ सरकार मे बीच खेच रहल-र अर किछ चारिम मनाका संशोधन समिति ( 4th

हडत ? हम अर्थक बिधान देवाक रम पोखने की...। एहि गरी रोचैत बिचारत ओ गाम छुरि एलाह ।

पता मेने संगी-साथी सम, करवा सम के हिनक गाम छोड़वाक विषय सुलल रहैक मेट होखति छुरि एलाक कारण पुछनि । ठगलक सम नै एके खवाव देखि । ओ कनाव छठनि—कनपति देह पर कटाफता नहि अरकी दोधि पोआर अमर बाहु के मरित देखल भनहि नाम टटाल ।

प्रखति—अमरपु

Pay Revision Committee ) क एलाह के १६७८ एकरो सँ छल कबल बाब । हड़तालक प्रोबन्ध नहि जे एहि तर-इक समितिक गठन सरकार करैत रहल-अ आ तें ओकर नैतिक दायित्व म बाइ छइ समितिक सुझाव के मानवार । बिगत अग्रील मे कलत कि समिति अने रिपोर्ट कमा केने छल तखन संशुद्ध गयी—संशुद्ध मे स्वयं मुख्य मंत्री डा० कान्ताय मिश्र बाबल एलाह जे सरकार दमनितिक सुझाव के मानेह आ सका कार्य रूप देल । ओ आरो कने रहथि जे एहि छैक अर्थ अर समझा नहि छैक । परम्भ कनिने दिनक बाद वित्तमर मे केमिनेट निर्णय छैलक जे एकरा अमरुस सँ कार्य रूप देल जायत आ केर नवम्बर मे तीन आदमीक समिति बनल—एकर आर्थिक स्थिति अन्वयन करैक । आइ मुख्य मंत्री एहि रहल छथि समितिक सुझाव लागू केला सँ ए०० करोड़ क आर्थिक बाप सरकार पर पड़त आ बिहार जे भारतक गरीबतम मात मे सँ अछि—एकरा बहन नहि क सकैछ ।

एहि तरहे लाल कुलना बाइल जे सरकार भाइरि एहि सम्बन्ध मे कुन निर्णय नाहि त कबल । संगहि रिज-पर-दिन रिजलिट सन रंग बदलल रहल-र आ एहन स्थिति मे कर्मचारी लोकनिक छेक हड़ताल छोड़ि दोहर बात नहि रहै गेल छैक । बाइरि बिहारक गरीब देवाक प्रबल अर, मुख्य मंत्री महोदयक बुद्धि पर लोक हँसिदा सकैह । बिहार भारतक सभ सँ जनी प्रान्त अर, एकर माऊनिक समदा कुन प्रान्तक छै रह्यौक विषय छैक । जं गरीब अर त एहि बिबदी प्रान्तक लोक—बिहार । आ एकरा गरीब कमा कर राखैक उद्देश्य सँ एहि बिचही प्रान्तक निर्माण सेह छल । के नहि कनेह जे एहिप्रान्त समिति सँ बाइर कलकलाना खेच छैक आ लोक बीबिका अर्जन करै । एहिप्रान्तक लोक अनका दुआरिपर वाकरीक भील महेत छोरेह । दोहर बात—ब सरकार के अर्थ संकटक किन्ता सते छैक त किछक ने मंत्री लोकनिक लच मे कौती करल बाइल ? किछक ने ओ लोकनि कवन बीबन पदति बदले छथि, योग-विचार के कमनेव छथि ? एहो साधारणो मंत्रीक पाठि अर की ?

ते सङ्गत करल आ सकेछ जे एहि स्थिति छेक पूर्णत सरकार बिम्बेनार अर । ई मानितो जे खास जे निहारक सरकारी कर्मचारीक जे चरित छैक से अति निन्दनीय रहल अर तें ओकरा प्रति लोकक सहायभूति मित्रियो भनि नहि छैक ।

एकनो बलन कि स्थिति खतराक रूप ल बुझल-र, सरकार तबकीया करवा छैक उलुङ नहि दुलना बाइल । ओ सन-ओलाक कय व करैत अर परलक दोहर दिव लली-गोलीक सड पर हड़ताल के दनेवाक पूर्ण प्रयास मे लागल अर आ तकरे प्रमाण किछ जे समस्त प्रान्त मे सीमा सुरक्षा रहल आ केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस के नहि देल गेल अर । एहि सँ स्थिति आर निस्कोटक म चुङ्चल करल कुन बाइरामक प्रतिकारक व खेच गेटेव छैक । दोहर दिव सरकार समस्त अखलाती कर्मचारीक बाकरी समस्त करवाक आ सुल्लाख लबायी कर्म चारीक बाकरी स्थानक आरोह द चुकल अर । १७ दिसम्बर के जे मुख्य मंत्रीक बाला पर बेवार मेछ आ पीब बादरीक समिति एहि स्थिति निपटारा छैक बलिज जेल्-र, तार मे एकोया मंत्री नहि छथि 'एरोकट' छथि, बनिकर एलाह सँ ई स्थिति कम लेखल । एहि सँ एहो कमा चलेछ जे मुख्य मंत्री के अपन 'सोयीगी लोकनि पर आरोप नहि छनि, बिबल नहि छनि आ ओ पूर्णत 'युल्लेकेट' पर निर्भर छथि । एहन स्थिति जे खलवाक छिप समानिक संमानना व नहि छैक देखा बाही एहि प्रतिष्ठाक लड़ा मे छैत दून घुंहे केह ।

—अमरपु  
( तब दिनक बार उपरीक हड़ताल समाप्त म गेल । समझौताक अनुसार चारिम PRC क खार के बिगत अभील सँ लागू करल जायत । मुख्य मंत्रीक अनुसार बिहार सरकार के लखाना खचि कोटि टाका एहि मे व्यतिक आ लीब कोटि व्यतिक एकरा मोलिया सुगतात मे जे पंच लय प्रति कर्मचारी के देल गेलैक ।

—सम्पादक )

### चारि गोट मिनी कविता

(१) सुखेदय

- माइक आंचारक सँ
- बहार एक मुँह अपन
- बिहुलि रेलक
- मिछु अन्वेष ।

(२) राति

- दुरागमियाँ कलियाँ बनि
- बनन सौम्य मधुका मे
- बेटी प्रत्येक दिन
- बलि आइल
- देने निजोह, ज्यवा
- पवारि मन पियरी पर
- कारी धन अन्वकार ।

(३) चन्द्रमा

- परदेशी पाहुन केर
- ओहैत होयि बाट खेना
- बिहारी लम टाढ़ि
- कुन राखिक ।

(४) बरान्त

- इहो बल
- ओहिना बीति गेल
- कुइ अचबल सूर्य
- बस गेरिक
- पहुआर मे हँसि गेल ।

बिज्ञापन दाता लोकनि सँ—

‘देखिल बखाना’ मे अपन बिज्ञापन रूप लाभ क्ताव । कम खर्च मे सुन्दर टंग सँ अधिक प्रचारक एक मात्र साधन ।

सम्पर्क कक

बिज्ञापन व्यवस्थापक

अरुणोदय प्रकाशन,

लेखक/पाठक लोकनि सँ निवेदन—

- १—अपन मौखिक आ अक्षरशिरि रचना ‘देखिल बखाना’ मे प्रकाशनार्थ पठाव ।
- २—‘देखिल बखाना’ मैसिली आन्वेषजनक मुल पत्र पिक । आन्वेषजन सम्बन्धी रचना के अग्रपिकार देल जायत ।
- ३—मिथिला मैसिली सँ सम्पर्कित समाचार पठाव ।
- ४—‘देखिल बखाना’ स्वयं बिचार आ रचनात्मक सुझावक स्वागत कर्छेक ।



## लाल बुभुक्करक चिट्ठी

एकटा आम गीत

आमनबी, ईश्वरदास जी, नई दिल्ली  
बय मैथिली।

आमा हाउ-पुरति ई जे पूर्ण तामसक संग लिख्य पढ़ि रह-अ-अ जे हमर मना केनाउ ठकाना अहाँ हमर मन के जाँच देल आ माया छापिष्टा नहि देख-वकर प्रति हमरो नामे सरकारी डाक सं पठा देल। यमा देवनाथ अहाँ के तलवार संतोष दिताथि। किन्तु तारपर सं अहाँ चिट्ठी बिले जी जे बकरा सम्यक रूप से देबाक नेवार अरु आ तँ हम नियमित रूपेँ हरि तरुण पत्र लिखि रहलाओल करी। दकरे ने चरैत अरु 'पत्र पर नून छिट-नाइ।' चिट्ठी पढ़ि मन त मेळ के अहाँक यूँ नोचि छी परन्तु अहाँ त छी अलिना कोलपर आ तँ अपने केय नोचि संतोष करय पड़ल।

हेयो सम्पादक प्रसर! मिथिला जे बगो अछी छर-बोक को आनय प्रसव के बीड़ा? से तकरे परि। अहाँ त प्रदेश मे छी। दोसर राम, दोसर राधा। तँ अपने बिबानय मेळने के बलिहाम लोक केना लेपेद। अहाँ समय सोचैत होएद जे मिथिला मे रहनिहार हम भरिखक श्रद्धा-पुद्री थिक-जे मैथिलीपर ओहन पत्र बगुनाउ होएदछु करैत नहि केवलक। किन्तु अहाँक से नहि छेक। अखल से कबोद आ तामल ककरा ने मेळ? किछु सरकारी कोरा पर पालिब लोक केँ जोड़ि हम सीतरे-सीतर महुआएल अरु। परन्तु डर होए छर बाब-भाटक, बीबिकाक। तँ अहाँ के निवास नहि हो त हमर रकार रहल, अपने ओमय दुल्लेनीकरीक केन मे जाँचि बाड। एतय म बापत जे किछु बनी-मानी लोक, मुखिया-सलंग तथा उबारा कीटाकना अकसर छोड़ि सय तामरो निवास मेळ अरु। परन्तु अहाँ कानियो केओ चूँ केकक कि उपरोक्त लोकक जिन्द-दुहि ओनरपर पढ़ि बासत छेक। सरकारी देखकारी मुँदा ओकरा गळा कानि चारल छेक आ नाके सुते पानि पिपा रेत छेक। नहि किछु सेले त अने-युक्ति कर देखल आ दु-चारि केव ऊँचा देखल। आ केना कि बहरी छर किने के 'नोर न्याये नष्ट' से बिरोधी अन्वये नष्ट म काराह। सर्वत्र आतंकक मेघ पसरल अरु।

ओना अहाँ कहि लकेछी जे एक आदमी के ने तंग करल जाए छर, तँ लोक संगठित मय आवास उठाएय लकन। त हमर उत्तर रहत-ओनाम दुनियाँ बी मारल, अते पोन पर शय चले छर तते दोलपर चले लकन ने? जाननि दिनकर दिनानय जे मिलिबोपरि प्रुति करैत होए, अखाल ने काल आनय बलिहाम बगुनाइक वेहन ने निवास छिड़िया देल गेल

छर-जे लोक केँ संगठित केनाइ सं सब भरिखक झुमरीक फुट अन्तारा होएत। बलिहाम त तबाकसित पत्र आ छोट बगो से शेर-भरिखक कानि चलेत छेक आ दुइ कर्णक शुई पुसलम एकदोरी दुइ-मेड। जै त आर मिथिला-मैथिलीक कनो ई हावल रहित? समस्त अवयवक नाश त ई जे जे अँदरा बगो मैथिली केँ अपन हिरदय मणि आ कंठधार बना केँ रखलक-से आइ अपना केँ मैथिल कहितो ने अर। मैथिल माने मेळ बायल। आ वासन सय त कुल्ले अर-अर कुल्ले माने तिररीत। जानने जे कुल्लेमी छर। ओना खुशीक बात जे रामने से मन्-बगीच आ निम्नवर्गीय समुदाय जे वेतना बल्ले परन्तु बोलवाला समग्राम आनाबी मैथिलेक छर। अहाँ केँ त कुल्ले रैत जे हँदि अँवल मे नोट अथवा सीट सं शोट छेक बाइ छर। आ तँ हमरा फिटलक परि विस्वास अरु जे अगिलो सुनाय मे अहाँक मिथिलाक निर्बाँकर विपुल मत सं विक्षी देताइ आ अहाँक अपना-जयने रहि जायत।

तँ कहिबाक आशय जे तात्पर्यक मतलब ई जे रामजीक इच्छा सं आ गुए गंगाक परताप सं-विदोहक आनि नीक बगो पसक छेक-मुदा उक छेनहार त चाही। से सं ताल्ल हो त हमर नोच-रकार रहल। आ नहि हो त समस्त दुल्लेक दीनानाक-माने काले बुझकर केँ नहि बुझनि। हमर मन ने छापी आ ने कुल्ले तहक समक राखी-से अमुरोच। ओना त हम पहिनि सं बलनाम छी। बल्लेक किने जे नामी नोर मारदेवा-से तकरे परि। जाननि बाबा नेवनाथ बलिपा सं अहाँ हमर पना छापि देखर ताँहिया सं हम निवास भयानक पूजा छोड़ि म्दानक पूजा जे खानल छी जे कोनहुना हरि सेप नीचि बाइ। यत अन्दरियाक रक्षादारी सं बमबा बहल नासक रोचना गाठ सेहो आरंभ क देने छी। इरी रूप मे अनायास वालीसा लिखनाइ जे आरंभ बल्ल से त आत आनिबल जन अर। विस्वास त अलिब से सं कहियो आनमय मेळ त ई इतिहास हमर कलचक काज करत। आमा त उगिल्ले जाननि।

अपने सं केर हमर आपाद-मलक प्रायना जे इर मन केँ दुनि छापि दी। दोहरा ओइपारक छी।

फोस्तर नहि वेनाक प्रबल आकांक्षी  
भीमान छाल बुझकर  
हुमरुन शान बाजी

★

## देश-दशा

की भेलै किय भेलै, 'मेवा ई केना भेलै तीनु सुबलक परबिद मिथिला, भाइ किय पना भेलै आइ किय पना भेलै, आइ किय पना भेलै बल-बुद्धि-विद्या किछु ने रहलै, सब कल' हेरा गेलै अकर माटि सं जनमलि सीता, अडिखक शाप भेटा गेलै रेह बखैल विदेह ब्रह्मकेँ, से परताप बदा गेलै से परताप बदा गेलै, से परताप बदा गेलै सुगो शास्त्रक नाम करै ब्रह्म, से परताप बदा गेलै ओ शिवसिंह सबदेह बदा ब्रह्म, विद्यापति बदा गेलै नदेवा कुल्ले रीत कोटि ब्रह्म, सिद्धक नाम भेटा गेलै सिद्धक नाम भेटा गेलै, सिद्धक नाम भेटा गेलै तोहि पारि क कनै मैथिली, की बलै आ की भेलै

—राम लोचन ठाकुर

१. मिथिलाक छी : मैथिल छी ॥

२. मैथिली बचाव : हिन्दी हटाव ॥

३. मैथिली बाजू पड़ू लिखू ॥

४. मिथिला मे यातायातक सुव्यवस्था छेक,

रौंदी-पहरी सं मुखि छेक, ब्रह्म-कारखानक

बिकास छेक-जनमत सेवार करू।

मैथिली बान्दोलन केँ सफल बनाव ॥

५. मिथिला-मैथिल बिरोधी जयचंद-मिराजपर के चीन्दि क राखू।

निवेदक

मैथिली मुक्ति मोर्चा, कलकत्ता

मैथिली-पोषी आ पत्रिका बनवत कीनू पड़ू,

आ जनको कीनवा पढ़वा छेक मोखाहित करू।

किछु बहुत वर्जित पोषी—

१. अर्द्ध-नारीश्वर (भयवांस) / मणिपद्म राम-२५ टाका

२. इतिहासहंता / कविता संग्रह / रामलोचन ठाकुर राम-४ टाका

३. वेताल कथा (हास-व्यंग्य) / कुमारोरा काश्यप राम-४ टाका

४. जुआबल कलकनी (नाटक) / गहेन्द्र मल्लगिया राम-२ टाका

५. निष्कर्षक (नाटक) / अनार्दन झा राम-२ टाका

श्रेष्ठ कथन' कार्यालय सं सेटि सकेछ

## आइ भिक्षापात्र नांज, चाहीं महाकालीक खापर

कसुपान !

युगो वं हस्त लोकनि विचारिणि मृति  
पर्व मनस आ प्रलाप बाल करत आवि  
रहल की मरुत निपला-मैथिलीक समस्या  
बते छल सेव पढ़ल अछि । कहनाक प्रयो-  
जन नहि, जे प्रस्ताव-परित केनाइ तथा  
मंच हं बहक-बहक भाषण देनाइ, संगहि  
नेता लोकनि आस्थावन देनाइ कोनो  
अर्थ नहि रहल अछि । इ कह सय हमरा  
लोकनि भरिसक इछनोचारि नहि मुकलौह  
आ धाचरि नहि मुक्त तापरि' समस्याक  
समाधान असंभव । तँ, कोनो निरर्थक  
लघुनिबन्ध भनओनाइ बेकार्य नहि, पञ्च  
प्रस्ताव पास केनाइक बदला अधिकार  
प्राप्तिक लेल संघर्षक झगड़ छेल परताससक ।  
मोन राखू जे होइ पलायै मिल भनहि  
सेटि जाय युग अधिकार नहि । अधिकार  
कैमय रहैत छैक आ ताइ छैक त्याग,  
विद्रोह आनयक । जे काति मरनाइ  
नहि जेनइ को ने स बीवाक मरल हुमेइ  
अपना ने बीवाक अधिकार लेखइ । आ  
भन भावा-भूमिक उद्धार हेतु जे संघ  
अछि, तकरा वं मरे मानि छैल काइ व  
अमरता सेलक की ?

निब भू-सापा तिल मलय,  
मरब ने अपर कोत अछि ।

### चिट्ठी पुजो

देखिल कवना'क अंक-२ प्राप्त भेल ।  
आभारी छी । मुकमोचन ई प्रवाल अति  
स्वापनीय—एकर हार्दिक धन्यवाद ली-  
कारी । यथायोग्य सेवा छिली ।

—धनपक

देखिल कवना'क तीतटा अंक देखनाक-  
पढ़नाक अमर प्राप्त भेल । मैथिली ने  
बाहि तरक बरक मान्यकता छलैक—  
तकरा ई प्रति करैत अछि । कोना तऽ  
एकर सम रचना उपर-उपरी रैत छैक  
वदर-काम हं हूए मिथिलाक मजदूर'  
हमरा विचार वं लम वं मलयपूर्ण साम  
निब । जे अम रचना के ओहियो देख  
बाइ तऽ हकमान बही लामक कारणे  
देखिल कवना अमर राख । 'कद कोचन  
कविराय' (शायि दोसर अंकक पूर्ण प्रमा-  
नित नहि कऽ सकल) बाल-गीत तथा  
पहिल आ दोसर अंक से प्रकाशित ओ  
रामजीवन ठाकुर बीक कविता तथा तेसर  
अंकक 'मोनिहारक गीत', दोसर अंकक  
'धुल्लोचन सारपर स्वाक मजदूर' तथा  
'पुढारी-भुवा नाम सत्ताक राजकीति' हय  
तेसर अंकक समस्त रचनाक एक उत्पल्लिख  
छिक । ओ गुणाक कथा 'डफेल' यथापि  
पत्रिका से नेही बाहर छैत अछि—जयपि  
पत्रिकीय अछि । बहुत दिनक साइ एहन  
नीक आ सशक्त कथा पढ़नाक मौका भेल्ल ।  
और अत से इकर सम्पादक के धन सम्यो-  
पयोगी सुन्दर-उपलब्ध संशयक्रीय विज्ञानक  
हेतु अक्षय बखवाद । ई जन बिबीबी रो  
से हमर कामना । —राजेंद्र कुमार सिंह

अभ्युदय प्रकाशन, ३३/५, डा० देवदार खमान रोड, कलकत्ता-७०० ०३३ क लेल ओ मरेबर आ द्वारा प्रकाशित तथा पाबनियर आर्टिस्ट, १२-बी, इन्दिरा

पेसाब क्यूट, कलकत्ता-५ से मुद्रित । सम्पादक : श्री कनार्दन झा

बालोच

## क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलाबासी रे

सीता छति को क्षय मिथिलाबासी रे  
मायक बोल बचा छे मिथिलाबासी रे  
जे समर्पित समर्प आगू झल  
सैह फल छयि मिथिला सिधिया  
विद्या-दुहि-कला वा हो बल  
योरि कोटि सुत के मो अपला  
नवतुरिया छठ जागो मिथिलाबासी रे  
मायक छाष बचा छे मिथिलाबासी रे  
समर्प मजुर मैथिली भाषा  
चारि कोटि मैथिल के आगा  
मिथिलाक्षर सन छिपि पुरातन  
कय उपेक्षा सावक राबण  
छठ युवागण कनै राम अविनाशी रे  
मैथिलीक मान बचा छे मिथिलाबासी रे  
छय मातो सीता ठखिया  
रोहम विद्यापतिक मूर्ति ई  
जे कहियो समठा पूजित छल  
थाइ छि समठा अवहेलित  
आबहुं बेत, कनै छुनि सयानाशी रे  
क्रान्तिक पथ अपनाले मिथिलाबासी रे

—सुभाष कन्नू का

## विशेष सूचना

मिथिलाक स्वर्णिम निकटक हेतु अखिल जनधारण आ कान्दोहन पर  
निवार-विमोचन खरी मार्ग ताकनाक हेतु आगामी १० जनवरी के इन्द्रभवन  
मैदान ( दक्षिण ) मे प्रातः ८ बजे वं सांके-७ बजे करि मिथिलाक विकास मे  
अभिरुचि राखयवला प्रत्येक संलग्न आ राजनीतिक दलक इक-द्वितीय प्रतिनिधि  
सम्मेलन, मिथिला जनसंघर्ष मोर्चा मायोर्गना करत । एहि सम्मेलन मे भग  
देवाक हेतु मिथिलाक प्रत्येक प्रगतिशील बुद्धिजीवी आ भावजीवी नें आदर  
आभार ।

—धर्मेन्द्र कुमार  
संयोजक, मि० ७० मोर्चा, दरभंगा

देखिल कवना' चन्दाक दर :-

१ प्रति ५० पयसा  
१ स्वर्क ५० टाका  
५ स्वर्क २०० टाका

पार पठेनाक पत्रा—

श्री अनार्दन झा,  
१७/६, उषा नगर,  
कलकत्ता-७०००६८

## कह लोचन कविराय

बारिक पठुआ तीत आ, हो बाजारक मीठ  
कुहरि फूल तँ मैथिली, छनियां देख गीत  
छनियां देख गीत, नवैप पदियन गामक  
चाम-दाम सं मोहि, पुत सभ सिधिया धामक  
कत लोचन कविराय, कलकत्ता लेल कारिस्त  
मैथिल युवजन मानि. मैथिली पठुआ बारिक ॥

—मदन मोहन झा, अधिकारक,

मदन मोहन झा, अधिकारक,



# प्रमिन्न रोगना

वर्ष-२ अंक-५

फरवरी, १९८२

मूल्य-पचास पाइ

## सम्पादकीय

### सुगता मिथिलाक्षरक

जिपि आ भाषा मे उपर सम्बन्ध छैक जे देख आर मन मे । सुगति स्वस्थ शरीर  
मात्र सुन्दर आ आकर्षक नहि होइत छैक अपितु मखल मन आ स्वस्थ-शरी चिन्तनक  
आधार सेहो होइत छैक । हरिना सुन्दर-सुगति बिबि सेहो कोनो भाषाक विकासक  
आधार होइत छैक । एकर कारण छैक जे जिपिक निर्माण मे विद्वान लोकनि जे अल्प  
परीभन कथ पड़ेत छनि आ हरि नाम मे सुगहुं लागि बाइस छैक । एकर कारण छैक  
जे कोनो कोटिनि बाति अपन जिपि के तेबि दोसर जिपि अपनेनाक छैक तैयार नहि  
होइत अछि ।

जिपि जे देख भाषाक देख कि त ओकर पहिल पहिचान किम । ई जिपिबक  
विशेषता छैक जे पहिले नजरि मे देख के अपन अस्वास्थक, अपन विशेष परिचितक  
मान फरा देत अछि । कइनाक प्रयोजन नहि जे ई परिचित गमा देने कोनो भाषाक  
भविष्य संदिग्ध भ बाइत छैक, ओकरा चारुनात संकेतक भेव सदितल महराहत  
रहेत छैक ।

उत्तर-पूर्व चलीय नग-भारतीय भाषा सम मे सम सं प्राचीन आ सभुद भाषा  
होइतहुं मैथिलीक स्थिति आर सम सं दक्खीय आ होचनीय छैक आ सभ  
कर्बस करण छैक मिथिलाक्षरक अस्तित्वना ओ देवनागरीक अस्तित्वना । हिन्दीक  
फारा पर पाबित तथा-कथित विद्वान लोकनि द्वारा यदा-कदा मैथिली के  
हिन्दीक बोली करि देवाक दुस्साहसक आधार निश्चित रूपे ई किपिब किम ।  
चाह विचारसि जे छ क हमरा लोकनि शक नबैत छी, जं हुनको मेसुरकीप  
देवनागरी मे मात्र भैत रहैत तं निश्चिते हुनका मैथिलीक कति मान्य करो-  
ओनार मोतेक सद्व नहि भ पवत । ओना मिथिलाक्षर मे रहितहुं प्राचीन मैथिली  
नाटक सम के हिन्दीक नाटकक रूप मे भावसे लिखल गेल-ए परन्तु ताहु मे मैथिलीक  
पाइस पाबित विश-नालीक वला मैथिले मोफिलरक परंपरा छैक जे समस्त पोथीक सूची  
आ परिवर्तन उपलब्ध करा देखिचिन । आ से होइतहुं मान्य नहिने भ सकलैक ।

ओइ बहुत दूरक कारण छैक जे बहुत दिन परि विचारसि बंगालक कवि मानल  
जाइत रहल । ओना ई मैथिलीक हिले मे रहलक जे त कथितक मायः समस्त पदक  
संक्रमन-प्रकाशन जे कि विपर-प्रमुदाय मराठ्य दसक भवसे मेळ से अकल्प्य मैथिल  
बाति सं किमहुं संभव नहि भ पवत । आइयो स्वार्थ तथा मैथिलीक प्राचीन नाटक  
लाव के मालकालीन नाटक के बंगाली लोकनि अपन पोथी मानत छथि आ वाह पर  
बह-बेटी काज भ रहल छैक ।

सब छैक जे मैथिलीक विकास मे सम सं येव भाषाक मेळद आ भ रहल देवनागरी  
लिपिक प्रचलन आ मिथिलाक्षरक लिखल । हरि सं ई मात्र अपन विशेष परिचितिद  
टा नहि भाषाशेखर अपन बाति सं ( पूर्वाचली भाषा-पद सं ) सेहो कटि गेबल ।  
आ बाद विवातीय भाषाक संग जुटल बा बाहि देख गेल-चै सुगता सन हकन वाट मे  
देखल अखर पसि मीदि बेदाक हाक मे अछि । ई विवातीय भाषाक सामान्य दूर  
लपत के दुर्घटित व कय देखलैक सेहो मिथिलाक सेहोति तथा मैथिलक लचि के सेहो  
निजल केकनद आ ओकर वातीय नेतना एकता के, वातीय संस्कार के पूर्ण तरह नह  
क देखलैक ।

ते आइ जं सरपहुं हमरा लोकनि अपन बातिक, भाषा संस्कृतिक अस्तित्व रखा  
करप चाबैत छी, ओकर विकास चाबैत छी जं ई अनिवार्य छैक जे अपन जिपिक रखा  
करी, ओकरा प्रयोग मे आनने । प्रमन छति संकेच जे हते विपुला वाद पुनः मिथिलाक्षरक  
प्रयोग जे भाषा-मखलान कि नहि होलैक । उत्तर छैक-हेतेक । कोनो नौक काज मे  
हजार भाषा-अवधान अवैत छैक-परन्तु जे दवासी नहि, सर्गिक होइत छैक । हते  
हिन हमरा लोकनि पाठ मे एव निर्दिन नौआइत रकोहरे आ भाव जलन बरक वाट  
मेदि गेबल त कतेक चाकल-ठेहिआइत बिदक मे होए-वसुंरा बज्जाक बाकि-गति  
अप्रतिम होइत छैक । निश्चित रूप सं पसि हमरा लोकनि पहुं नि सकेत छी ।

संविधान बिनु मैथिलीक ओ  
मानचित्र बिनु मिथिला धाम  
छाहिजाँरि सुहाइ करब हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

मैथिली आन्दोलन

## मिथिलाक जन-आन्दोलनक सन्दर्भ मे

भोजपूर खसक छेल मनुष्य के ने मान  
आहुतिक प्रविष्टताक विरुद्ध वल्ल संघर्ष  
करऽ पवैत छैक अपितु ओकरा समाजक  
ओहि प्रतिप्रियागदी शक्ति विरुद्ध सेहो  
संघर्ष करऽ पवैत छैक जे अपन रबानतिक  
एवं आर्थिक स्वतंत्र बनौने रहबाक छेल  
वर्गीय एवं जातीय शोषण उपरीहनक वल-  
पर समाज के अन्तर, कंगाल, गुरु ओ  
बिचर म्हा, ओकर अस्ति विकल के  
'शील' कऽ देत छेल । अन्तिम बला समाज  
मे वर्गीय शोषण-उपरीहन, जातीय आ  
राष्ट्रीय शोषण-उपरीहनक माध्यम अन्तिम-  
व्यक्ति पवैत छेल । मिथिलाजन पिछल  
क्षेत्रक जनता ने मात्र वर्गीय बल जातीय  
बा राष्ट्रीय शोषण-उपरीहनक विचार  
होइत रहल अछि । काऽ किछु अर्थ लोखन  
आकारी, परवला लोखन राबन्तिस आर  
किछु सामंतवादी विचारबाराक दोषक सम  
एकजुट भऽ मिथिलाक अछिबित एवं  
अविभित जनताक शोषण करैत आर ते  
आर कर्तमान मे ई आशयके नहि अनि-  
वार्य संकेत अछि जे हरि राष्ट्रीय  
शोषणक विरुद्ध जलझल बा रहल संघर्ष  
के अविच्छन्न गति देख बाव ""मिथिलाक  
संस्कृति; भाषा-साहित्य; कला-कोटल;  
वाणिज्य-व्यापार; उद्योग-वंश आदि के  
उचित संरक्षण दऽ मिथिला क्षेत्रक विरुद्ध  
जलझल बा रहल पटपटन के विफल कऽ  
देख बाव ।

आबादी प्राधिक प्रचाल्य अपना देख  
मे जे प्रगति भेल अछि ओकरा नकारल  
नहि जा सकैत सुत्र जातिद्वारक मिथिला-  
जन सविभित सुत्र उपेक्षित रखल गेल  
अछि ओ कथनः विचारणीय अछि ।  
ओना सरकारी खापर कानूनी व्यवृति  
आर विकासक अन्तर्गत छैक मुदा  
व्यवृत्ति ई जे मिथिला के माध्यम म्हा,  
केन्द्रीय एवं राज्य सरकारक दखु वप मात्र

भारत मे रहलनो साक्षरक संख्या पचीस  
प्रतिशत सं देखी नहि छैक । मिथिला मे  
त भारो कने रहल । हरि मे शिक्षितक संख्याक अनुमान हरिहि कमजोर बा सकैल ।  
शिक्षितक छेल दूर वंशक समय जं रोम देख त सात दिन सं देखी मिथिलावा सिबना  
मे किनहुं नहि जातनि । जे नेता वय अन्तर्गत कत तकता छेल बेले रोमन वा  
देवनागरी देखे अपन जिपि । कल अपन हेलाक कणे आर रहल होलैक । जातिक  
पोथी प्रकाशनक समय छैक ताहु मे पिछल अक्षेविचारक संभावना नहि । बंगला आ  
अधिकाधिक लिपिक संयोग सं चलहि मैथिली अक्षर भेटि सकैत । समानतावा दूकरा  
किछु नव-वर्ष रूप देख बा सकैत, जेना बंगला मे कइत जेन छेलैक । बाव के 'उ'  
कारक भाषा मे दककपता भावस्यको छैक काज प्राचीन ज्ञानीक अनुसार किछु अप्पर  
मे ई भाषा कने ओकर सेहो बढि जात छैक आ हते कोनवा मे नहि अछैत ।  
आचार नहि विचारो भ जे मैथिली जेनी विद्वान लोकनिक तथा आन्दोलन  
कर्ता लोकनि हरि पर 'व्याम देवाह मा गंभीरता पूर्वक सोचवा । समय जते शीत  
अछि-अकाले होइत अछि तं विज्जा आवश्यक ।

● जय मैथिली





पाकिस्तानी कथा

## इफ्तारी

अतिरिक्ता उपालब्ध की। गरीब के

एक डूबरी रोटी सेठों। अफार अफार

मला करता है। है आलस, कलनाश

पुनर्जाति, दिवदी कनकरा सोयक प्रकाश

कनाली प्रकाश के प्रवेश कर। विरटी

सोयक कनकलीक सेवाल ओजिन सम

समय बहुत रीत कर, बाहर वं प्रति-

विशुका उपाल। लयमाता हरि गोकांत

वं बोझा ठेकेत कर। 'मतिरिन है कर-

कनका भीलमंगा सम जानि ने हूँ सुधि

ने रहत, गुदा सकि पकिते वं कने वन वं

रोजा बोझा वेद कि मिनिता क बहार

रहत।

'अफार अफार' सेरतानी पर दुहा

करता है—उपर कतिताकर लगातार बहा

रत रह।

'नबीन! ओ नबीन!! पसुका

मधुर सभ ने रो से भीलमंगा हैद दरी।'

नबीन—अर्थात् नोकरी—बोचय-

हटक। बाहर-बाहर मायपर अंकरा राति

केलक। बेगम सारिदा रंटाक सोफा पर

ओकल दुर देता आ लामीक बाट ताकि

रहल छडी। सामनेक टेबल उबर। दपप

कनका वं कपल केक आ ताहर' नाना

तरहक हुवातु लाय-सामग्री ३० सामग्री

तेक के आर के बहुत आरत बोकी

कने, तकर रहलक बाहरी नलि। कने-कन

ओ पदी देखि रहल छडीक आ अनेवें

म रहल छडीक से कलत रोजा मयि एक

'मिली कदियान मुँह दे देती।

एक त ओजिना बेगमक डिडिटाइ

मेलाव वं नोकर चाकर तंग रहत छल

ताहर समानक समय त ई मेलाव आर

मुँग पर चढ़ि आरह। प्रायः सभ

सामक विचार छल नबीनक कगार।

बेकारीक कुकुट ने केओ छल ने था ते

छपुणल बेगम पर आभित। बेगम

सारिदा सेहो अपना दिव वं कनिवो कनी

नलि रहत छ'न। मालि-रोट वं कनिवो

कनिवो कु डित नलि होर छलि। वल

हरि विवेक' काक' छेक बाद-गमी

बाहोमाव छतीवो दिन हगो पंखा

हगो रीत छनि।

ये निकसी। ओतम वा क मरि

तेले ने की? बहरा किद ने होर की?

नबीनक कट-कट मुँह पोकेत करदा

दिव मधुभादक। हाथ ने कडकटा मधु

मेने विदी दिव रहल।

'दपपर था व देखलौ केता जो?'

मम सकोकि क नबीन सुनि गेल था

बेगम सारिदाक सामने जा हाथ पकडि

देकल।

'अम। अम दूदा।' बेगम सारिदाक।

ओ पतिपिदी रहलकी ओते मधुर सभ मेले

की? निविचते कीकि तेले। देखलौ, का

आ।'

'नलि-नलि, हम नलि खेलेह—

नबीनक वीत रहल हम बेगम सारिदाक

आलि रहल रनिम वकी नबीनक मुँह

भीतर उकाटल हल डूबरी मधुर पर पडु चि

गेल। बेगमक पंखा तेनारे छल, तरातर

लगाकी ओकरा देगाम। 'बेनेरिया,

जुहेल। हरर रोजा होर छ'।'

'लोदातका दुया कला। दुद, आनर

अकदिल के को रफतारी सेठक।' बाट

पर वं ई लख लगातार आवय आगल।

'ओ—बाप रे। आर नलि मलि-

हन। अहोकर पहर पकड़े की बेगम सारिदा

केर कनिवो ने छेन। हर बेर ओहि दिव

हम सोदा कलम करे की।

'हर ने तोरा हम कलम खोल्यो की।

आर तोरी ने की इसरी ने।'

'अफार अफार' काक-काक के भला

करता है। केर उबर कगारनर।

एकदम हरमि गेलक बाद बेगम

सारिदा नबीन के पहर वं ठेकेत बकली

लो मुँहकडकी। मधुर सभ की प्रीमंगा के

देने आ। कलम वं ने बेगमा कंट कादि

क चिचिया रहल-ह। आ इरी द दिवकी

बेगरी वं कने रहल मुँमक दलि रेत

करकन।' अंबरी वं अपन नोर गोडेव

'नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

रहल छेक आ हरि हरि हारा क रहल  
छेक। वलन जान सम देखलक ने नबीनो  
कोका सम दिव देखेछर व आर  
निजियम कोका। नबीनो निविच भागे  
पुनर्जात देखत छ-का ओकर बाहुक वर  
कान ने पकड़े—मं मीगीर के कनिवो  
कान-बाल नलि होर व मलकाक हन  
देक।

कर कल वं नबीनो आ अमभारक बीच  
हगो दुगीव दूरी काक कर। दुगु निविचोते  
भार सकि कलमा ने ने ने बेगमदान सेल  
रह। परबे रसाव दलन ने गेट-गोट प्रायः  
नलि ने कनी होर। नबीनो कनिवो काक  
हुदवा-हुदिकाक आलि ने आउर अलीक  
हन गेट क छेक छल। काउरम कनानी  
के अमभारक कनी का रालक बाहु कर  
ताउरम केक हरि तरक वटना रावण  
बात मेले। बाद ने ओकर दुगु वीव  
मेम बढ़ले आ चिदी पुरली सेहो कलम  
काकल आ तरक बादे अमभार नबीनो के  
लुक मे भती। कालेकेल कोर करव  
हगलक।

बशानीक दलि, अलार-अमग कोकल  
बीनक भारम से अमभार बीन कर  
सम ने वं छल ने सम देखल साबानीताक  
बात छोड़ि आर किडु होचिद ने सकले  
छल। बिबालक गरीनी, कनोदरक गोण  
कोनहार समक हुदवाक वलका आयु की  
वति धमक वलमाकी किल्ला भादि सम  
किम पर सम-सम भापल देवाक केक ओ  
देव कनिमि छल। बने सुकल, देहरे  
अमभार छल सम कोका वदीयमान नेता  
हिवनि देखलेक। नबीनो सम सेहो नाद-  
कोचिद, वलदुक मामिका मे कनिवो कम  
नयि। नबीनो का ओ अमल रंगीन  
कामाकीक लल उपलिद करत। अम-  
वार मे ओकर नाम देखि नबीनोका छाती  
दुखन म बललेक। ओकर लकी-वेरीकी,  
परिबन-पुखन मे केओ दहन नलि छल  
बकला मे अमभार वं बेरी देश प्रेमक  
भावना होरक। नबीनो सेहो कोका संग  
नव बीनन आरम करवाक छेक अपनी के  
देवार करय कागलि। अमभार सेवनकीक,  
हुदमाकी हरि बाकिबाक बिदा धारा के  
हरि पक्षर भागलिद कर केक प्राय कने  
रंगितक लगला छल। धिअ ओ भादल  
वर्क समला सम वं परिचित होमय  
कागलि आ समभाव लयाबान होचि  
ओकर मन आनन्द निर्भर म बार।  
भातक स्वाचीनता कमडा ओकरागत मे  
स्थान कनेत गेल आ देवाक छेक प्राणो  
देवाक छेक ओ देवार म गेल।

अमभार कोकल बीनन सेव होरहरि  
विवाद केकल आ तरक बाद आरत पदना  
आरम। नबीनो है देखि अलाक रहि  
गेल है अमभार ओकर अमल करकटा  
राकनेतिक संकी वं परिचय करोनार का  
सम-सम भापल तक लोमाकल कर। कर  
ओवेत ने म छेक पदनादक काये कला  
होमय आ पदनाद सेव होरहरि को पूर्ण-  
रूपेण राकनीति मे आग छेक।

मलकाक छल पर कबराक बीच ओ सम  
रीर। उबर पस्किम लीपल वं भापक  
हरि कन्या दलक सम उरकोर। कोक  
दकला सम वं देवाद। दुगु दलकाभा  
ली ओकर समक का द क नलि का  
वलेक। हरि ललाकल प्राय सम ओक  
दकला समक रिनिवा आर आ मोटा  
दलि सेवने मे समक रिनिव प्रयान्तक।

निमभरि दकला लोकिनक वलक केवार  
सम रहोक आ है वम दिव बातवा बका  
मरि वार दलनन माय। लोकलन रोटी  
माउल केने कीरक। केटीक हरर समक  
बारीक काव करलेक। वम देहमम कायल  
पडी दुवेत-दुवेत अमल उबर म केते व  
केल फेकि देत। ओर इरडीपर समला  
केल बाउपर कुहर सम केता तेवारे रीक।  
सेव रातिबरि कुहरक कयटक दलक  
बाउर।

खान सम केगाद-पीनाद सेव क  
हिलकल खाता छ देवि बायल। दक-दक  
मादक रिवाज करत। केर केओ-केओ  
दुका ल क मेक कुचेल कनभर रहि  
रहत। के कने कुडीयल रहल घासक दक  
चकर मोलेक वरा बायल।  
हरि केगाद सुवमानक केक वम-  
शलकल निवेक छेक। किनु निर्दलारुवक  
सुचि कुखेलो है वम नमल पदवा आ  
रोजा ललकाकल वर निछाबाज नेता बोदा  
वाला के वल द क प्रकल। राकल-जोरीत  
हो। लमभार-समभानक अमल-मुने  
कादि मेले समक पदुत-पदुत कीरि सम  
दुपीकल टोड कय मयि पलिछा सम  
केता वीते ने बाहय। केओ-केओ अमभो  
मे अति बाउल आ बाकी परंवार दलनन  
देत। का रेने उर अमभार कनानी के  
बाउल देखि मार गेट नमरा रीत आ  
अमभोकर दलक वल कनेव। गुदा कान  
वलिदल वलक रीते के कलन मलिद मे  
अमभार पदुत-यानेभरि दिनक उतावला-  
तिर बोपगा देलेक।

दकले समक हंगामाक कारणे दोर  
कातक मलन लाली पदल छेक। परब  
ललाक हले का वम हले पंच सकल प्राय  
नीच टाका मयका मे पति दूर टोकर नव  
मरिदा अमभार अली होवेते छल केता  
ओ कुनु नव वलक बाकिबाक केने हो।  
ते बेरी लोच-खरि नलि क अमल प्राय  
बीदी आ वला के क क होके दूर सकल  
मे आति गेल। बीवी नबीनो के सेहो बड़  
पयिन पकले। ओ वल बात दलिवाय  
मे कायि गेल। परब पलिदे दिनक हाकि  
मे कने सुलेवाक छेक ओ उपललाक  
बिदकी का ठादि मय नीका नेता-मुटकाक  
सेल देखल छल कि हाउस ओकर काण  
आति ओकरा सीतर क काय बाउलले।  
मोद। मरिदा जान सम क म देख।  
केता ताकि रहलक नेता बाकिबाक बिदा  
बाउर म केलेक।

नबीनो बापल ने देखलक व वंटापर  
भीद केने जान सम ओकरे विर ताकि

की? निविचते कीकि तेले। देखलौ, का

आ।'

'नलि-नलि, हम नलि खेलेह—

नबीनक वीत रहल हम बेगम सारिदाक

आलि रहल रनिम वकी नबीनक मुँह

भीतर उकाटल हल डूबरी मधुर पर पडु चि

गेल। बेगमक पंखा तेनारे छल, तरातर

लगाकी ओकरा देगाम। 'बेनेरिया,

जुहेल। हरर रोजा होर छ'।'

'लोदातका दुया कला। दुद, आनर

अकदिल के को रफतारी सेठक।' बाट

पर वं ई लख लगातार आवय आगल।

'ओ—बाप रे। आर नलि मलि-

हन। अहोकर पहर पकड़े की बेगम सारिदा

केर कनिवो ने छेन। हर बेर ओहि दिव

हम सोदा कलम करे की।

'हर ने तोरा हम कलम खोल्यो की।

आर तोरी ने की इसरी ने।'

'अफार अफार' काक-काक के भला

करता है। केर उबर कगारनर।

एकदम हरमि गेलक बाद बेगम

सारिदा नबीन के पहर वं ठेकेत बकली

लो मुँहकडकी। मधुर सभ की प्रीमंगा के

देने आ। कलम वं ने बेगमा कंट कादि

क चिचिया रहल-ह। आ इरी द दिवकी

बेगरी वं कने रहल मुँमक दलि रेत

करकन।' अंबरी वं अपन नोर गोडेव

'नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।

नबीनक कराने दिव अमभाद।





## वाचस्पति मिश्रक जन्मस्थान मिथिलाक वीर्यस्थान

बदरान्त टोकरकर वाचस्पति मिश्र  
अपन कर्म सँ कोन स्थान के निर्धारित  
करलिन ई हुनक कोनो ग्रन्थ मे एकर  
उल्लेख नहि भेटि अछि। परन्तु वीर्यस्थान  
आन्ध्रप्रदेशक पूर्व मे एक उच्च स्थान छैक, जाहि मे  
मोहितास दू गोठ पोखरि छैक, जाहि मे  
एकर नाम मिश्राहन तथा दोसरक नाम  
बनौरी छैक। एकर परम्परा सँ ई सुनि रहल  
वे ब्रह्मिष्ठ वाचस्पति मिश्रक आवांछ तथा  
विवाह्य छलन्हि। ब्रह्मिष्ठक ई परम्परा  
अखन बरि छैक जे लोक अपन उत्तमानक  
अन्तरात्म वाचस्पतिक प्रतापीक मानि सँ  
करत छैक। लोकक ई भावना छन्हि जे  
एहि होकर मोहि सँ अन्तरात्म करजोने  
ओ व्यक्ति विद्वान होइत छैक। वाचस्पति  
मिश्रक आवास सँ उच्च पाषाण पीच सर  
दीया बनीन एहन छैक जे प्राचीन कालक  
पेचलेक आवास सुनि बहर जानत।  
एहि ग्रामक नाम अन्धप्रदेशी पर्वनाक दूद  
मात अछि जे रावटवा आन्धर छलाह  
हुनक राजधानी रहला कारण एकर नाम  
अन्धप्रदेशी नहि अन्धप्रजाबानी दू खण्ड  
मे परिवर्तित भऽ गेल प्रथम अन्धरा द्वितीय  
बानी सँ बानी आ क्रमशः ठाढ़ी भेल, जे  
समयसँ दू टोख रिलिङ्ग हके ग्राम अन्धरा-  
ठाढ़ी सँ सम्बन्धित होइत। राणा टाका  
राजधानीक प्रति किछु भ्रममेद अवश्य छैक।  
आन्ध्रगणनाथ आ सौम्यवत्स कोष्ठदीक  
भूमिका मे राजाद्वाराक राजधानी नेपाल

नाल—कविता

उदयोप

मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित। छय  
आपन मातृ भाषाक हितक हित। सब  
अभिलाषा भाषा सुविधाकक। युव  
कछिया काजो बान्हि टट्ट बल छय। सब  
हम छाती कुआ बहर जागरी। युव  
मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित। छय  
बनि मातृभूमि केर सबल पूर्व। मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित। छय

मिथिला विभूति .....

हिनक पद—  
‘पौढ़ के वातिक, भविक महिबनिक,  
उंच क बनिर भारि।  
उंच के उपजल,  
आक के पहिर गारि।’  
एकनो किमानक छेक पय प्रखानक  
काम करैत। ई पद मातृ हिनक कवि  
सम्बन्धी शान्तिक नारी, अपितु आपना पर  
अष्टट विचारक सेहो प्रमाण थिक।  
एहिना—

‘कुलि समरदा, चोडोवान,  
आबहु नेबर बर किमान।  
मारे निषा, कोरे बान,  
अब कि रोपब बान किमान।  
सरोपनोको उचित समर्थक सम्बन्ध मे  
प्रमाणिक मानल जाएत आ प्रामः किमान  
कानि बहर पुनरावृत्ति करैत सखल जाएत  
छैक।

देखल बयना

## लाल खुसकरक चिट्ठी

श्रीमान् लालखुसकर जी, मोदीप बी।

ई बाद समाचार ई जे हमर वेद देल गेल।

देखाक उपरान्तो आहां अपने आदति सँ  
बाज नहि रहलुं आ हमर दोसरो चिट्ठी क  
क छानिबे देखलुं। त कान कोनिक  
सुनि लेल बाबो जे आहां के न देख-  
पनक विशेष दायी हो त ताह सँ मिलिबो  
भरि फल लाल खुसकर के नहि छनि।  
कलक जेनो जे ‘चोरेक हरे प्रभा तुक-  
नोनाह—छे सहर परि’ आह काहिक  
दोभारी नेताक हरे लाल खुसकर अपन  
बुद्ध मे ताल किहू ने लगा सकै छनि।  
तलन स खुदो बा क युव नष्ट करवाक  
वख मे हम कहियो नहि राखी आ जे हेतु  
आही लोकनिक पत्रिका से से कहीं आयल  
पनि नेक पानि बाटे विचारक बानि सन  
मे हो—तै एक आय अंक छैक बिस्वक  
देखार-दिखार होए—बहर सोचि चिट्ठी  
नहि छपे छैक किहू ने रही। ई लोकन ई  
बात बरि तत्त जे समाचारो रचना हम  
नहि लिखे छी—माने आहोर सखकर  
नहि छी।

आहां लिखैत छी जे देश मे परगो  
आकाश छनि रहल-ए, आदति सँ बाहरक  
साम बाहिर टहल सँ गेल छैक ताह ठाक  
सरकार स खल टा बाहर पठा बला मे  
तेल केनाके तेलक बंग संचि केकक-ए  
तकर किरोव ईवाक बाही। हमरा त अपनेक  
हुँद पर हँसी खोए। कहू स भला, कहां  
राबा मोन आ कहां मोनवा ठेकी। तेलक  
संग कौनो बाजारक दुखा हो। बरी दुदिक  
बाति सल ठठि के सर्वांग शरीर मे तेल  
आवेक आ तेहन शान करैए, खानक  
बाद पूजा करैए आ भगवानो के तेल देत  
छनि, मोनन मे तेल जे तिलकोरक तस्मा  
नहि भैकेक स ब्दोरी-दोरीसो अपन  
चारी आ से भिनु तेले एबल नहि साम  
अपार हो बली-तोन क्ता भोजनो रहत  
आ खल-खल तेल पकटत, राति सुते सँ  
पनि तेले एकर मे लोहे कटा आ तै पेट  
मे कप मे सिंग मे तेल बला क्ताबी के  
चरितार्थ करैए—माने तेले सँ एको भरि  
फास नहि रहत तकरा छैक तेलेक निरोधक  
यात केहन छलाहस थिक सेहो स सोचि  
तहुँ ?

स माने पवत जे पूर्वकाल मे समक लेन  
पदना-लिखनाक सुविधा नहि छलैक।  
परन्तु कतिदास सँ फराक दिनक अधिकारी  
कविता सबल माह बनलक हज्जा जाकीया  
रण आहीं। महाकवि डाक सरिपहुँ लोक कवि  
छलाह—पूज कवि नृसिंह गार्हिक नहि  
हइन जे महाशायी पंडित छलाह डाक  
तनिक मयुलक सम्बन्ध मे कहल जाइत छै  
पोखरि मे ई कवि अछाले कालक भाल मे  
चल गेलाह। मोना प्रतिमाक प्रायः सकल  
मयुल होइत रहलकर पर बहू सम्बन्ध मे  
महाकवि बनबान छलाह से नहि। ओ  
एकरा कहै छनि—ई दुनि दुनि डाक  
निर्दिष्ट, नावाक काल विनाश-ए दुनि।  
आह समय आदि नेउर सँ हमरा  
लोकनि अपन बहन बहन विभूति के ठाकी  
बीधानी आ अपन बातोप ममोदा के  
बदामी।

—सुखतका अछी

पंच

समाचार बी, तेलक उबहर भारक छैक  
जे जे काज शक्ति सँ सम्भव नहि तकरा  
सकलहि सम्भव क सकैत छै रमन पदमे  
हबब त हुनोले हबब जे राधण आ बालि

सन श्री पुष्प अष्टदी सेहो मे मारल गेलाह  
आ विभीषण-सुग्रीव सन पञ्चशुभा मान  
तेलक नहे राब्या-जिबानी बनि गेलाह।  
महाभारत काल मे सुविचित्र सन आश्विन  
लोक बर्माबलक उदयि पदोत्तमि आ कर्क-  
भीम पिलामह सन लखवादी योद्धा अछाले  
काठक बुद्धि चले केआह। इस्लाम आश्व  
मे शारयिक मतलब ई जे एहन जे प्रत्यक्ष  
बहु मेले तेल—तकर विरोध नहि क  
उत्प्रेय केनाह सिखलै मखिय मत।  
हेनो महनुमान हमरा लोकनिक पुरखा  
हुन नहि छलाह जे बहुत पहिलहि कहि गेल  
छै—‘तिलक तेल, ई केमहर इमित  
करैए—ताह पर जानका योग द के त  
सोचू।

समाचार बी सँ मनेने लोकनि हमर  
सलाह सानी त हम बहल जे थपलै मैथिली  
मान्दोलनक नाम पर अपन हलब नहि  
गमा—तेल आदोलन आरम्भ—कल।  
सकलत सुनिचिते मानि किहू आ  
मिथिला-मैथिलीक सम्पूर्ण समालोक प्रमा-  
दान तथा सर्वविध विकासक एक मान-  
ई पब बानि बिस्व। मोना अपन लखी  
ला के बहन सलाह देले के कर—उत्थापि  
हम स गारदीसो देव जे सँ हमर बात  
पुलि प्रमाणित हो त हमरे नाम पर एक  
दरबन इतिहासिण पोति छै। हेनो बाबू—  
एकर त सलाहत प्रमाण छैक अपना लोक-  
निक मुख्य मंत्री आन्ध्र भी राजाबाब भी  
मिश्र। ई तेल लखेवाक कला थपलै वातक  
रहक चारी ने त हस्तान बी कहां भरि  
बीनगी तेले आदति रहि जायब आ हाम  
नबत छल।

समाचार बी, आहां के त सुनलै मर  
जे ओमान लाल खुसकरक लल बाकक हर  
वेर मे टूटक परीक्षा दे बनि परच हलनहि  
सँ कल्याणत लोकनिक लायन लगले रौत  
छनि हुनका ओसय। एकर कारणो छैक  
जे ओ देहल किरोवी छवि आ तै चेरा मे  
टाका समेतक प्रलेने जे उठैत। किन्तु  
एकरा आदि के ओ निर्णय छेकनिह जे  
नेटाक विचार ओकरे ओतय करमेताह जे  
लाहसय प्राप्त तेलक डोकर होय। ज  
अहो के इतिहासक कला बानल-बूझत हो  
त घटकीनी क सकत छी।

अन मे अने के संचयार्थ-लिखि दो  
जे हम बहन तेले पर जोषक रहल छी।  
जोषक विषय थिक—तेल थिक आ  
केना। परच दुखक बात जे तेलक सम्बन्ध  
मे पर मे सोनो मे पढेछ आ तै जोष कार्य  
उप पल्ल अह। एही अलगा जे बाट ताकि  
रहल छी जे कहिया लुकाइ सामयपदी तेले  
भारत मे पदार्पण करत जे हमरो घाक दीप  
बलत आ कोष कार्य पून स सका। एही  
दुबारे हलन रचना टोका सँ सेहो असमर्थ  
छी किन्तु तेलेक स गमान होइते रचना  
अखलै एकरा सँ ‘वैद्यक भक्ति। आर की?  
आनेक पदोप नहि पेशक प्राप्त लुकाइ  
श्रीमान् लाल खुसकर  
सुखतका प्रमोदाबी।

सभा-समिति

इयौद १० जनवरी, ८२ । आह इत्यय  
डा० ब्रजबिहोर वर्मा मणिस्मृक् अभ्युद्यता  
मे विद्यापति पर्व समारोह मनामोक्ष गेल ।

बर्मानो बर्बर्किन जे कोहनाक पुर ई पहिल  
 विविष्ट आयोजन दिक् । उद्घाटन भाषण  
 करत हां कौकीनाथ भा रिण बर्जोनि  
 जे मैथिली भाषा क्षेत्र भाषाई टानिवेक-  
 वादक थिकार अछि । ओ संस्कृत भा  
 हिन्दी सं शोध अछि । बाबुरि पर,  
 मन्दिर आ पठशाळाक भाषा एक नहि  
 होयत, ताबज ई मूयमा पिङ्गले राख ।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमार बर्जोनि  
 जे मातृभाषाक माध्यम सं शिक्षा नहि  
 देवाक कारणे ब्रह्म हत्येक दिनक बादो  
 शिक्षाक प्रतिष्ठा—भाषाशाक प्रतिष्ठा  
 पचीस सं आगो नहि सुखल अछि ।

आचार्य नागमि रिजवी इत्यर्थे ये  
अन्य अविचार केव मुलिया, बी० डो०  
बो०, विद्यापक मा सांसद लोकनिर्वा  
होताको कल जाहि संसदारी कार्यस्य मे  
नेकिनी भाषा मे काब भऽ सकय ।

श्री शुभाषचन्द्र श्याम खोबरेल  
 मिथिलाक कोट में संघर्ष नेतृता करायना  
 लेख विद्यापति पर्वक उपयोग करवाक चाहि।  
 एहि समारोह में मंच संवादन कऽ  
 रहल छलाह श्री श्रीवास्तव ।

हवि समेत्येकैक संवाच्य कपलिनं  
 श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर । हवि मे प्रायः  
 देवति माण्डूय, किरण, चन्द्रमानु सिंह  
 अमर, जवाही साहिलालंकार, बाबूकास्त,  
 उदयचन्द्र भा विनोद, शोचिन्दन, नाजिम  
 रिखी, पवन कुमार, योमेकै किङ्कर यो-  
 वा । ह्यानव स्तौ, प्रो० देवकान्त मिश्र,  
 प्रदीप मैथिली पुत्र ह्यादि ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम मे अपने आदर्श  
गीत धर्म सुनेकनि शक्तिशाल सुभाकान्ति,  
चन्द्रमणि, दुपत भाग्य काश्य, गणन युवन  
आ गंगाधर आ। इहि कार्य-क्रमक संचा-  
लन क रहल छलार लीयल आ साजबन्द ।  
विभागीयक लडाओनि उषा, इन्दु,  
गननी कार्यकर्ताक आरभ विद्यापतिक  
गोसाउनिक गीत सँ कएलनि ।

आचार्य नान्दि राखवाचार्य  
शास्त्री आ दामोदर काठ दासक मृत्यु पर  
शोक प्रस्ताव भनर्कन ।

किण लीक प्रस्तावक अनुमोदन करत  
जोवकन्त विहार सरकार सं मात क्युठान  
वे मैट्रिक परीक्षा मे विचारित मैथिली  
मथ पथ संग्रह अनुसूचित भा जात्र लोकनिक  
खार सं बाहर बकि, हे अनुमोदी विद्याक  
लोकनिक नव सभ्यार्क मण्डल नव मथ-  
पथ संग्रह उपयान करय ।

भोज उब विद्यालय इगोदक प्रभा-  
 व्यापक भी विष्ट भू त्यागत भाष्य  
 मयहनि धा कार्यक्रम कन्त मे इत्यबाद  
 शासन कालनि विद्यालय वरिष्ठ शिक्षक  
 भी लोचन भू ।

★ चेना कि घर्मावो कहलनिहे जे हे  
आयोवन एहि अंसक पहिल बिष्टिह

1998

अयोधन निक से के सत्य पर कर पढ़त के हथर ओय भी जीवनात् के छनि के हलहि मे खबोली छौकि ड्योद मे सेमा खबोलीन्हि । किनु यहू वात के अन्धी-काख नहि आ सकेल मे हुनका छोकक सयोग भेटाबन्हि जकरा बल पर अयोधन सफल मे सफल । दहिठान ई सप्त आरि से मैथिल चेताना मुरक नलि अरु अण्डि सुसजावला मे पढ़ल अरु बकरा भक्तमहि के ओयो केलाक प्रयोग कर अण्डादि प्रयोगन कर अरु निताउत भगमा रहल-इ ।

एहि अवसर पर बिजय ली कइल से मैथिली भाषी क्षेत्र मागबि उपनिवेशादिक चिकार अरु सवनिबध् सत्य भइ । शतप्रतिशत सत्य अरु के मित्रतावल संस्कृत हिन्दी द्वारा शोणित होइत आनि रहल अरु भाषा दहि मे निहिते उर्दूक सहयोग सेरो रहलक । तँ आरु आर सेठी प्रयोक्ता के के मन्दिर-प्रबन्ध, स्कूल आ बरक माया एक मात्र मैथिली हो आ एहि लेख भनिहि के कुत्र मूल्य सुकाय प्रबन्ध हमरा लोकनि के तैयार रहक बाही ।

बदौबरी मैट्रिक परीक्षाक निमित्त  
निर्धारित मैथिली गद्य-पद्य संग्रहबला

प्रस्तावक प्रत्युद्गम प्रायः समस्त मैथिली  
भाषी यदि सं सहमत होता है तब  
विषय बोध होता है । परंतु प्रत्युद्गम त है अह

प्रस्ताव पारित केनहि टा सँ की समस्याक  
समाधान भ सकै ? सरकार मैथिलीक  
हित कायै नहि आते ओकरा पर इहि  
प्रस्तावक कुर पमव पड़वाक संभावना  
कइल नहि बा सकै । बी आशा करी ले  
इकर समस्याक लोक्रनि ले निश्चित मैथिली  
भाषी बियान छथि इनका लोक्रनिक भाषा

खुबनि आ ओयन इदि कोल स अपना के पराक राखि अउरुख छोकर लेल स्थान खानी करताह ? बोदेक काखक निर्मित मानिले हे हरो लोकनि हे नहि ह निराहक भुयसंभी बगवाय मिश्र सन मतनुकल सूरी हे अपन नान (हिलेनार) मे सवपन भुअरि त की छाव गिअक लोकनिक एहि उदस मे हे कुन करतय नहि ?

नर्गोपरि हयता लोकनिक विपदास  
अरु ते हकर लगायता अन्तःशिक्षक लोक-  
निक हास्य से छवि । ओ लोकनिक निश्चित  
एहि निमित्त प्रयास सेने गेच संपद  
आबोलेखन हस्ताक्षर से संकेत छथि । छान  
आ शिक्षक लोकनिक संगठन हरिपु  
उपक्षेत्र अरु सरकार से नगरा सकेब आ  
अपनाकअन नैतिक प्रविधिक बाट परिकार  
क सकेब, यातभाषा साधुसुनिक मर्गा  
बना सकेब ।

\* कृष्णकला, २७-१२-५५ । स्वामीय

निरामय पाति निःशब्दिक मे अर्वाङ्मय नव  
आवागम मेऽपि स्वर्णक गणित उमा मेढ  
लकर अथथयता कण्ठनि मेऽपि शब्दक यथापुत्र  
सेतानो नो हरिस्वन्द मिश्र 'मिथिलेन्दु' ।  
एहि अवसर पर मिथिलेन्दु जीक अनिरिक  
हवली नाचु साहेब चौधरी, रामचोकन  
ठाकुर योगेन्द्र ठाकुर ब्रह्मनारायण झा, चन्द्र  
किशोर मिश्र योगेहि कक्षा लोकनि संस्थाक  
पति अमन-अमन हृषीकेशना प्रकट कइलनि ।

1000

तथा उपयोग समायक भाषाविन देलिन ।  
मिन्त्राल मैत्रिकी उरगिण विकास लेल  
दरकर अ कार्य कराल भाषावक्ता पर  
नोर देल गेल । तंथा तिसुं संयोगक  
ओ देलनक मिथभागत यन्त्रिण लोकनिक  
प्रति भाषार म्पठ करै संस्थाक उद्योग  
पर प्रकाश देलिन तथा खुलुगो मैत्रिणी  
सेनाी लोकनिक अभिनियोग आवेदन  
कएलिन ।

तबाल ओ वेदनाह मिश्रक होयोककल  
मे हगो इद्रक कगिटीक निमलि कहल  
तेकर बाद मे सर्व रायकौ ठाकुट  
रामनारमन कुम, होय का, बन्ध कुमार  
का, लखन निभ वल्लय रहनाह ।

★ **મૈથિલી** એ પ્રાચી સંસ્કૃત નેવલ રહ્યું નાર' સંસ્કૃત નિર્માણ ત્રીકે નવિ અલ્પલકો છેક લાસળે મિથિલક મૈથિલીક બર્ધાન પિથિતિ સે । પરંવ સંસ્કૃત નિર્માણ અલ્પા અપા એ કુરૂ યાલ નવિ રલેછ મલ્લ-પૂર્વે રોહલ અપર કાલ' રૂદર કારણ છેક જો કલેત્રોકો સંસ્કૃત આવલ પાવિ રોહ પાનિ માટ વિહારલ' પાનિ થલા કલેત્રોકે અલિય

करत रहल। नर नागर भैयल लुं  
एहि कदवीक विपरीत अपन कार्य लुं अपन  
अस्तिवक मान भैयल समुदाय के कर-  
मोत तथा भैयल आन्दोलनक आगामी

वैसिल बयना बन्दाक दर :-

एक प्रति—

सलियाना' बाराह प्रति .  
पाण साळक (साइठ प्रति)

विज्ञापनदाता लोकनि सं-

‘देसिज बयना’ में अपन विज्ञापन दय लाय छथार । कम बर्ष मे सुन्दर  
ढांग सं अधिक प्रचारक एक मात्र साधन ।

सम्पन्नं कुरु

विज्ञापन व्यवस्थापक  
अरुणोदय प्रकाशन

अरुणोदय प्रकाशनक पहिल पुस्तकालि :-

महिला

[illegible]

दाम-चारि टाका मात्र  
द्वर

कह लोचन कविराय

तेल इलाकत उत्स विक तेल शक्ति केर खान  
तेलक बल डिबिया जख तेलहि उखय विमान  
तेलाहि उखय बिमान तेलबल मंत्रीक आपन  
तेँ जनसेवक राज तेल पर कएलक रासन  
कहे लोचन कविराय रुख भं कएल गेल-ए मेह  
बढला नै द चाउर गरीबक लेल छोए तेल

रोड, कलकत्ता-७०० ०२३ क लेऊ ओ मोरेस्वर भा द्वारा प्रकाशित तथा पयनिएर भाट्ट पिठर्, ३२-बी, हुदयवन  
देशाख छीट, कलकत्ता-५ मे मुद्रित । सम्पादक : श्री समार्दन भा









## पर्यायक उपाधि

कवि वृद्धमणि श्री कारीकान्त मिश्र मधुप—मधुन न विरपिन भेड़ ।  
 श्रो० सुरेन्द्र का 'सुमन'—बुढ़ारी में बिहारी ।  
 महाकवि यात्री—पैर में परचुरा बान्हल अड़ ।  
 कविवर करण—हम पारसे लेव ।  
 जो चन्द्रदाय मिश्र अथर—हम पीछे पैर डाल के ।  
 डा० ब्रह्मचारी बर्मा दणि पदुम—आब अगिला घाट ।  
 श्रो० राधा कृष्ण चौधरी—खावि खनदाक सुल ।  
 श्री जोब कान्त—अय बंढल पठाठ ।  
 " सोमदैव—कड़वा पर टैकस लगाय ।  
 " श्रीनिवास मिश्र—निबत वं कड़े खर, तकरे परि ।  
 " ईशराज—मानसरोवर कादिया जाबव ।  
 " तीसरा गुंजन—भागलपुर कइलस गुलजार ।  
 " जन चक्र—यक्ष भ्रमन ।  
 " ज्योत्स्न देवो—अलकुरे हमरी दोषी नहि ।  
 " भद्रा कपरा—मोर भेले हे पिया ।  
 " सुभाष चन्द यादव—छिलि के की दोखत ।  
 डा० श्रीराम (खनचपुर बाकी)—बिचि कइतो न सक ।  
 श्री महेन्द्र मल्लिया—कमलाकाक रचिया ।  
 " रामभरोस कापकिन्नर—शोम, फाक बिछादि ।  
 " धूमकेतु—नव प्यटक तेयारी से ।  
 " प्रदीप मैथिली पुत्र—बात बखस दिवो ।  
 " ब्रह्म बन्धु का बिनोद—खम सं जोट कबिता सोन हाकक ।  
 " रामानन्द रेणु—पलत भट्ठा अ ।  
 " कछिव—कायर करव लिगार ।  
 डा० तोरी मिश्र—हिनिया छेववे की ।  
 श्री मायातन्त्र मिश्र—माझक मूढ़ा ।  
 श्रीमती डीली रे—जाब फुरावत अछि ।  
 श्रीमती शेफालिका बर्मा—निहुरि गुरु आनि ।  
 श्रीमती शान्ति सुमन—विदरलपन्ताम ।  
 श्रीमती लक्ष्मिण खाम—नवनेसर कोमा ले योगा ।  
 श्रीमती प्रसाशा—हुले । मंत्री जो के यहाँ से बोल रही ह ।  
 डा० सुभर का—किरिब करिब सत लाइ ।  
 डा० बलकान्त मिश्र—मैथिली हमरे चारक करीमा की ।  
 डा० सुभाकान्त मिश्र—आब कइरा बने ल्हाकी ।  
 डा० शैलेन्द्र मोहन का—बसिमाइल कहिया कर ।  
 डा० रामदैव का—हुन्का काहे कोइ ।  
 डा० आनन्द मिश्र—भतहि विद्यापति ।  
 डा० आनन्द नाथ शर्मा गुमेरी गंजक 'सर' ।  
 डा० चोताराम का श्याम—सुतराकस पं डत ।  
 डा० जयमन्त मिश्र—हमरा सं अवादन कराव ।  
 श्री जयन कान्त का—पलन टोकू छिन ।  
 " श्रीकान्त ठाकुर ( सिखोल्कार )—आर केजो बाबल की ?  
 " हीरानन्द शाली—एक कका थार ।  
 श्रो० श्री हरिमोहन का—बन्ने तो सारखा निति बहर ।  
 श्री धारकी प्रसाद सिंह—अहुना कतो भेलेपर ।  
 " सुबोधु शेखर चौधरी—एकदन्त ।  
 " श्रीमानव का—हसर असाग हुनक कोल दोव ।  
 " गोकुलनाथ का—बिकापार ।  
 " प्रभावी श्री—एक व दाइ गोरे बहि-दोखर-नहेली हे ।  
 " राजमोहन का—हम गुमसुम तक छी ।  
 " ज्योत्स्न नाथ का ज्वाय—हमरा छेले खन खन ।  
 " गोविन्द का—केखन देखन अल करो ।  
 " तोरी कान्ठ चौधरी कान्त—पूपाजक जाहि ।  
 " लखानन्द सिंह का—हम को सय दिन बटुके रहब ?  
 " प्रभास कुमार चौधरी—कने सुला छियड ।  
 " मंगेश्वर का—भाय-भारती एकदमेव ।  
 " मोहन भारद्वाज—तनी पड़ो देखी, एखो ।  
 " कुलानन्द मिश्र—पे पंढरका राज मे ।  
 " रामानन्द राण—सुकर जे लजनव नहि गेलों ।  
 " परम नारायण का 'बिराँच'—खरपो सं खमीक्षा गइ की ।

डा० इन्द्रकान्त का—विद्यापतिक केश : कल्ला सखम विवेचन ।  
 डा० बासुकी नाथ का—खालू पुरक गोवाइ ।  
 श्री अविमुक्त—अनमसक थोक न्यापारी ।  
 " पूर्णन्द चौधरी—नैहन मुहुहुंषा नहि की हम ।  
 " विपुति बालन्द—छटा रहल घोष विडक ।  
 " गिरायाम का खरल—शिव मठ पर ।  
 " श्री विहंगम—पौजो आनर चो मे ।  
 " रामनाथ मिश्र—जात न पड़ो माधु की ।  
 " रवीन्द्र नाथ ठाकुर—खिलेमा मे काज करव दाइ ?  
 " महेन्द्र का—गावि सुताओल हे ।  
 " फखरुद्दमान हावसी—हम मिथिले मे रहवे ।  
 " अशावती + गोपेश—आय कहु मन केहन लगै ?  
 " वैवनायण का—गोसेपकदस कइ ।  
 डा० विनय शक्तिराम—खरातो प्रमाणपत्र बितरण केन्द्र ।  
 श्री बाबू साहेब चौधरी—जोड रोडिंग ।  
 आचार्य त्रिषो—हम मैथिल, हे हम मैथिल ।  
 डा० प्रबोध ना० सिंह—अन्तर भन्तक नामो दोषान ।  
 डा० श्रीराम शक्ति—झाड सोचय दिख ।  
 श्री सुकान्त सोम—राष्टसं तिलिहंगर इट्टर ( मूल ) ।  
 " वृद्धिनाथ मिश्र—बलम कलकषा पहुँच गये ।  
 " राम जोषन ठाकुर—हम की की करव ?  
 " अनिल ठाकुर—हम आत्म समर्पण नहि करव ?  
 " कुमाल—कइ है कोई न करे यही ध्यार ...  
 " राजनन्दन डाल हाव—सँतो, करमन की गतिनधारी ।  
 " निरखन काम—मोइ पसोछिन बरि ।  
 " बनार्दन का—'दिछिल बयला' वीर करव लह ।  
 " सुरील—बराही रल गैल—खेतक ब्रित्ता ।  
 " रामाधार मिश्र—बाइल की गावो कोगरव ।  
 " महेस्वर का—समय जाबव दिवो ।  
 " भाट नारायण का—कोइ साळी अइ ।  
 " श्रीकान्त मंडल—लडका पाग ।  
 " शरद चन्द्र मिश्र—गइयो हँ बरलो हँ ।  
 " श्रीराम का—पवित्र पावी ।  
 " शिवचन्द्र का—दमहुँ की ।  
 " हनुमन्त नारायण यादव—भागवतगीत इजोत ।  
 " राजेन्द्र प्रसाद यादव—हम किसी से कम नहो ।  
 " भागतल का 'बाबाइ'—खाल करिया खूबत ।  
 " बाळेश्वर राम—जेत बढ़ने किसान ।  
 " कबीर कान्त का—निबल के बल राम ।  
 " श्री हरिनाथ मिश्र—काशी से के के भाइ आ के पठकी ।  
 श्री अल्लाथ मिश्र—कुइहँ हँ ५५५ ।  
 " रामानन्द का—अय सन्तोषी मा ।  
 " कुमुद रंजन का—कनहो कइय हमह ।  
 " श्री० नागेन्द्र का—हम बोटंगर नहि कूटब ।  
 " श्री० रामाकान्त का—भसे सं बैसल की ।  
 " श्री कमलनाथ सिंह ठाकुर—बोरिक बूळ ।  
 " कपूरी ठाकुर—बनटा अमरा ।  
 " राज कुमार पूर—भागते खो ।  
 " गिान्तर ठाकुर—खम गुन गोबर भेळ ।  
 " रघुनाथ का—बरा खेलाख की ?  
 " निशाकर कवि—हंठ-वेयकीक अयाव ।

नोट : महासभा लोडन सं आनद जे जो लोकनि अवन उपाधि-पद श्रीमान मधुबानन्द श्री महराजक रंग-अधोर, कायालय सं यथा सिद्ध प्राप्त क छेबि । बाद साहित्यभार, नेता लोकनि के पछि छेय अगवि नहि भेटलनि-हुनका लोकनि सं आनद जे नवका बजट के खान मे रखैत हमरा लोकनिक अनुविधा के वृत्तिय धा व्यय प्रण नहि गमा अगिला साकक प्रतीक्षा करथि ।





# प्रज्ञान रेखा

वर्ग-२ संक-७ अंकीक, १६८२ मूल-पंचाश

## सम्पादकीय

### भीखू नहि अधिकार चाही

संवद मे फेर दूठ केप मैथिली के संविधानक आठम अनुच्छेद मे वर्गमित्र करवाक प्रश्न आयल। श्री योगेन्द्र झा बतबै लखबा सं ई प्रश्न रखलनि सरकारी पत्र ततबै लखबा सं दस्ता अखीकारि देखल आ फेर ततबै लखबा सं रागेन्द्र बाबूक संगहि समस्त मिथिलापत्रक संवद कोकनि छनि लेखनि। बिना खसम पैसा दखम।

योगेन्द्र बाबूक एहि तरहक प्रश्न-प्रस्ताव हरि सं पूरे राखि चुकल छथि। प्रस्ताव आनो सदस्य (इन्दिरा कर्मिष्ठ कोहि) राखि चुकल छथि। किन्तु हरि दिला मे भोगेन्द्र शर्मा आ हुनक शक हम सं आनू अछि—से हरि निषिद्ध।

भोगेन्द्र बाबूक अतिरिक्त आर के सदस्य मैथिलीक कर्ष संवद मे कहियोनाल करै छथि ठाह मे सर्वेजी रागेन्द्र प्रसाद सादर आ पिछवन्न भ्राता नाम लेल आ सकल। ओना खसम प्रश्नक समय प्राप्तप्राप्त मैथिली मे खसम लेबाक लेल दइपतिव ओ हुनुमेव प्राप्तप्राप्त आरक्षक सात विवरक नहि आ सकल के भन्तता संकल मे खसम लेखनि प्रत्यक्ष हिन्दी मे नहि। सादर जी हरि केर संस्थापक पात्र छनि। पिछवन्न आ भवन खसम मैथिली मे नहि राखि लखबा विरोध मे प्रश्न राखि कए दए उदाहरण प्रस्तुत केने छथि। पात्रक दुखक संग खसम पवि रहल अछि के खसम मैथिलीक संवधानिक मान्यताक प्रश्न उठैत छैक ए ई कोकनि दइपद नहि भ प्रवैत छथि—जेना पेशाब, ताम्रिनाद आ गंगालक संवद कोकनि मे देखल जाइ। खसम आ कुर्वी केसनादक कर्ष संवदक इतिहास मे पुरान भर परचव हिन्दा कोकनिक न्यायोचित माद बनल लखिना देल जाइत छनि तखन ई खसम चिचिमाओ मे खल छथि के अखरवक सात अखरी विव। एहि सं खस सं खस एतेवरि त अखरी रोलेक मे किछु कलक केर संवदक कार्यवाही कर रहितेक आ प्रवैतकक भवन हरि हिल बसेक। पात्रक के देह ई कोकनि प्रस्ताव राखि जू भ जाइत छथि तें हिनका कोकनिक नेत पर उदैह स्वाभाविक।

बराबरि सरकारक प्रश्न भिन्न, हमरा कोकनि दूठो बेर लिखि चुकल छी जे काबिही सरकार कायनात मिथिला-मैथिली विरोधी अछि, ओ एकर कस्यान नहि देखय चाहै। ओकर एहि बात मे कनिबो दम नहि छैक जे संविधान मे नहि रहनो खस भाषा के समान विकासक सुयोग सुनिबा देख जेतैक। ई निताव छथि कि—चाओ की विकास, ठकुरी विकास। हमरा लोकनि जनैत छी जे सरकार ओही भाषाक विकासक हेतु कर्ष करै जे संविधान मे छैक। संविधान मे नहि रहलाक कारणे मैथिली केन्द्रीय लोक सेवा आयोगक परीक्षा सं चारल अछि। केर सरकारक पोसा विचार सरकार बनल उरू के रोख राखमसा सोचन केने छल ए ओ स्पष्ट कहलै छल जे मैथिली के राबमासा हरि केर नहि बनाओल जा सकै छ जे ओ संविधान मे नहि अछि। ओना हमरा कोकनि जनैत छी जे नेवाही संविधान मे नहि रहितो गंगालक रोख राबमासा विव। हमरा कोकनि जनैत छी जे संविधानक बलना घना के बलौ पडिने विधान समक सदस्य ओ नमोरेतर सिंह आबाद के मैथिली मे खसम प्रश्न करबा सं रोखल गेल छथि आ शक मे ओ हुनुमेव नगरपाल यादवक संग संवद मे केहो बरने राजना मेकर। संविधान मे नहि रहलाक कारणे सं सरकारी कोनो लिखि मैथिली मे नहि छपैत अछि आ हरि राखि सं मैथिली पत्र-पत्रिका के संचित राखल जाइ। संविधानक कारणे काकाशरानी या दूरदखन सं मैथिली प्रोत्सायक प्रस्ताव नहि कहल जाइत आ हरि तारे मिथिलाक प्रतिभा के सुयोग सं यथा संयोग सं संचित कहल जाइत। सं परिणाम हरि सं फर्क नहि पडितेक, जेना कि देर-बेर सरकारी पत्र दूठो पैस करैत रहल-र, सं संविधानक हरि अनुच्छेदक प्रयोगने की छलैक ? बिबरक मे एकरा फादि केकल जाइत ?

भोगेन्द्राक लेख सं भानियो छी जे सरकार अपर खसमक पाठन फाट आ संविधान बहिर्मुख भाषाओ के ओ समस्त सुविधा देबैक जे संविधान सम्यक भाषा के लेख जाइत ए कि ई भीख देना नहि भैक ? सरकार के ई बानि केनाक बाहिरैक जे मैथिल बानि

अमना देह मे कहियो लखक बीत होन नये। अर्थात् अमरक बीत हो। हुनका मैथिली के हरि सं भारतक अमरीही खुशी सं नचेत-नचेत करैत—देश के नेता इन्दिरा गांधी। आओर एही के हुनकर पहिलक पुष्टि कलौ हलौ छुह उदि बायल। अमरक बीत होह हरि मे भला ककरा आबधि म सकैत छैक। परंच इन्दिरा गांधी ई नहि कहलनि जे ओ कोन अप विव ककर विवक मे हुनका दिखलौ छनि ? ओ हरो नहि कहलनि जे उभान बेरोकार ओकर अप मे हुनका दिखलौ छनि वा ओकर अप मे हुनका दिखलौ छनि वा नहि। हुनका कम व कम हलौ व खुजौ करक बीत छलनि जे 'रोबेकार दइर' जाता मे नामांकित बेरोबेकार समक समक बीत देखैक ना नहि। हल-पहर हुनका रचितो के उभान सम यही सं देखलौ हल गवाने अप करवाक अवसरक याचना करैत आ ओकरा समक सं नहि देखेक ना नहि—ओकरा समक अप के की ना रहल छैक ? मरिहक इन्दिरा गांधी एहि पर देखैक ? मरिहक अप नहि केकनि अमरका किछु सोचबाक अप नहि केकनि अमरका किछु देखर परिणाम हुनका सामने होइत।

पहिल परिणाम ए ई बरारत कि अमरक परिभाषा ओ बानि कहलनि। हुनका एकरा अन्वयक ललितनि कि अमरक रिषावाक आ ठेकराक दइ वंटा अमरक शम पोको टाका नहि होइत छैक खसम सं भारक भूवा हला गीतार हाथ राखि कर्नाइ—जे नखस सम बाबल... इन्दिरा गांधी एहि बातक अवगतिय के बताक नमोरेतर पक्षा पक्षि केकनि आ ओ हर गोट नख नारा देखनि—अमर मे आन कोनो बल नहि होइत परचव आत्ममिमान अवरो छैक। अमरीक संमान भीख कबयनि नहि अमरक क लेखै। गंगानाथ मिश्र तबा अन्य काबिही नेता कलौ व ओ चारि कोट मैथिल कल्याण के खान प्रवैतक मानैत हो त ई ओकर अर्थकर भूत किनेक।

मिथिलावासी के अपन अधिकार बाहिरैक। ई सरकार ओकरा भारतीय नामांकित अछि त अन्यनो नामांकित कलौ ओकरो समस्त अधिकार सेटक बाहिरैक। आ वं से नहि सेटत छैक ए नामांकित कलौ करैक छैक ओ बाध्य नहि अछि। बाह संविधान मे मैथिलीक चर्च नहि, बाह भारतीय पर मिथिलाक नाम नहि तकरा समान देवाक छैक ओ बाध्य नहि अछि आ ओ दिन दूर नहि जे मिथिलाक भाषा-भाषा मे सर्वजनिक स्थान पर हरि संविधान आ मानविक होनिबा साह करैत जायत। बाह संता पर ओकर अधिकार नहि छैक तकरा उदाहरि अपन स्वतंत्र भौता फाड़ैबाक छैक ओ खसत नेवार रहत—जे सरकारक दइर रहला रहलैक।

कोनो कलुषक सीमा होइत छैक। खसम-सकियोक सीमा छैक। पैठीव बलै सं मिथिलावासी संवैत आत्म-द पात्रक ई बाह बाहिया दूट जेतैक भारत सरकारक सेमता नहि छैक जे ओकरा बायल। मिथिलाक औद्योगिक-वैद्युतिक अवस्था के सरकार एक बेर नीक कलौ मन पडि छि आ समय रहिते उभारि बाय ताही मे सरकारक संग राष्ट्रीय कल्याण छैक। संगहि मिथिलाक नेता लोकनि के बेरो संवैत सं बेलाक चाहि-यनि। ओ हिन्दा छनि मैथिल के अप अधिकर दिन अप मे नहि राखि सकैत छथि। समय कलौ छैक देख नहि देखै। कानिक अति दिन सका के नहि पडैत।

जय मैथिली

## श्रमएव जयते

अमरक बीत होह हरि मे भला ककरा आबधि म सकैत छैक। परंच इन्दिरा गांधी ई नहि कहलनि जे ओ कोन अप विव ककर विवक मे हुनका दिखलौ छनि ? ओ हरो नहि कहलनि जे उभान बेरोकार ओकर अप मे हुनका दिखलौ छनि वा ओकर अप मे हुनका दिखलौ छनि वा नहि। हुनका कम व कम हलौ व खुजौ करक बीत छलनि जे 'रोबेकार दइर' जाता मे नामांकित बेरोबेकार समक समक बीत देखैक ना नहि। हल-पहर हुनका रचितो के उभान सम यही सं देखलौ हल गवाने अप करवाक अवसरक याचना करैत आ ओकरा समक सं नहि देखेक ना नहि—ओकरा समक अप के की ना रहल छैक ? मरिहक इन्दिरा गांधी एहि पर देखैक ? मरिहक अप नहि केकनि अमरका किछु सोचबाक अप नहि केकनि अमरका किछु देखर परिणाम हुनका सामने होइत।

पहिल परिणाम ए ई बरारत कि अमरक परिभाषा ओ बानि कहलनि। हुनका एकरा अन्वयक ललितनि कि अमरक रिषावाक आ ठेकराक दइ वंटा अमरक शम पोको टाका नहि होइत छैक खसम सं भारक भूवा हला गीतार हाथ राखि कर्नाइ—जे नखस सम बाबल... इन्दिरा गांधी एहि बातक अवगतिय के बताक नमोरेतर पक्षा पक्षि केकनि आ ओ हर गोट नख नारा देखनि—अमर मे आन कोनो बल नहि होइत परचव आत्ममिमान अवरो छैक। अमरीक संमान भीख कबयनि नहि अमरक क लेखै। गंगानाथ मिश्र तबा अन्य काबिही नेता कलौ व ओ चारि कोट मैथिल कल्याण के खान प्रवैतक मानैत हो त ई ओकर अर्थकर भूत किनेक।

मिथिलावासी के अपन अधिकार बाहिरैक। ई सरकार ओकरा भारतीय नामांकित अछि त अन्यनो नामांकित कलौ ओकरो समस्त अधिकार सेटक बाहिरैक। आ वं से नहि सेटत छैक ए नामांकित कलौ करैक छैक ओ बाध्य नहि अछि। बाह संविधान मे मैथिलीक चर्च नहि, बाह भारतीय पर मिथिलाक नाम नहि तकरा समान देवाक छैक ओ बाध्य नहि अछि आ ओ दिन दूर नहि जे मिथिलाक भाषा-भाषा मे सर्वजनिक स्थान पर हरि संविधान आ मानविक होनिबा साह करैत जायत। बाह संता पर ओकर अधिकार नहि छैक तकरा उदाहरि अपन स्वतंत्र भौता फाड़ैबाक छैक ओ खसत नेवार रहत—जे सरकारक दइर रहला रहलैक।

कोनो कलुषक सीमा होइत छैक। खसम-सकियोक सीमा छैक। पैठीव बलै सं मिथिलावासी संवैत आत्म-द पात्रक ई बाह बाहिया दूट जेतैक भारत सरकारक सेमता नहि छैक जे ओकरा बायल। मिथिलाक औद्योगिक-वैद्युतिक अवस्था के सरकार एक बेर नीक कलौ मन पडि छि आ समय रहिते उभारि बाय ताही मे सरकारक संग राष्ट्रीय कल्याण छैक। संगहि मिथिलाक नेता लोकनि के बेरो संवैत सं बेलाक चाहि-यनि। ओ हिन्दा छनि मैथिल के अप अधिकर दिन अप मे नहि राखि सकैत छथि। समय कलौ छैक देख नहि देखै। कानिक अति दिन सका के नहि पडैत।

जय मैथिली

जय मैथिली

चातुर्यं चूडामणिः (स्वर्ण)  
 स्वतः ओङ्कविशेषावितपदः  
 ओ षोडशरीराः कृषिः ॥  
 दक्षिणैकशेष ओ निम  
 ने कृषि—

वायव्ये कञ्ज किरित हेरये  
 शेखरभङ्गाः स्रष्टि  
 रामद्वयं विविध मावस्य सकञ्जा  
 सानन्दमादिशति ।  
 वायव्ये कपयञ्जना विवर्णे सट्टका  
 ओगठले सर्वदा  
 तावत्तु रक्ष्य कृतिना  
 तगवरे दीप्यताम् ॥  
 धृतं सशाम मे भो विवरे क  
 तस्योदह-सुखताप दहन  
 भावा निरलापुत्रे  
 रागः सर्वेणानुपमं पदवी  
 विवोत्तनापार्य्यः ।  
 यो बोरेश्वर वंश भोः कितिळो  
 दातावतनाश्रयम्,  
 तस्य भो कविशेखरस्य कविता  
 सविस्मयतावते ॥

मनुष्य कर्मोंक आदति रहनिहै ।  
ओनिहुना अन्धा नीति नाराक पुनि  
परपरा रहन-इ प्रभाव नीति कहने ऊनार  
—तो हुनरा एक दे, हम तोरा आभादी  
देनीक । यह कहि देतार अप-आदी से  
छ । लोक रक देनाक सेव तेनारी सेह ।  
अन्ततः आभादी मैलेक । किन्तु रक  
देना से भौके कपति रहि तेनेक आ हनरा  
ओकादि के आभादी मैलेक से अन्की  
आभादी के नि, फारण ओ ऊनार सं निह  
समझीना है मैलेक छ । हरी कारणे बिनु  
वचन दहिना नहि हम से कहल था हनरा

लोकनि के माउट वेटन क बरका नैक  
मेई गेगाह । आबोर बे हेतु माउट वेटन  
अवना रंग कुली आ अपन अथवना नहि  
क गेगाह आ तरा उपहार मे भारत के  
देदेने नेगाह, तँ एकर अथवना इस्टिम  
कुमार क जेत रहत आ मोहि मे बलन  
देस लेलेक व ओकरा संभव के रूप मे  
इस्टिम कवन देखल । ओहो अपन  
पवित्र एली लहर क हमरा जेकनि सम्व  
आपल उक ।

आबादीक बार ब्दाइ से तिलक  
आबादीक रुप कमरिड कश्चिकार अहि'  
संदेने छलह, तकर अर्थ आनुक नैतागण  
गलदा बनावोलनि । तँ इन्डिय गीरी ह-  
ताल आबोर उचित भोगक लेड आगब'  
उठमोनाइ पर पवनरी लगा देलनि । छल

‘अथ कानां पर लिङ्गवाक्यं घटं नहि कारकं  
‘रक्षामां’ वारो मे व हते कश्चिद सप्तमं ही  
मे भोकर लिङ्गि ककरो व मुमुक्षुक नहि  
उक्ते। अथ उपमा व परि देयक सेट  
भरनिहार विधान अथने भूले परि रक्क-ए।  
रक्षारहा राहत मे नं हदिता गात्री भयक  
मेवेव वाहीत ऊर्ध्व व हहि मे हुनकर कोनो  
वि नहि।

—अलिङ्ग टाङ्कट

( दोषानि पृष्ठं पञ्च वर )

इन्दिरा गांधी इतना बार भीलपनक संग भ्रमक विषय चालवनिहैं, सारी भीलपनक संग वीर सूखी केर विषय सेहो चारो छवि । अरी भीलपनक संग भो पठिका विन इरो कहवनि । 'भूमि' चाहे आर्यी भूमि अछि । कियक नै भ रहल हो किन्तु सारी आर्यी गरीब यदि भ रहल अछि ।' बुकि पढ़ल बेला भवना देखल गरीबक हुनका प्रतिकूल घटना भेटैत होनि । भवना इधर दीर्घ दिन सँ ओ इदि बात के दोहरा रहल छवि के बीच वल्लुक राम बटि रहल छ । एखन प्रकाशक मतल त ई किन नै सकारी-नेरकारी आफिछ से प्रत्येक आदमीक मरणाद भना बढि रहल छैक । अगर सीनकलह राम बटि रहल छैक तखन मरणाद अपेक्ष बढुवाइक गनित त बेरो ज्योतिषीक क सकत छवि ।

भवना भ सकैत छै कीनो ? भोरो

नौबीन टुट्टो इन्दोणी के मन मे ये बात  
 भायल होनि जे पहिलका समय नापा  
 पुताम म गैल, ते नीमार देख के हक नय  
 नौबयवक लगला छेक । हुनुका भरिलख  
 इशो मेल होनि जे बार हंखान मे पहिले  
 लोक अम करे सं हिक्किबाइत नहि छल,  
 तते आइ-मालि ताव खेसाइत देवार  
 पहिनि रहल-ह । जेना कि बंक कर्मचारी,  
 कोयला उद्योगक रजिष्ट्रमंचारी । हुनुका  
 इच्छने हुनाछल होनि जे रेल के देरी सं  
 लवनाइ अमक प्रति लज्जाभाक्क कारण  
 ते मो नास देलनि किहे रष्ट्रीय-  
 छुट हंखानक कर्मचारी छलनि आबो  
 जरो सब के अम करे जे खेबाक नहि  
 चारी । किहक ते भानता भीत अमे के  
 होत छेक ।

अथातः भावः सत्यं नहि विषयीयम् ।  
सत्यं सर्वेषां चीजाम् भिन्नम् । सत्यं  
निरुक्तं इति वातः किं यदि सत्यं कोकगंधी-  
मृतासां प्रमाणं कथं तन्नेति भूतवाचका मे  
भावे वेदो परीक्षितः प्राप्तः करतावः । वेदो-  
क्तान्नर्भोऽनुमाने धर्माभावश्चाप्युक्तः  
आद्ये गच्छति दिशः से देश उक्तः



## नारी, विधवा काटर आ हमर समाज

## अजगुत-अनटोटल

"आ, विधवाक दुख-तीन खेक बाट बाटम विधवा भ' गेलीह। कादम भगति कादम विधवा छि आ चलन बहि बगान-दशमवीया विधवा के देखेत छी त' मोन होइत अछि जे आनि नैलि बी बेर आ पुरान मे आ मरुथुति मे आ बहि देशमे जत' कादम वन लीक शरीरके बेवस्था आनिमे भयम क' देख बाइत अछि। ओहि दिन कादम मेट कर आरकिलिडीर त' कनौडीवाकीक नमनात छिड़के केहन विवेकसँ कोरामे छुअम उगलि छउबिन, कतेक दुखार करेत रहनि छीह। ओनिमे केन मातुल छउनि..." ओलि निहुइमोने सोकन मातुल छउनि। ओलि निहुइमोने रहिब आंग-आंगके उकमोने, नहुइ-नहुइ देव करेत कादम छउनवीक दवावाक अ'दमे वनिदा बाइत छीह—बीननक भद्वार आकास मे भविष्यत बाइत लह-शरक उकर देव जन कादम।

"बेता विन रंजन, लिन माति बहान-ओल आरवीक-सूतिन कहुक होवा..." रोमक मारक, दुखानक देह, कोरतत, पवन-पवन अछि। ओलिनि, मरु-मरुमि दहि, मैम, परम मैम दया आ तेनो हमार टा चेकरी जगत आ तेनो हमार टा पाठल न्यास बीननक वरि-प्रदक्षिण होइत।

"आर निमला दीदी येनका छि, काहि कादम देही, पाय कपूर दार देही: कतेक करै दार देही? आ कोन कब सृष्टि नहि होइत? जे नेनका-लतानक रखा करिब। जम विमोचन होइत, नेनकाक शरीर त' बालावनक कायसक अन्धाल/अन्धक, जम दुपटे होइत, नेनका पुत्रीक देह-राज-ओल भरवका..."

राज कमल चौबरीक हक कवा "दुख नेनका" त' केन ई तौन अवतलण छि। बहि कवाक तीन टाजक छउलीक नेन तीन टा अवतलण मे हकटो बाट छेक, दस गोट वीका छेक। ई वीका हमार जग वल्लक वीका छि। बहि वीकाक कोनो मानवीय समाधान नहि अछि। जम वीकाक हक छेक, जम बहि वीकाक कोनो हक तबनाक कोनो प्रभाव भारयो नहि भऽ रहत अछि।

निमिका आर सङ्कट - दुखमायक अछि। दरिद्रता छेक। अछिछा छेक। दुरीति छेक। जत' आ चायिक कर्मकाजक उल्ल अहलमे नैभारत जतना छेक। दक्षिण शोचन होइत छेक।

दुखमे दक्षिण छि मेरिब नारी। पिडा नहि बन नहि। बापक जन मे व्यापारिक हक नहि। अपन रोक्कवार कर वाक बलि नहि। नोकरि आ रोक्कवाररी भराक कोनो सामाजिक परम्परा नहि। मेरिब नारीक कतेक शोषण आ दमन भऽ रहत अछि। तकर बोका संसारक जेनी भागने, कोनो कालमे नहि भेटत।

संयुक्त राष्ट्रसंघक मानवाधिकार समिति बेरेन-बेरेन शोषण रिज - सिक्क-कनगतक आन बाहुल करेत अछि, जहिसे भवार्थ आ अमानवीय ई शोषण छि। जुरा संयुक्त राष्ट्रसंघो दूरर आन नहि देत, तकर कारण छेक जे मनु-मनारक पिडाका मे कबि कऽ गलाइक मेरिब नारी जनक अतिदुख मे जोडिबे कारणेन बाइत अछि। जत'क दमन-रेलामे राबनीति, दवावावाल्, अर्थशास्त्र जोडिबामे मे होइत अछि।

जोक करैत अछि जे अहाँ ओकनि समाजक नेता छी। अहाँ ओकनिककसमे नद गलि अछि। समाज के सुधारक भवत्वा-मयापर हमरा कर। विधवा-विधवा छेक समाज के श्रेष्ठत कर।

हम करैत छियेक लख कुमारी कन्याक विवाहमे वरपक्ष हमार-बाब मरेत छेक, त' विधवाक विवाहमे कतल कतेक मरतक ?

कुमारी कन्याक रूप गुल-विधाक कोनो मूल लखन बहि बगान मे नहि छेक, त' विधवाक मूल के दमन ? त' विधवा-विवाहक सांस्कृतिक-सामाजिक प्रभावो कय-कापर कोनो काम होवनाक संभावना नहि अछि। कोनो नव रीति कलास हमार दुकरे समग्र नहि लगेत अछि।

जोक करैत अछि जे समाज-मया माकास बागि नेन। कन्या जम अमानि सेन बा रहत अछि। बहि व्यवस्था कोनो आ कचहु भयत छेक को नहि ?

हमरा दुकरे एखन आ बहि विधवा मे ई प्रभाव बहुत आ दूरर भयत एखन समग्र नहि अछि।

काटर-मया बहि रूप मे एखन प्रक-लि अछि, ओकर दनिशत नम छेक। पति, आर त' तीर-काकीर कतेक पूर्व जातिक मूल पुकाराओल बाइत छेक। ओ दक्षिणार वरगले नहि छेक, कन्याक मूल छेक। आ जे ओ करतल छेक आ जे कन्यास्य छेक, ओ जातिक मूल छेक। परि मे नगरीक कानार भेनो संकेत छेक आ नगरी भऽ वल्ल छेक। त' एक प्रकार ई जातिगत भेदताक मूलोक्तन आ लोकार छेक। ई हटु आ मयाव नहि छेक। ई समाजक अभिभाव नहि छेक।

विधाक मया-महार, युरोपीय विधाक आरक होयता त' हम आहुक व्यवस्था-प्रभाव के जोडेते छी।

बाबुरि कर काटर-इलीनार नहि होइत छल, नोकरीक कोनो योग्यता-अमता हुनका मे नहि रीत छलनि, तथिया बहि जोक बाति त' कुल त' भेद वल्ल बाइत छल। आहुक लोक जन त', जन कमलाक लमता त', पर त' जेव दमक बाइत अछि।

बलिया बहि जोक आर बाबुरि युरोपीय कुछिछा त' पीडित नहि छल, तथिया बहि

• बेता कि जता बहकत, निमिकाजक जंगि-संगुण विधाक-प्रदेश ( विहार ) मे प्राथमिक कवाक छल। लोकनिक शीव शोरीक छेक हाराकार मयक अछि। मार्च मास बीति नेलेक परब शोरीक अछी पवा नहि छेक। विहार मे बहि लखक पोषी निवार देव दूक अनेरेखन ऊपर आ ओकरे द्वारा दूरर वितरणो करत बाइत। ई संस्था विहार सरकारक निजी संस्था छि। ओना बहि संस्थाक छेक ई कुल नम यजना नी। प्राय प्रति वल्ल बहिता होइत छेक। विधवा बहि जेव ई छेक जे मेरिजोक संगरि आनो भाषाक शोरी उरकत नहि छेक अखन कि आन-बेर आन-आन भाषाक पोषी त समय पर मेरिजोक छेक एखन मेरिजो-पोषी अमा-वित्तार त' पडिने नहि एखनो आगत छल। म उखल मेरिजोक छाप-चित्तक मुख्यमंत्री पर ने नही मेरिजो विरोधक आरोप आगनि आ त' 'लोक चलि कथनाम नमः।

ओना निवार मे छाप लोकनिक छेक ई दमनक समस्या नहि छेक, दमन कतेको संयस्था छेक। उख संयस्थानक शोरी वम छुइत शोरीक दोकन। त' विधवा शीव नीनेर। मुरा ई पोषी ओकरा तबनहि नोकरदार देत छेक अखन कि ओ ओइ विषय नोटक पोषी ओने छेक विचार हो। नोटक पोषी त एखने रीक जे ओकर

अवस्था-प्रभाव एतेक भयावह नहि छेक छेक। ओना-बेता हमार लोकनिक युवक नोकरि वना विधा पनत बगान, लोक वन अनेरेखन वना पर आ नोकरि एतेक बगान, युवक दाम बहुत अप्पनि। आहुक प्रभाव विधा आ विधाक पते नोकरि तबनाक ई दोह व्यवस्था के बही-हक अछि, बहा रहत अछि आ आहुओ बहाओत। लोक विधाक प्रति सांकेतिक-साधना सेत अछि। लोक नोकरि मे भार-कमायवाक एक प्रति सांकेतिक सेत अछि। त' लोक व्यवस्था आ सर-मूलक प्रति विचारनि जेव आरक सेत बा रहत अछि। त' हम देखेत छी जे व्यवस्था प्रभाव वरताक स्थान पर बनेत अछि।

जोक करैत अछि जे विधा दल्लक, बागल बहल, लोक व्यवस्थाक मरुता, अमानवीयता आ अनुपदेयता के दमन आ काटर-मया समाज भऽ बायत। हम एकर उमदा देखेत छी, विधा बहलक वर वर काटर-प्रभाव बनेत अछि, बटत नहि अछि।

हम आहुक प्रबलित विधा-प्रवाली के, युरोपीय विधा प्रवाली के कुछिछा करत अछि, जे हम बागि कऽ करत अछि। आहुक विधा नोकरो कऽ कल लोक जतना रहल अछि, विवेकशील मनुष्यक निमीन नहि कऽ रहत अछि। प्रबलित विधा त' लोक वन-जोखर नेन

एनो पति छुट नहि रीत छेक आने टेकलक वग कुल समक। दाम टेकलक त' ठामि दोर-देवर रीत छेक। परब से नहि कोनो जे देव दोकानदार देवद दू देवक नहि त' बाप मा ओकरे कोनहिटा पडेत छेक। अखन के ओइ दू कन्याक संग खुबसा जिन्दा समक भौटि-भौटि रीत छेक आ रीत छेक नोट विधानिहार अपनिहारक। आ बहि वगठित परबनक विचार कतेक मर छापक अभि-भावक वम। सरकार वम जेत बह-पारब ओकरा छेक जेत छ।

मेरिजोक मायम त' बहनिहार लवा मेरिजो बहनिहार जगत छेक त' ओकरो समस्या ई छेक जे अखन कि ओही वर्गक आन भाषाक शोरीक दाम दू-तीन टाका रीत छेक एकर दाम मेरिजो शोरीक दाम ठामि दोर रीत छेक आ से शोषक एखन बाइत छेक लोक मेरिजो नहि पडि हिन्दी वा अन्य भाषा पडय।

जेकल दूक निम्नो आ निवार कर-कारक ई सनिमित्त पडयन जत' त' बहि लखक आ पता जे बहियाबहि लल्ल रहत। अकरक मत जे जे तेनो छाप अभिभावक लोकनिक कान जत देत होइत जनि जे बहि तेनो जत परबनक विरोध कता। विधाक प्रभावक एक पेंव (रोषाक पुठ पोषर)"

अछि। येनेक पार नहि, बहली पारक लोक नोकरि रेखा कवा वम मे हुरि-हुरि मरत छेक, ई ओमे बह विधाक दमन करत अछि। काटरक लोक आ नोकरो द्वारा जेव-अनेरेखन त' अखि कवल बाय वना वनक लोक के हम फाक-फाक नहि हुकत छी।

बाबुरि ई विधा विवाली, ओमो, समाज-नेतना त' विधीन लोकक निमीन करत रीत, लखरि ई विधा कुछिछा रहने करत। सुछिछा ओ बहि के बहि के वैवाहिक साम-दानिक विधा त' उर उर कऽ ओकरा सामाजिक दमन-भावक विधा त' उर, बहियानी आ भेद नानय।

निमिका मे काटर-पटोके मूल छेक, बहद-मरीक लोक होइत छेक, कुमारी कन्याक कोनो लोक नहि छे। कऽ कुमारी कन्याक लोक नहि छेक, कऽ विधाक ली आ कापारन लीक की लोक होइत ?

निमिकाक ली अखन मनुष्यक नहि छि। कन्यादान अनेरेखन केवल केवल अछि जे नारो दान मे देवाक वल्ल छि। जतानी लोक नहि छि। जतानी वान, चाटर, गाछ आ दूकरी-दकरी बहो दान देव योग्य वल्ल वल्ल योः। विवेका जेतु' बहो हक गोट वल्ल, दस गोट "कनोबोटी भोष।

• जौकानन



## लालबुभुक्षक चिट्ठी

श्रीमान् सुभाद्रक जी महोदय

प्रिय मैत्रिणी।

आया हाटमुक्ति ई जे अमरक पत्रिका कक पगुआ अंक मे अपना केत कुनू उपाधि चीनत नहि देखि कबिडुमरि कट लाल बुभुक्षक के भेटनि। परन्तु करदे की करिदास, बस कपड़े बाल छनि त सारा के दोहे की ? सम्राटक जी वं सच पुछी त कम वं कम यदि सदन मे लाल बुभुक्षक शत प्रतिशत मैकिल छपि। तें वं कुनू प्राप्ती कहु नहि भेटैत छनि त अपन भाग्य के दोष दूय सटुट भ भारत छपि। अना ई गप त अहूँ के बुझैत हएत जे कलन लोक के बाब पढ़ैत छैक त अंको वं टेढक लोगर कए काळ बुभुक्षक द्या दोहैर किनु जरा कि बाब भ गेलै त फेर बेटी बेटी रोग। तें ते आदरि केदरो काब उदम अतो रोहक, काळबुभुक्षक के लोक नोतो हकार देवाक समता नहि बुझेह। आ एक छवि साळ बुभुक्षक, जे किनु हकारि सभाम उपस्थित। से कहे छी सम्राटक जी, भनहि मन पढ़ि गेह, गत फरती से पुनिबा से बाब विद्यापति क जहाँ गेह धूप-चामूं वं मनमोहन गेह छल। भरि कवार मे कतरगा नोत छलक। बारल छनार त काळबुभुक्षक। सुदा छल बुभुक्षक त तेहो, भनकी पतिने उपस्थित। अना गाम स जेना मे कने विभव भ गेलनि आ तें ओ दोहर दिन गहु चि छन्या। सुद्वज जेना कि कपरी छेक— बाबू देवाक कवार सगि, तेह परि हुनको संग सेठनि। जादे देखत छवि जे गंगार मैकिल बुभुक्षक—गुर्व मंत्री सा० भी कलाय मिश्र गरबि रहल छवि। ते कहैत छी देखिते देरी त लाल बुभुक्षक के कृपाक प्रदि टिकावन चढ़ि गेलनि। पडव करता की ? छहारी त पितु नेतले।

सम्राटक जी, अहाँ एक पद मे लिखैत छी जे वादवृष करण स्मरण शक्ति कबवार पढ़ि गेह। यदि निमित्त हम निरालिखी धीरान कने कपार देने रही। वं अपने से करैत हेत त निचिते प्रमाण शक्ति बढल होएत आ तें प्रकसे स्मरण होएत जे पटनाक जेतनाहीन सति-तिक संव स जगसाथ बाबू बाबल कलाद जे ओ मैथिलीक हेतु किनुभोटा नहि करताह। परन्तु एहिदाम ओ फेर सपट प्राप्ता मे कहनि जे मैथिलीक संवेधानिक मान्यता दिवना केल बिदार सरकार कचन-वद आह। ओ आरो कहनि जे प्रवान मंत्री आ एह मंत्री मे कि आशयन देने छनि जे संविधान संशोधनक समय यदि पर गम्भीरता पूर्वक विचार कएल जावत।

सम्राटक जी अहाँ के भनहि कनाब जगसाथ बाँकी पतिवर्तसर भयसब लागय परन्तु कानय पितकर दिनानाथ

जे लाल बुभुक्षक के कनिपो छगुता, लाल होएत। अखल से लाल बुभुक्षक के नीक कही बुभुक्ष छनि जे भारतीय देता लोकनि के नाह बढल से ओतबो सम्य नहि संगेत छनि कते सम्यो जिनमा कनयिका के कपड़ा बढल से। तें वं मुसलमानी महोदय कथनी मे परिवर्तन सेने केकनि त यदि मे अवरखक गुं धारण करय छैक ? आब गप रहल प्रवान मंत्री आ एह मंत्रीक भाषाजनक। वं अपने सुखवार, इहेत हएत त नीक कही बुभुक्ष हएत जे बिबुध दिन पढ़ि साम्यवादी दूकड देता ओ भोगेद भा जीक प्रत्येक कृपाव से यशस्वी साफि कहे रहथि जे मैथिली के संविधान मे लगन नहि देख जेतैक। कदा ई जे संविधानक छोटोवन कद मन्त्रिय होए छ। अना अहूँ के बुभुक्ष हएत के अपना जेगले सुझार—उदित-वृक्षेव यदि मे संशोधन करैत रहद-ह। आ माया बिबुध छोट-छोट सचोदक निर्माण करिते रहद-ह।

कदाकि प्रवान मंत्रीक बात आह त लिनका त हमरा स नीक सुका अहाँ चित्तेत होएनि, कारण १९७० मे जे प्रतिनिधि मंडल हुनका स भेट केने छल तार मे अपने रहने करी। ह फेक छि-परि अवस्थे आह जे तबान प्रतिनिधि दूक संग अद्वय बुद्धि, गप, कपार भा प्रवान मंत्री 'व्यवस्थिति पूर्वक' विचार कृपाव आखबार देने कहथिनि। यदि लेख कलिब साबूक अयुक्तले स्वात धूयकारी बगबाब प्रत्येक एकान्ती मे ओ 'गम्भीरता पूर्वक' विचार करवाक बात कलबीर-ह।

त से करी छी सम्यक जी, स्थिति त अहूँ वं आपन सुकाएक तहिए रहल हएत। परन्तु आब बुभुक्षक के दुख यदि श्रवक सेकनि जे कनाब जगसाथ बाँकी उपरोक्त घोषणा पर ओहिना कपरी गद-गद उठल जना बुभुक्षती मे रूप गदगद दाबय आ बिबरे-बिबरे वं खाओ ओकरे काबाब अनाह पढ़ैत छैक। अदा अहाँ के हरो दूकड के ओह वं दलिदा नहिजेटा पढ़ाएत छैक। ते त कहु भला, पुनिदा जे कि मिथिलाक एक महत्वपूर्ण स्थान अह, मैथिलक गद अह ताह ठामक कलिब ते मैथिली-प्रतिष्ठाक पढ़ाए एखन बरि नहि छैक। हमरा त हरियो बुभुक्षो ने छल ई बात। आ बहुतेक मैथिली भाषी के माक काय पढ़जनिहैं। आरो हठीक बात त ई सेठ जे खा साहेब पुनिबा मे विद्या-पतिक मंदिरक निर्माण छैल एक काब थाका देवाक भाषाजन देखनिहैं। अहाँ के बुभुक्षे हएत जे विद्यापतिक दीपसर विवकी मे सन्निपाति वं नहुवा कानब आरम्भ क देख। सम्राटक जी बलिहारी कही मैथिलक विवेक के जे मान रहन मातृवाची सम के बार्मापले नहि करैछ, तकर पूजा-चनानो करैछ आ ओकर ककम पर

## कविता

## मीताक नाम

लिखबा ते बेसे छी

रंगी अवतरण-कथा

लिखने चलि जाइत छी

कोशी-प्रांगणक पथथा

स्वाभाविक

छन्द-संभ

अविश्यापित कौशिकिक

आतनाद कोलाहल

मैथिली नृत्यक संग

अन्दन चिरकालिक थिक

संभय शमशान मे

किन्तु नहि स्तोत्र-पाठ

घटा ध्वनि

शंखनाद

रुक्मिणी, सांसहीन

कंकालक द्वेष

हमर मातृभूमि *अभिषेक*

'विश्रुता सुवनत्रयम्'

सिद्धिमान ई—

बिसरल कि जाइत अछि

माने छी सीत

सत्य सखिपहुं आरुप तोहर

नैति गेल हमर, असय

लिखि नहि सकै छी आब

व्यर्थ करै छी प्रलाप

संकुचित विचार बोध रहने चलि जाइत अछि

किन्तु

हम बाध्य छी

जखय त चाहै छी

आयक आलोक नव

निराशाक बिहरो

मिमजोने चलि जाइत अछि

लिखबा ते बेसे छी

कथा आजादी के

व्याप ब्रैवादी के

*अभिषेक* सिद्धिमान चलि जाइत अछि।

—राम सोहन ठाकुर

बपहीयो पीछे। मतल मे मिथिला मे एक बड़ प्रबलित खरी नहि छैक—बकऽक प्रयासा वना—हे प्रसिद्ध मैथिली तारी प्रयासा से छपि। आ फल जे की हएत से त भरी सन दुभुक्त लोक स जुगल नहि हवाक चारी।

ह त कहैत जे छहूँ, ओहीदाम वं छिलोक पचात काळ बुभुक्षर भाव-जानि व्यापि वं प्रल सय ओकभन जेने छपि आ ते अहाँक आदेशानुसार रचना पठेवा मे अवयव छवि। भरोख राब जे सत्य सेवा पर रचना अखे पठेवाह।

अलेक पत्राचर नहि पठेगक प्रबल आकांक्षी श्रीमान् बाब बुभुक्षर उभयुक्त मासवाची \*







## देविल बयना

पाठकीय परिवारक (सिलियना) सदस्य

१६. श्री कर्मायाल भा.	कलिकाता	२७. " स्वाम नारायण भा.	बर्गपुर
१७. " मोहित मिश्र	"	२८. " कुम बिहारी भा.	खिड़वा
१८. " राबबन्द्र भा.	"	२९. " तारा नन्द भा.	नरुआर
१९. " विपुलान्त भा.	"	३०. " दुर्गानन्द राय	इन्दा
२०. " देव कुमार भा.	"	३१. " उपमान्त भा.	इन्दा
२१. " कुम कान्त चौबरी	"	३२. " गीतानन्द चौबरी उमानगर, कठ०	"
२२. " गोपी कुम भा.	"	३३. " देव भा.	"
२३. " विनाय राय	"	३४. " रामाश्रय खत्री नवकी दिछी	"
२४. " आदिल नाथ भा.	"	३५. श्री देव भा.	हिन्द मोटर
२५. " रामनाथ राय	"	३७. स्वामा भगवतो 'पुलकात्म, मछीभा,	देविया
६. " बंशीधर भा.	"		

## विशेष-सूचना

मेथिली दुकि मोचा, कलकाता एक आवश्यक वेधार आरामो १८ अप्रैल १९८२ के मेथिला ४-३० सं उपानगर स्टेशन से होयत। मोचाक प्रत्येक सदस्य तथा सहयोगी लोकनि सं हरि वेधार मे उपस्थित होनाक अनुरोध करल जायत।

हरि वेधार मे भागद-खर्चक हिसाब देहो प्रस्तुत करल जायत तँ प्रत्येक सदस्य सं निवेदन के हुनका पास के रसीद बरी व्यवस्था/व्यवहृत होनि तथा बन्दाक पार होनि से ३१ मार्च १९८२ परि संयोगक टग (देविल बयना कार्यवाही) भवषा भी बनायेन भा, उपानगर टग बना के देब। हरि खदम मे प्रत्येक सदस्य के १५ मार्च १९८२ क पोस्ट कार्ड सेहो लिखल जा चुकल छनि। कुन कारणवस बिना १५ मार्च सेठक होनि से ११ अप्रैल १९८२ परि रसीद बरी तथा बन्दाक पार बना के सकल छनि।

कुन कारण वश जँ किनको ठक तिथिपरि रसीद बरी वा पार बना करना मे असुविधा होनि आओर। अथवा वेधार मे उपस्थित होइना मे असुविधा होनि तँ ओ तकर पूर्व सूचना देलिय बयना कार्यवाही मे लिखित रूप मे पठाबनि से अनुरोध। वेधार मे विचारणीय विषय रहत -

१. भागद-खर्चक हिसाब
२. अगिला कार्य-क्रम निर्धारित तथा
३. अन्यथा

दिनांक :

रामछोपन ठाकुर  
संयोजक

देविल बयना' बन्दाक दर :-

- १ प्रति ५०) पदवा
- १ बर्षक ५) टाक
- ५ बर्षक २०) टाका

पार पदवाक पता -

श्री कर्मायन भा,  
१७/६, उपा नगर,  
कलकता-७०००६८

विज्ञापन दाता लोकनि सं :-

देविल बयना मे अगत विज्ञापन द्य लाभ छटाह। कम खर्च मे सुन्दर ढंग सं अधिक प्रचार एक मात्र साधन।

सम्पर्क करू  
विज्ञापन व्यवस्थापक  
अरुणोदय प्रकाशन,

अरुणोदय प्रकाशन, ३३/५, देवदार रहमान रोड, कलकता-७०००३३ के लेख श्री महेन्द्र भा द्वारा प्रकाशित तथा प्रामिपर भाट विटल, ३२-बी, बुन्दबन्द  
वेधाल ह्रीट, कलकता-५ मे प्रकाशित। सम्पादक : श्री बनार्दन झा

## बाल गीत

## झिझिर कोना

झिझिर क'ना झिझिर कोना, ज्ञान क'ना जात  
मिथिला के आखन मे समतारि सेलात -  
उत्तर हिमालय आ दक्षिण मे रंगा छइ  
कोशी आ गंडक से हेलू नहाइ।

उत्तर आ दक्षिण के नेद विस्तार  
मिथिला के सन्तति छी मैथिल कहाइ  
कन्हा स कान्हू जोड़ि जाति-गति आड़ि तोड़ि  
मिथिला के नाटि उठा साथ सं लगाइ ॥

मातृभूमि, मातृभाषा महान  
कस्तनी ने होमय एकर अपमान  
मायक जे बोल छुनि बाले ने लाज करी  
अपनी बाजू आ अनको सिखाइ ॥

राष्ट्र नमस्कार काठी के कान्हू  
चीन्तल ने जाएत के अप्पन बा आन  
मैंत जखन होइ वा जाइए लौ छी  
'जय मैथिली' केर आदति लगाइ ॥

- रामलोचन ठाकुर

• ई गीत एहि सं पहिनेहु एकठाम प्रकाशित भेल छल। 'देविल  
बयना' क पाठक लेल पुनः प्रकाशित कएल जाइत।

## 'देविल बयना' क पाठकक लेल विशेष उपहार

राम लोचन ठाकुरक तीन गीत बहुचर्चित पोथी-

१. इतिहासहंता (कविता संग्रह)
२. वेताल कथा (हास्य-व्यंग्य रचना)
३. प्रतिध्वनि (विदेशी कविताक मैथिली रूपान्तर)

बाबू टाकाड पोथी मात्र आठ टाका मे।

सिलियना सदस्यक हेतु मात्र सात टाका मे।

बी० पी० खर्च अविरक।

इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करिय-

अरुणोदय प्रकाशन

३३/५, डा० देवदार रहमान रोड,  
कलकता-७०००३३

## कह लोचन कबिराय

सरकारी फरमान थिक श्रमिक मजदूरक नाम  
ई उत्पादन वर्ग थिक सुनू सोलि सम कान  
सुनू सोलि सम कान न विसरू एसमा नासा  
मूह जाबि करू काज, न हो अधिकार-तमासा  
कह लोचन कबिराय श्रमिक काजक सरकारी  
लामक मालिक मात्र घोषणा थिक अधिकारी



# प्रमिन्न रसना

वर्ग-२ अङ्क-८

मङ, १९८२

सूचना-पत्रात पाह

## सम्पादकीय

### मैथिली आन्दोलन आ माटि-पानिक प्रश्न

मैथिली नाम का कहर बरि के किछु देह-द से प्रकति सं देवत । यथार्थ एहि आन्दोलन उपरक के नकार नहि का सकैछ, लकानि इतकाबरि मानहि पड़त के आइ मूख मारलक लनाधानर्य एहि आन्दोलनक भीमबाद देह छळ, से एकराँ ओहिना पड़ल अह । चारि ओटि मिथिलावासी मैथिलक संग स्वाधीनता प्राप्तिक पैतीश बल परवातो भारत सरकार दोख सारक तमाकि सन व्यवहार कए रहल अह । ओकर भाषा-संस्कृति मात्र अवहेलैत नहि छैक, अपित ओकर विनाशक लेल नामा ताहूँ दृष्यत्र रचल बाहर रहल ए, आरत-कानत बलाबोल वादत रहल-ह । ओकर आर्थिक निष्कासक कथा त कत रह्यो, उमटे एहि पैतीश बल मे लमे-कमे ओकर रीढ़ तोड़ि अंगर कया देल गेलैर । अह मिथिला देहक स्थिति इतु सारकवादी-युवावादी देशक उपनिवेशी सं अपच्छ छैक । कबक प्रगल्भ नहि जे एहि स्थिति सं उपलब्ध एक मात्र बय छैक संवर्ध, वनतर्ध रहल-सदी संवर्ध ।

आब प्रश्न उठैछ जे ई संवर्ध कत के ? लोक उपर छैक—मिथिलक जनता । इतु सँ नीक आ सटीक जनता ओही जाति लोक लोक होइत अह । तहिना सत्यवाक समाधान सं क्षेत्र विकास सं लामानितो ओहीनामक लोक होइत अह । कहरिया शोषक-शासक क त एही मे काम छैक जे ओ क्षेत्र विशेष पिछड़ल रहै, ओइ ठामक लोक पिछड़ल रहै आ एकरा लोकनिक शोषण अन्तर्ध रूपे खत रहैक । आ एहीनाम काम लेख संवर्ध—शोषक आ शोषक बीच संघर्ष, मुक्ति संघर्ष । मैथिली आन्दोलन उपर मुक्ति संघर्ष किन । मैथिल-मैथिल-मैथिलीक जीवाक अनिवार्य शर्त थिक ।

आब क प्रश्न उठैछ जे इत अनिवार्य शर्त होइतहुँ एहि दीर्घ अवधि मे मैथिली आन्दोलन कनका के कइय चमत्ताओ के किनक ते गार क सकल ? विद्वान लोकनिक कइर छनि जे इकर प्रधान कारण थिक जे प्रभाव मे एकर जन्म लेलक आ ओते पसवो कइत । मिथिलक माटि-पानि त ई नहि डुबि सकल । एहि बात क इमरो लोकनि मानिते नहि छी, पूरा विचारक संग मानत छी । हुमरा लोकनि मानेत छी जे अमन देवकें, परिवर्तन-पुनर्जन केँ छोड़ि प्रवेश केओ सेहत नहि, लगते काइछ आ इहद खता ओकर शक्ति-सामर्थ्य के सीमित क देत छैक । तँ आइबरि जे मैथिली आन्दोलन सरल नहि भेल त सेहो लामाकिने थिक । तहिना सामाजिक थिक मैथिली आन्दोलन के प्रभाव मे काम लेनार—कौण प्रभाव मे लोक चेतना विकसित होइत छैक, अपन माटि-पानिक प्रति मानव बूझत छैक । इतिहास सही बर जे कतेको आन्दोलनक जन्म एहीना प्रभाव मे लेबए आ प्रभाव ओ रूप मे पहुँचल ए । कतेको एहन आन्दोलन म हुकूमत नजर पूर्णता-सफलता बरि संवाहन प्रयास सं होइत रहल छैक आ इहाइ क्षेत्र मे लड़ल गेल अह ।

इहए मन मोचि केँ मैथिली मुक्ति मोर्चा! गत वर्ष २३, २४ आ २५ मई केँ दक्षिणक नगर मदन मे तीन दिना सम्मेलनक आयोजन केने छल । एहि आयोजनक एकराज उदेश्य छैक मैथिली आन्दोलन केँ माटि-पानि सं बोधना, मिथिलक माटि का मैथिली आन्दोलनक जग लेबए ।

एहि आयोजन मे मिथिलकक विद्वान मैथिली लेवी संस्कार प्रमोदनि, विरूध संस्कार देव, छान देव, एकराक एक प्रतिनिधि एवं साहित्यकार लोकनि उपस्थिति छल । एकर केन्द्रबिन्दु मोर्चाक प्रयास कएलक दक्षिणक दक्षिणक लोकनि उपस्थिति कइल गेल एह उद्देश्य लक्ष्यक एरो कमिटीक गठन भेल । सब दिनक प्रोग्राम लेल गेल । कइना मे संकाय नहि केँ कमिटी मे विभिन्न अवलोकन या अवसरक प्रतिनिधि सम छलह बौद्धिक लोकनिक मैथिली आन्दोलनक क्षेत्र मे पर्यटन नाम-यश छनि । पञ्च संस्कृत संग विचारक पड़ि रहल-य जे सम अम आ अय्य व्यर्थ मे चल गेल । प्रोग्रामक कथा त कात काओ, कमिटीक एकोटा बँसरो नहि भेलैक । आ एहि तरहेँ मैथिली आन्दोलन केँ माटि-पानि सं बोधनाक अमन पहिल प्रयास मे मैथिली मुक्ति मोर्चा पूर्णत असफल रहल ।

मैथिली मुक्ति मोर्चाक पहिल काब दे दिसम्बर १९८० केँ पटनाक प्रदर्शन छलक बाइ मे पटनाक निखिल भारतीय मैथिली मापी छात्र संघ एकर सदस्यो छलक । ६

संविधान विनु मैथिलीक ओ  
मानाधन विनु मिथिला धाम  
डाहि जासि सुडुह करब हम  
विद्रोही मिथिलाक जवान

मिथिलाक विभूति-४

## कवि विद्यापति

आइ सं लगभग साठे छत्रो सए कल पूर्व मधुली जिलाक बिसफी ग्राम मे विद्यापति ठाकुरक जन्म भेल छलनि । दिनक पिताक नाम गणपति ठाकुर ओ पितामहक नाम जयदत्त ठाकुर रहनि । दिनका नेता मे दुइतर सं लेखन कइल बाइत, कइर कतेको ठाम कय अह ।

विद्यापति लेने सं तेलकरी छलह आ कनिमो अवस्था मे पूर्ण पाण्डित्य के प्राप्त छेलनि । कइय स्वतन्त्र नटुचि लेहो हिनका नेतृत्व सं छल जे कइयक संगहि बहैत आ सवक होइत गेल । दिनक प्रतिभा बहुमुखी छल—कइय प्रमुख प्रमाण हिनक उपलब्ध पोथी सम अह । हिनक रचित पोथी के आइबरि उपलब्ध म संस्कृत-इ निम्न अह :

- (१) क्रीटिका
- (२) भू परिक्रमा
- (३) कीर्ति पताका
- (४) पुष्प परीक्षा
- (५) शैव संवसार
- (६) गंगा वापयावली
- (७) विभागसार
- (८) दान बापयावली
- (९) दुर्गाभक्ति तरंगिणी
- (१०) व्यापिक भक्ति तरंगिणी
- (११) विद्यापति पदावली

मिथिला संस्कृत पंडितक गढ़ रहल ए आ विद्यापति से हो संस्कृतक विद्वान छलह । दिसम्बरक प्रदर्शन पूर्ण सफल रहलक तथा प्रमाणित क देखक जे मिथिलावासी सेहो अपन अधिकार लेल संघर्ष क सकैए तत करा सकैए । अमन दोसर काब मे अलपल होइतहुँ मोर्चा बरि नहि रहल । तेसर ठेग भेलक देखिल बयानाक प्रकाशन । मैथिली आन्दोलनक निमित्त आन्दोलन पत्रक खराता केँ काइना अस्वीकारल नहि आ संकेत सहिता देखिल कयनाक भूमिकाओ केँ पूर्णतः पूर्ण व्यक्ति अस्वीकार नहि ए क सकन छथि । देखिल बयाना के ई आठम अंक थिक पञ्च बाइ लसे एकर स्वागत मिथिलावल सं प्रचलित भेल छैक आ जेना सहायक भेटि रहल छैक साव केँ दिखी राउबेला आदि प्रवाकक मैथिल कयु लोकनि सं तकरा देखि एकर दीर्घजीवनक प्रति निश्चित इमरो लोकनि विश्वस्त छी आ आशा करै छी जे निकट भविष्य मे एकरा पाण्डित्य बनेवा मे सफल भ सकब ।

एतना होइतहुँ ई मानना मे आपत्ति नहि जे पत्रिकाए सम किछु नहि थिक आ एही सं मोर्चाक दायित्वक निवारि मे जेतैक । पत्रिका आन्दोलनक वातावरण तयार क सकैछ, आन्दोलन केँ गति प्रदान क सकैछ पञ्च मैथिलीक मुक्ति लेल बाइ लेल 'मोर्चा' क जन्म भेल छैक—चाही साहित्यिक आन्दोलन जे मिथिलक माटि-पानि पर होइत । दक्षिणक अन्तरजाल सं इमरा लोकनि केँ एते दिशा अवलोकित भेटल जे मंचीय नेता सं, विद्यापति एवं माव केँ अन्दोलनक इतिहास नेता सं वास्तविक आन्दोलन संभव नहि । एहि छेक बालक पत्रकक रूपक लेल केँ, ऊपर-युवा कय केँ आ तार लेल सीधा-समरा बाह्य गाने-नाम धूम रहलत स्वर कल्ल मे बाजाय पड़लैक । मैथिली मुक्ति मोर्चाक अगिला प्रोग्राम उपर होइत कइर कितहुत विचार दिन्न प्रकाशित होइत ।

अन्त मे किति देहाइ आन्दोलन जे दक्षिणक आयोजनक रूप सं मोर्चाक बहुतो सदस्यो उपस्थिति वा फरक म भेल छथि । हुनका लोकनि सं पुनः पुनः निर्देन जे 'देहर पक' कया कइनी चरितार्थ नहि कथि ओ । जे हरिपुर्ण मैथिली-मिथिलक मुक्ति चाहैत छथि त पहिनिह अका संग मीथि काज करथि । हुनका लोकनिक स्वागत लेख सतत समरा लोकनिक बाहि पतारल अह । संगहि नवीनी संस्था । व्यक्ति विशेष जे मोर्चाक संग काज करलक इच्छुक होथि त हुनको स्वागत छनि । मोर्चाक गारा छैक पूर्ण स्वाधीनता अथवा मृत्यु ।

—जय मैथिली